

উদ্ভান্ত প্ৰেম।

নেই মুখখানি

দেই মুধধানি—কেমন কবিনা বৃণিব, কেমন সৈই মৃণব, o भटन छे।उटन उक कार्षिया बाम, माथा बुंदन, मृक्कव किया । ্প্রবাহ বাবির হ্ম, শিরায় শিবায় ধ্ননীতে ধ্ননীটে ^{কা} --প্ররাজ ১টিতে খাল্কে—তবে, কেমন কবিয়া বলিব ংল--मर् भश्यामि । अन्तर्वाकध्यीकित्, पृत्रांत्रक धौ्गाम रदः क्तिकारः অক্ত ক্রাবেকে বিরহণক্ষতবৰ, স্পাংশ্রেক্টি ক কুতুমপরিমলবাহী নিদাধসায়াহুসমীরণবং ;—ভাষায় ভেত্ত कथा नाहे, महरदात राजमन हिखा-मिकि नाहे, आगांत्र व चलमही क्वनाव (क्ल कविद॰ नारे, ट्यांडांत एडमन नद्यमब्रह्म मारे, क्षत्रात्क जाहार छेशमाञ्च नाहे— ज्यान स्थमाविश्योक्ष পবিত্রতাপবিপূর্ণ কছ লেখিতে পা পা-হরি! হরি! কেমন कतिया बुद्धाहेव ्नमन भारे यूक्क्मीन। भारे मूक्क्मीन-- बार धक्यांत्र त्यविद्यु नार्रात्मा शांत्र किह नत, त्यवन तम्ब-क्ष्याह अक्ष्य तिवा तिस्व गाव, यात्र तिविद्ध रेमविद्ध विकास क्रोलिय-देशाव क्या कर ? यादा मारण छादाई विका,

জান জিনিষের মূলা অধিক, ভাহা জানি। নারত বৃ काम इंग, छोड़ी कानि। ध विश्वकार्यात यनि एक कही था। তবৈ জিল্পান করি, কি চাও ! – সেই মুখ আর এই পার বেখ यात अग्र, कि हांतक जीवन नव, भवद अहात भारत रारा क्रमकृत-कीरन गरेड ना। 🗐 🕇 नहेड ना, जीवरन रक्षय में । जामात जीवरनुष्ट नेर्क्षय महत्व । नाटम्हे वहा अस मा-धानी तीन क्रिव - मक्रवान मित । जाहात बीवरनर वर्षक मिन्न गर्याष्ट्रिक शास्त्रना, वित्र दुन्दिकमःगन, नकन কংগো উদাদীত, দকল বিষয়ে ভাজীলা, **ঈখনে**-স্থানি-रेंद्रार जामात मर्द्य-रेंद्रा नडे त्व १ क कि स्टब्स जीव-ঈখবে জঁৰিখান,→নে বিক প্রবের জীবন ? তামরা আশা ত্তপে, ব্যাধ,—আমার আশা নাই। তোমরা, হর্নে হোক, नत्रत्क दशक, क्षक शाद्न थाकिटव ; श्रामि क्षक्रमादत वित्रमिद्मन भटन विजुल इहेव। তোমहा इह छ देवक्किन्नी हहेरवे. व्यामि माहि इहेव। ट्यामण ध मध्यादा माहा हाताहियाह. कारा रह के आवात किति नाहरत है आमात्र ताहा निवादक कारा किम्बिलाब द्यार भितिष्ट। जामहो बसी हुछ, स्थरी एक अवन बागातक माना कर करून आपि जांगबन क्षांक न्यारियारि, स्नेन हिन्दी राहेर है (उत्प्रदा अन्य क्षानंत्र नाकी। कावि कान्युह साव-कार् किसाहि, अर्

लिलाहेत । अकं ध्रम हिल, जाहा दकरण पिटक गाहिजाम ना । হর্নের বল্প তাহা দিতে পাঁটিতাম না, নির্বাণ দক্তির অন্ত তাহা तिर्छ . शांतिलाक मी, शांकिरणास्थव अष्ठ छाहा विरक्ष शांतिकाम লা, মনের কথা প্রকাশ করিবার ক্ষমতার বিনিময়ে তাহা াত পারিতামূনা, ইচ্ছামুত্রের পরিবর্তে তাছা হিছে পর্নি ভাষ না—বে ইনিষ্ণের ধন নল বে বিলাইবার প্রতিটি লয়—তাহা হইলে, দিতাম। তাহা ছিল—এখন নাই—[†] লানি কোথায় বিয়াছে। জনমপিঞ্জরে একটী পার্থী প্রিয়া ছিলাম নত হয় করিতাম, কওঁ ভাল বালিতাম, কড মগুর । ছলি বলিত, দেই সমার্থিনার পারী**টা, অকস্মা**ৎ এক দিন, পাঁকিতে থাকিতে, শিকল কাটিয়া, বোথায় উড়িয়া লেল। ভাহার করু সংসার খাঁলরা দেখিবাছি-কোথাও মিলে না! 'মে ব্যিক ভাকাই, ভাহার অভাব মাত্র দেখিতে পাই। ভাহার ব্লানে কত ধ্যাপুত্তক, কত দুৰ্শনবিজ্ঞান খুঁজিবাম—কেঃ ভাষার সন্ধান বলিতে পারে না। কত ভালবাসিতান, কত अपत कतिज्ञाम—मिया! कथां ! जानवानिजान—अथन छ। न-.गामि—यड बिन थांकिव, उड बिन वानिव—किन्छ यह कानत कथन कतिए भागा व नारे। जित्रकास विवय विवय मान कतिया, मानत कथा कथन क्रिया विनटक शांति नाहै। आमि छोड़ादक त्नवर्गामा विनिधा सामिजाम, क्यम छ छान कविद्या सामय कितिए शाहि नारे ना कृति के मन्त कितान, वहे जाह कान किवा - दिल्ला करा बरेन ना । वृत्क होवितन नाटक राया नाम, १८३ छत्त, त्नहे वित्रश्मित विवरणान निर्मित र्शनि, लर्रे नरका त्वार्शनकि अवस्थित

दूष कतिएक मार्म शारे नार्र। एवनरे ठातिया प्रथियाहि, ७वन है त्वाध इंदेशाह, तम मूचवानि त्वन अ अनुरुद्ध नग्न-্যাধানে শোকভাপদ্ধে আছে, যোগানে স্বার্থপাঠা আছে, অপ্ৰিত্ৰতা আছে, পাণ আছে, ও মুখবানি বেন সেধানকাৰ नद--(धन अस त्लाक इंडेट्ड द्वान नर्डश्तक अध्यक्ष कविदः । করিতে পথ ভূলিয়া ও পাপতাপপূর্ব মংলারে আসিয়া পড়ি-ষাছে। তাই বধন আনর করা হইল না—মনের দাধমনে वर्षिण, कथन जामब क्या दहेल ना-मत्न दफ् त्थन विदेल, त्र আদরের ধন, ভাষাকে । বর করিতে পারিলাম না। আনার. कोरनातनभन, बागाउ कीदर-मन्दूरभंद्र धक्यांक मदरी, कानाव হন্যাক্তিয়ে একমাত শুক্তারি, আমার স্থায়ধন কোথায় हानिया (लंब) दकाबाद तान १ कि इहेन १ मायूव महिया কি হয় 👂 নাটি 🤋 সেই মুধ, সেই তগতে-তেমন-কিছু-নাই মুখ--হরি! হরি! কোন্ বিধাতা গড়িমছিল ? সেই মুখ্ कारशामायम अक्रियायक्ष तारे मूर माहि हहेरत ? छादार इंदिन, ध कारड श्वनिश्रम मारे, निश्रक्षा राहे, विधान নাই, ভাগ মন্দের বিচার নাই, পবিত্রাপবিত্রভারভন্য নাই, क्यायात्री नाहे, त्यश्ममञ्जा नाहे - दक्वल निष्ट्रीका, दक्वल मुम्हन्डा, दक्वन शत्रश्रःथित्रछा, दक्वन शत्रश्र्थकार्ड्य । ो কিন্ত কি বলিভেছিলাম, বলিভে বলিভে ভূলিয়া গেলাম-

সেই মুখবানি। বুকে গোনিয়া বুক চালিয়া ধনে, অন্ত্রে উঠিয়া অবট্রেক মুখে কাপড় নিরা ধরে, মার্থ করা বলিতে কেন্দ্র নার্ক্ত বলিব, কৈমন সেই মুখধানি বিদ্যাপ্তিত। নার্ক্ত, প্রধানির প্রধানিত বিদ্যাপ্তিত।

व्यवत्वत युक्तित छात्र, निक्ठक्त्य शात्राक नमीतानंत्र नियान्त्र ভার, বাল্যকালের তথম্বতির ভার, অকলাচড়ত বছদিন-विद्या एथवाप्रत छोत्र, मृहनिनादिनी শুদ্রবীচিনালিনী ্জাস্বীর বিশাল কক্ষে পৌর্ণমাসী রজনীতে মৃত্ব পবন বিকল্পিড শীবদ লোৎপার ভাষ, আমার ছুতপুর্বের ভাষ, দেই মুখ-বানি। সেই মূবে, প্রেমভিকাপরিপূর্ব সেই হাজম্য দৃষ্টি, म्हे औ**उ अवंड शैष्ट्रिनियानिनी मृष्टि, त्य मृष्टि, शनरक** शनरक বৰিত, আমি আ মংসার ভাগ কুরিয়া চিনি না, ভোনা বই আর কাহাকেও চিনি না—আমি এ জগতের নই, জামাতে পারে ঠেলিও না; আর সেই হাসি-সেই হাসিমাথা হাসি-शनरवत मर्गनवस्त त्मरे हाति कारे क्या शनवर्षेत्, ठाश्ट লেই অতলম্পূৰ্ণ প্ৰেম—মা মির মিরি! এ সকল কেন *হ*জিলা-ছिলে, अंशनीम ? **এখন छोड़ा मरन छेडिरन, एक दबन** बुद्रकत উপর পাযাণ চাপাইরা দেয়। যেন কভ নিক্ষণ বাসনার, অপূর্ সাধের, অত্ও ত্ফার, নিহত আশার, স্থাধিগত অমুরাগের, অধীর প্রেতনিবহ স্বৃতির অন্তকার গহরের স্থাকুণভাবে হা হা कतिका फिर्फ । - रंगरे मूच दव पिन व्यथम देवनिका मदन इरेजा-विष् के किया विषय कारिका चारक, व निरम्न व्यवश्र निम्नी चार्छ- चम्र निवर्तर ध काज नम ; तारे हिन श्रेटि चारात त कित देवह प्रकृतिवर्गीकृष्ठ द्वार, तार वांग्राविक्ति वानश्ची बाबी, लहें निमावनंत्रध क्षम, छन्टे अलाख्य मनिम मनाव, वामोक तरे एम् निष्ठ वानागढा, क्लाक विद्रा मुख कृषिमोक्रियाम, अ शतिमृश्चमान केंगर विष्ठांत नांदे, केंग्रामा बोर्ड, नदस्यकामना नार्ड, त्यर दिन श्रीहिंद्र, नकर क्यी

धारकवारत वकात कान कान महन विभागिता नरफ, क्रुक्तार কোন কথাই মনে পড়ে না। ভাহা ভোমার কে গড়িভে বলিয়াছিল ৮--গড়িলে ত জাবার ভাঙ্গিলে কেন। কেবল কি ভোমার শিলকোশন দেখাইবার অঞ্চ কেবল কি অধ্যকে গোড়াইবার জন্ত ? সেই দিন, যে দিন আমি একা इंडेगाम-- क्यान कविशा विश्वत. तम दक्यन सिन !-- तम् पिम " आमात खीवत्नत विख्या मनभी! तारे विन् यांशे छान्निवादर, जारा कि जात प्रक्रिट शात, अभिष्य । धक्यां व वाहिरण ना, একবার জ্বিলাসা করিলে নাঁ, অহুমতির অপেকা করিলে না, তঃধের মুখ তাকাইলে না-স্থাপন ইচ্ছার 'কাঁডিরা বইলৈ। বেশ ক্রিয়াছ—ভাহার বছ দোক দি না—ভোষার উপদ্ব কাজই এই। ভূমি মহং, আমি কুল্ড; ভূমি প্রভূতণভিনান, আমি তুর্বা । এ পরিদৃশ্যমান কগতে তোমারই দব, আমার त्कृष्ट् नाहे-श्रुज्ञाः जागात जीवनन्त्रत्त्व, जागात मध्याजन्त्रन, आमात व यांत्रांनी खत्मत्र वक्साज हार्तारमव, काष्ट्रियं गरेटव देव वि १ क्षाप्टक दर्म नी शिक्ति, खांत महत्त दर्शाश्रीय १ वर्षद्रमान উপর যে অন্ত্যাচার না করিল, তার শক্তি কোপার ? ব दीन हीन, यात्र दकर मार्ड, क्षादेवात याम मार्ड, विकादेवात হান নাই, ভালবাসিবার আর কিছু নাই, ভালবালিতে আর কেহ নাই ; ভবিষাং নার **অধ্যকারনার, ভুতপুর্ক্ত হার পারিনা**র প্রভর্গ অরকার অপেকাও ভ্রানক; আরু করি ভ্রাইডে बालाक अवश्व किंदूरे नारे-द्वांत केंद्र कार्य कार्यात. কেবুল ভামদ আলোকে দ্রবিভূত মক্ত্রি 👣 বু করিজেরে केल्ला त करविद्धिक ना कविषा, छोबाटक के काल क्रिक

লা করিল, তার কিনের মহত্ত—নে কিনের বড় ? করিবে কৈ

কি। সিংহ বনের ছক্ল পশু ধরিরা থার -সিংহ পশুরাক।
পাল ধরন জামাদিগকে নাজেহাল করিত—যবন দিনীখন।
ইংরেজ আমাদিগকে চরণে দলিত করে—ইংরেজ আমাদের
রাজা। আর ভূমি বিশ্বজাশ্তের রাজা, স্কুতরাং আমাদিগকে
পোড়াইবে বৈ কি ? যে ছোট, অভি ছোট, স্কুল, কুলাদিস্কুলভর, জাহাকে ধদি 'আছি আহি' ডাক না ডাকাইতে পারিলে,
ভবে ভূমি রাজা কিনের ? ছর্মলকে চরণে দলিত করাই
রাজধর্মা; যে প্রতীকার করিতে পারিবে না, তাহার উল্লে

অভ্যান্তার করাই রাজধর্ম। মানি—কিন্তু কি বলিভেছিলান্য,
ভ্লিয়া পোলান—

সেই স্থবানি! আমাব ব্কভরা ধন, ব্ক থালি করিয়া
কে লইল রে! সংসারে এমন কি আছে বে, তাহাই দিয়া,
এ বৃত্ত অনম পূর্ব করিব। সে বৃত্ত হাবরে অবিল সংসার
প্রিমা দেখিয়াছি, সমগ্র মানবজাতিকে স্থান দিয়া দেখিয়াছি,
যেন অনেক স্থান থালি পড়িয়া থাকে—আমার তব্বেন বোর
হয়, কি যেন নাই। জগতের অনত সৌলর্ব্য চক্ষের উপার
পড়িয়া য়হিয়াছে, কিন্ত ভাহাতে কি যেন নাই। সেই য়য়
বাড়ী, সেই বালাকালের জীড়াড়মি, সেই বালাকালের বন্ধ্ব
গণ; শীলামনী জাহানী তেমনই হেলিয়া ছলিয়া, ছালিয়া হালিয়া
চল্লিকেছে—শোলবাঁটিনানিনী হালিনীয় লায় মাটিতে সা
পজিস্কেছে না। কাকানে টাল ভেমনই হালিয়া হালিয়া পৃথিবীয়য়
সোহাল চালিছেছে; ছাহার ডান্তা, অভি ক্ষুল পানী ক্ষেমাই
উভিত্তেহে; ব্যক্তিকেও তেমনি আক্ষাক্রী ক্রমাই

ছড়াইতেছে—দেই পব, কিন্তু আমি আর চেই নই—আয়ার তিবুবেন বোধ হয়, কি যেন নাই! ছই চক্ষে বাং। বেখি, ভাহানী তেই বেন বোধ হয়, কি যেন নাই। যে দিকে ভাকাই, দেখি, কি যেন নাই। কাৰ্য্যে সে উৎসাহ নাই, সংসারধন্মে সে অহুরাগ নাই, ধর্মে সে বন্ধন নাই, মনে সে হিতিভাগকতা নাই, সোল্যো সে বম্পীয়তা নাই, গদ্ধে সে মধুরতা নাই, সংগীতে সে মুগ্ধ ড়ারিতা নাই, জগতে সে বৈচিত্র্য নাই, মন্ত্র্যান্থ সে দেবভাব নাই; আর অভবে, কি জানি কি যেন নাই। কি নাই প্

সেই মুবথানি । এখন নাই—এক দিন ছিল, এখন নাই।
সেই প্রেমে যাথা মুথথানি, সেই রমনীয়তা, কমনীয়তা, মধুরতা,
পবিত্রতামগ্র মুথথানি, সেই অমরাবতী সৌদর্যামর স্থায় মুখথানি, সেই কি-জানি-কেমন মুখখানি—যাহার সঙ্গে দলে স্থ
ক্রার, সে মুখোনি কোথার গেল ? কে হরিল ? এ বিধানের
কি বিধাতা নাই ? এ নিয়মের কি নিয়ন্তা নাই ? বদি থাকে ত
সে অনপ্ত শক্তিমান্ বটে, কিন্ত বড় নিয়ন্তা নাই ? বদি থাকে ত
সে অনপ্ত শক্তিমান্ বটে, কিন্ত বড় নিয়ন্তা নাই ? বদি থাকে ত
ক্রিন্পোণ। এ জড়জগংশনীরে আহ্বা আছে কি না, কিন্তাশক্তি
আছে কি না, তাহা জানি না, কিন্ত সামার, দুট প্রামীতি,
আমার জব বিখাস, আমি ইহা নিশ্বর বলিতে পারি মে: এ
জগংশরীরে ওদার নাই। নাই কেন বলি, ভনিবে দি কার্ব কেন বলি,

ছগৎ সংসারে যে এখন কিছু জাতে, এমন নিছু প্রাক্তিত গারে ভাষা ত আমি ভানিতাম না। কে জানাইবার ক্ষু বিধাতাকে মাধার দিখা নিয়াছিক—কে জানিকে

চাহিয়াছিল ? জুবে, কেন জানাইলে ? আৰি বাৰা টিনিভাৰ না, ভাহা আমাকে কেন চিনাইলে ? চিনাইলে ত রাবিতে हिला ना स्कन ? जुबिरे निल, आवात जुबिरे गरेटन (कन १ काजिया नहेरव मन्त्र हिन छ दिला दकन १ दिन छ. আধার গইলে কেন ? লইলে ত ভুলিতে দাও লা কেন ? যাহা कथन शहिव ना, छाहात अछ कांक्त्रि कांनिश एक् वादव, धरे কি তোমার ইচ্ছা ? সে গিয়াছে, ভার ভালবামা গিরাছে—ঝামার ভালবাদা यांत्र ना दक्त ? वित्रमितन मछ यांशांदक कर्षकत वाहित कतिर्त, छाहारक अञ्चलक वाहित कर ना दकन ? आमि जूनिव ভূলিব মনে করি, ভূলিতে পারি না। সংসারের নিরম ? সংসারের নিরম আবার কি আকাশ না পাতাল ? তোমার ইচ্ছা বৈত নয়। मत्न कदितारे मन कदिए भाद ; তবে मःमादन-७४ जानि বলিলা নহ, ল লগৎ সংমারে এত হংব কেন-কুস্থমে কীট टकन—ठटक क्षक दकन—श्वा कक ममृद्धि दकन—मत्रदक्त श्रथ কুত্বমান্ত কেন-সৌন্দ্র্যা বিক্বত হর কেন-মন্ত্রাহদরে নৈরাপ্ত কেন—মহুষ্য ললাটে ব্যোগ শোক কেন—প্রণয়ে বিরহ কেন—আশার অবিখাস কেন—মতুষ্য স্বার্থপর কেন— পরের হংথ, পর বুঝে না কেন- হংবপ্রকাশের ভাষা নাই কেন-বাহা বুকের জিতর হ হ করে, তাহা মুখে স্টাতে পারি না কেন-স্থেৰ আশকাশরায়ণ কেন-বে বালে চার, সে ভাকে शाब ना दकन देव बादक जान बादन, दम जादक हाताब दकन ? बाबाई हिंदी, करव दर दिन बाबाई, दनहें दिन मूद्र ना दकन ? व जड़कार रकत ? मार्कित स्वरहत किछत, व स्वराधनगर्जुण, प दमस्तारनणानवातन, य माखिदमीनचा नविज्ञाकिक क्रम

त्कन ? श्लारे अन्त, वाहा कथन शाहेरव ना, खादात कंछ कारन किन ? छोरफ़ड़रे यान, यान दकर दिशा डा थारक छ रम रख़ निर्देश। तम कीरवत एककामना करत मा, कीरवत कान तिथिएक পারে না; দে পরের ছঃখ বুঝে না, দে কাছারও মুধ তাকার ना, त्म शास्त्र शतिशा कैंक्तित छत्न ना-तम वेष निर्फेद्र। तम **टकां**त कतिया त्थनिटक तमारेया, प्याचान तम्थिताह अस. किस्तित সূবে পুরাইয়া লইয়া বৈড়ায়—মাত্ স্বীকার করিলে নিরত হয় ना-(थनिवं ना विताल ছांटि ना । त्न, कि कानि तक्षन कदिया, शाका श्री कां कां कां होता रहे । तम, कि सामि दक्त ষাত ভুক্পে বেশার। রঙের একথানি সাতা মাত্র শইয়া বেলা হয় না--গত স্থবের স্মৃতিমানে লইয়া আর সংগার-খেলা পেণিতে পারি না। ছঃখের দিনে, সকল হুখ গত হইকে, গত হথের কথা মনে পড়া বিড়খনামাত্র। তাহাতেই ৰঙ্গি ध अत्ररमत्रीत्व क्षत्र नारे। कृषि रेष्ट्रामत-रेष्ट्रा कतित्य মুধের সংসার পঞ্জিতে পারিতে—ভাষা কর নাই, ভাষাতেই विण, ध क्षारमजीरत खनश नाहे! मःमारत कि चन नाहे? তাহা কে বলিতেছে ? ত্বৰ আছে বলিয়াই ও বলি ; এ ৰূপ্-भंगीत समग्र नारे। भःमात्र नित्रविक्त श्रुश्मत बरेर्ण, जाशास्त्र कारात जालिक हिन ? छाहा रव मारे, मा दहेश ख्वहानमंद বংসার হইয়াছে বলিয়াই ত বলি, এ জগংশরীরে ক্ষর নাই 🗈 ल गरमात ज्यासन पिता ना गठिता, शनि पिता ना गठिता त्व, शांति कावांत्र बिह्नाह, छाहात्र कश्चरेक यनि, ज क्राह्मवीटर श्वता ताहै। किंद्र (क्यन ट्रांगा मन, शावात पूर्णिया लागास কি বলিভেছিলাম-

দেই মুখখাতি । সন্ধ্যাসমীরণ হিলোলে প্রাস্ক্রী লভার দোলানির ভার সেই মুখধানি—অপরিকটি নক্, সংসার-শিকা-শুন্ত নিজিত শিশুর পবিত্র অধরে স্থবসগ্নতাত হাসির **८थनात साथ राहे मुश्यानि—राहे कि-कानि-कि-मन्न मृश्यानि—** टमहे- विजय-विग्व-मरम-कदि-विन्छ-भावि-मां भूथथामि-- दमहें **८इ-चाइ्ड-७इ-नार्ड, अन्तक-शाहे-अन्तक-हान्नार्ड ग्रुवशानि—त्रार्ड** थाकिया-थाकिया-खानिया-डिर्फ मुक्थानि-एन्डे इनरव-चार्य-मन्न-वाम-ना मूथ्यानि-एन्डे धदिःश्वि-धविरक-भावि-ना मुश्यामि - रति ! दति ! दकान् विधाजा तम खन्नाखतीन दश স্থামর মুখথানি গড়িয়াছিল ? কেমন कविशा शिक्षाहिल १ मत्नित्र कथा विशिष्ट शिष्टे मा रकन १ বুকের ভিতর, কি কুল্ কুল্ করে, ভাহা মুখে ফুটিয়া বলিতে পাই नां क्न ? शत्नत कथा धनाहेवात क्छ, मत्नत मछन लांक भारे ना तकन १ काशांदक विषय १ दक ध ए: त्थन কাহিনী ছই দণ্ডকাল শ্বির হইয়া শুনিবে? মানুহে কি व्यामात्र इःथ वृक्षितः ? छाष्टे व्यादा विनशाष्ट्रि छ, सन् वक् त्थल तिहल।

় ইভি প্রথম প্রস্তাব।



জাহ্নবীতীরে।

কুল্ কুল্ কুল্ কুল্—ও কি কথা মা ? ওই রহ শুনিলে, আমার হানর বেন কেমন কেমন করিয়া উঠে, তাই জিজাসা করি, ও কি কথা মা ? উহার অর্থ নাই ? তবে আমার রুকের ভিতর, কি-যেন কাঁপিয়া উঠে কেন ?—ধনরের গৃঢ়, গুঢ়তম প্রদেশে, কি জানি কি যেন, ছলিয়া ছলিয়া উছলে ফেন, উছলিয়া উছলিয়া ছলে কেন ? ও সংগীতের লয়, আমার অন্তরে হার কেন ? ভদয়-বল্লের ছিরতলী সকল আবার ঘর্ষর দর্যর করিয়া উঠে কেন মা ? বছদিনবিশ্বত অথকা সকল আবার অক্তরে আদিরা উঠে কেন মা ? বছদিনবিশ্বত অথকা সকল আবার অক্তরে আদিরা উঠে কেন মা ? কেহের ভিতর প্রাণ, গিজরবছ বিহঙ্গের ক্রায়, কি জানি কিসের জন্ম, ছট্ ফুট্ কয়ে কেন মা ? জভস্কির, দিনহীন, ধর্ম-আনেন-কিসের-কালাল সন্তানকে ক্রিয়া দাও, এমন হর কেন মা ?

উত্তর নাই;—কেবল ঐ কুলু কুলু কুলু কুলু । কিন্তু—বৃথিরাছি—মরি মরি! তোমার ঐ কথার এত সূর্থ মা- ৪ ভাই
বটে;—ক্ষমে বে কুলু কুলু শব্দ অন্তব করি, ভাই কামে
ভানতে পাই বলিয়া। দিবানিশি রে নৈরাজ-পরিপূর্থ-কাত্রভার ক্ষমের চতুর্নিকে সন্ধাসমীরশেক ভার বার হার করিয়া
সেডার ভাই তুই পঞ্চাল বসিমা, ভানিয়া কা আভাইতে
ভাই মনিয়া যে শব্দ গাবে ফুটে, বুলে উঠে, লোনিত্রে
ভাই নালয়া যে শব্দ গাবে ফুটে, বুলে উঠে, লোনিত্রে
ভাই --শব্দ গাবে ফুটে।—শব্দ চক্ষে দেবিতে পাই।—ও আন্তর্ম

কি প্রছেলিকা গ ও হো। হো। হালিও পান—হাগত ধরে— আবার ঐ কুল কুল ধ্বনি।—তাই বটে বা; এই সোজা কথা বৃষিতে পারে না, তা তোমার ও কুল্ কুলের অর্থ, ও কুল্ কুলের মহিমা কে বৃষিবে। কিন্তু যে বৃষিরাছে—সে মজিরাছে।

কিন্তু, ও কি রাগিণা মা ? সাধা-গলার তুমি যে গাও, প্রান্তি
নাই, নিরাম নাই, তুমি বে গাও, দিন বাত তুমি যে গাও,
ঘণন কেই ভনে না, তথনও আপন মনে তুমি যে গাও—ওকি
রাগিণা মা ? ও কি দিনা সংগাত ? কর্পের গান কি ঐ রক্ম ?
—অমনি কাণভরা অমৃত কাণে ঢালিয়া দেয়—অমনি বুক্তরা
মাধুরী বুকের ভিতর ঢালিয়া দেয় ? তবে মা, একবার কর্প
দেখিব; দেখাবি মা ? তুই পজিত-পাবনী—অধন স্ভানকে
কর্পে গইয়া যাবিনে মা ? বল্ মা—বাবি কি না, বল্ মা।

আৰার ঐ কুল কুল ! তাই বটে মা—এই ত বর্গ—তাই বটে; কিন্তু আমার ভোগালি না ত ! না, তাই বটে, মানিলাম —ইহার অধিক আবার অর্গ কি ! মাধার উপর ঐ চান, দম্বে এই ত্মি, বজনী-ফুলরীর মুক্তরা এই হানি, তোমার কলে নক্ত্রদিবের এই ন্তা, তোমার জীবত্ব লভার এই দোলানি, আরু বায়ুর এই বেলা—বুক্ত-পত্রের নজে বায়ুর এই বেলা; পর বভা লভার নজে বায়ুর এই পেলা; দেই লভার, ভোমার ঐ হবের মতন মুক্তলির সকে বায়ুর এই বেলা—ইহার অধিক আবার কর্ম কি ক

কুল কুল কুল কুল—তা মা, আমি আদি কেন ? কেন এ গাটা দিনাৰ তোমাৰ তীতে বদিয়া কানিতে আদি ? নাড়ি কেন, মুগুৰি না ? জুই বৈ, হংধেত কাহিনী আৰু কেব কানিত ভাবে না এক কৃথা একশবান, কেছ তাল্ড জানে না।
বহুদ্য আপন আপন শোকভার বহিতেই জন্মন, ভাই মা,
পরের হংগ গুনিতে কেছ ইচ্চা করে না। মুদ্রোর কাছে
মনের হংগ গুনিতে কেছ ইচ্চা করে না। মুদ্রোর কাছে
মনের হংগ গুনিতে কেরল নৌর্ন্য প্রকাশ হন, কেবল
উপহাসাশান হইতে হয়। তাই মা, ভোমার তীরদক্ষারী
বাহুর দক্ষে আমার দীর্ঘনিখাস মিশাইতে আসি। পরের
বেদনা, পর বুরে না; ভাই মা, ভোমার জলের দলে চক্ষের
জল মিশাইতে আসি।

আর সা, এইখানে আমার এক জিনিষ হারাইয়াছে। ঐ গে সৈকত জোৎদাশ্যাম নিজিত রছিয়াছে, ওইখানে আমার এক স্কার্থসার রক্ন হারাইয়াছে। বুকের ভিতর, বুক পাতিয়া, दुक निवा छाकिया, रम तक्षणि ताथियाहिनाम, चंकचार अक किन । ছইবাদে কোথায় পড়িয়া গেল। তাই বুঁজিতে আদি, কিন্তু भारे ना। भारे ना, उद् श्रीकाउ व्यानि-वामात जाताव मन, আমার পাগল প্রাণ, মানে না। কভ ব্রাইবার চেটা कतिग्राहि, किङ्कुटंडे वृद्धिटंड हाटह ना। वृद्धिशं व वृद्ध ना, ভাহাকে ব্যাহৰ কেমন করিয়া ৷ কত দর্শনবিজ্ঞান বুলিয়া, কত কাবা অবভার খুলিয়া, মনকে বাাপুত রাখিতে বাই-व्यवाश मन, मूथ गुरुहिया देखा। उथक त्म कात्मत्र ताहे देखक-লিপিত্ৰি খুনিয়া পড়িতে বনি ; কিছ-ললে চকু ভরিষা উট্টে, ক্ষাক্ষর দেখিতে পাই না। চকু মৃছিয়া আবার পড়িডে খাই; आवीत हुक् ब्रान छतिया यात्र- शहिया देश हुन मा । देन किते-क्षीर त्य निविधादिन, त्र सीन तावा नका वानिक नाल्यकापाकः क्रमाहापूर्व मारे, जारेशातिशाहा मारे, मेर्डिकार्

मारे-किक शहा बादा, जाहा बावात रिपूटकर मारे। মাহাতে বাহাতে লোক মুদ্ধ হর, তাহার কিছুই লাই; বাহাতে যাহাতে লোক বিরক্ত হয়, ভাহার চের আছে-তবু, সমগ্র সংশ্বত সাহিত্যের কবিছ, ভাছার এক ছত্তের সমতুল নহে। **নে নিশির প্রভ্যেক ছত্তে, প্রভ্যেক শব্দে, প্র**ভ্যেক অক্ষরে, অত্যেক মাত্রান, প্রত্যেক বর্ণচাতিতে; প্রত্যেক ব্যাকরণাগুদ্ধিতে, প্রত্যেক জনে, প্রত্যেক মদিবিশুতে বে কবিছ আছে, বীরা-कनाम जाहा नाहे, अनानीत पुरक्त जाहा नाहे, बुक्तःहारत जाहा नारे, त्यवनाव राध जारा नारे, अवक्रवज्ञक्त जारा नारे, जेजन-बांमहितिष्ठ जारा नारे, शाम्तवर्षे काहां नारे, अर्थरनाष्ठ जारा नारे;-रेनिशाल नारे, देनिशाल नारे, क्यांद्रमञ्जल नारे, ভাফোর দংগীতে নাই, ভৈরবী শাগিণীতে নাই, বদ্ভপবনে ৰাই—তাহা অভুল। পড়িতে পড়িতে এই দৈকত মনে चानियां छेळ-यन छेशांन इरेबा यात्र। दक्यन नः निश्वानरे त्व कर्त मारम, जात परत थाकिएक शांति ना। इतिहा धरे शांत्र. याति। यातिश वन श्रृंति, दन श्रृंति, विद्युः श्रृंति माख-नाहा पुँकि, जारा कहे भारे मा। उपन आवात भारत शेष्ठ नित्रा कैंक्टिंड दिन ।

त्रावन कथा कि त्योर्जणा ? उटक मां, जूमि क्ल क्ल कि विशे कांव त्या ? जूमि त्यद्वांना—त्यामांक व्यावात व्यवहान कि मा ? उटन मां, जूमि कि मश्रदेश व्याव व्यावात व्यावात विशेश क्षि ? व्याव वाहा त्या पात्रक व्याव क्षिति व्यावात त्या पात्रक वंशा व्यावात क्षाय व्यावात व्यावात व्यावात विशेष व्यावात विशेष व्यावात विशेष व्यावात विशेष व्यावात व

टनवडांत्रा श्राटतस कथा कें।एनन । मक्स दय मिन रेड्यून कथा कीपिएक मिटब, त्यहे निन्द छात्र त्यवर हत्। जात्र मा, बाहात कारह, ब আত্রবিসর্জন শিকা হয়, সেই দেবতা: পরহিতরতের উপদেশ व्य तनत, त्नारे त्ववकां। केना वथन वंगित्मन, "अञ्चत्र निकछे তুমি বে বাবহারের কামনা কর, শক্তের প্রতি তুমি সেই বাবহার? कति ७"-७४न वृश्विमाम, भेगा महाकानी। त्रारे मेगारे थारात रवन दलिएन, "छोमात नकरक्ष जानवातित"-তথ্ सानिवाम, रोना सब्दा। अत्रथ महत्ती উक्ति वा'त स्टब, तम क्षेत्रवर्धक वर्षे, तमाः (सवका वर्षे, तमा महरवात वाका কর্ড। বটে। খুটের বহুকাল পুর্বের, শাকাসিংহ এই কথা दिन का कि तान के जा का दिन के ना का निष्ठ वृक्षाव । दिन मुळ धरे क्या विवशह्न-द्याम्जाक विष द्वर प्रवज्ञा वरनन, ভাহাতে আমি আপত্তি করিব না। আর মা, তুমি দিবারাঞি शर्वत खन्न काँतियां काँनियां अहे ,शनाजन सर्पात्र छेशरतन দিতেছ তাই মা, তুমি পতিভপাৰনী, ভুমি অধমতাধিণী, कृषि मुद्राक्षत्रनिद्राविद्यातिय। यिनि त्वरावित्तर-वीकांद অক্ষানিত চিতাভম্মান: মন্তকে ক্রিয়া দেবভারাও কৃতার্থ হয়েন, তাঁহার শিরে ভূমি বৈ আর কিছু শোভা পায়_া ক কেননা ভূমি অহোরাত্র পরের কর রোদন কর। পরের

^{*} M. Barthelemy Saint Hilaire following the example of Burneuf, Lassen and Wilson, fixes the year 545 B. A. the the date of Budha's de th. Max Muller places it in 477 BM. See Max Muller's Chira from a Garman Warteley.

ৰত কাঁদিতে অ'ন[্]বলিয়াই তোমার অল স্পর্শ করিলে পাপক্ষ হয়, তোমার ললে অবগাহন করিলে মর্গ হয়, তোমার তীরে মরিলে মুক্তি হয়। ভোমার তীরে মরিলে যে মুক্তি হব. ভাহাতে কোন মূর্ব দলেহ করে ? বে করে, সে ভোদার প্রি-खा तूर्य ना, ता मूर्थ देव कि। जोड़ वृक्ति नाहे, छान नाहे. श्रम नारे, महाश्रृष्ठि नारे, পৰিত্ৰতা নাই, धर्यदाध नाई-्म ठिनिय वनता। श्राठीन व्याया कवितालय क्षत्र हिन, मर्स-ত্ত্বাহুস্কায়িনী বৃদ্ধি ছিল, সর্বাত্ত্তেদিনী প্রতিভা ছিল, তাঁহারা তোমার কুল্কুলের অর্থ ব্ঝিতেন, ভাই পরিও হিন্দারে তোমার এত মহিমাকীওন। আমাদের বৃদ্ধি নাই, তেখন बीमारशे कहाना नारे, उत्थन नर्का छिमनी প্রতিভা নাই, জড়-জগতের সঙ্গে তেমন সহাত্ত্তি নাই, তেমন ফিছুই নাই~-ष्मामश इयतीर त्वाध-विवर्षिक शक्षपूर्व। ठारे मा, ट्यामान পবিবতা, ভোষার মহিমা, ভোষার মাহান্ত। বুধি না। ভোষাকে দেখিলে আমি হাতে স্বৰ্গ পাই, আর ভোষার তীরে মরিলে 'वर्ग हम ना ? किन्द्र, दक्रमन दकाला मन, कि त्य विल छिलाम, ভূণিয়া গেৰাম —

একবার খার্গ দেখিব মা। খার্শের প্রথের অন্ত বলি না, কেননা, অন্ধের পরতে পরতে বার নরকানণ জলিতেছে, মনে ধার খুধ নাই, তার ফর্গেও প্রথ নাই,—অর্গের অ্থের অন্ত নহে, কেবল হারান ধনের অন্ধ্যমানের জন্ত। সংসার খুলিরা বিরাহি, কোথাও পাই নাই, ভাই একবার সার্গ খুলিব— একবার নেধির, তেমন কুল নক্ষান্তিন কুটে কি না। ভ্রেমেরি জন্তে ক্ষার্থির নত্তার ভার হক্ষার, নিদক্ষেনামাছ-প্রকর্ম

क्षिमन, अनिविश्व अथय मर अम जानिकत्वत्र केष स्थमन, नत-**ফু: থড়াতর মানবছদরের ভার পবিত্র, যে কুন্তম এ অধনের** গুহকুঞে ফুটিরাছিল, দেখিব, তাহা দেবোধানে ফুটে কি না। र्प माग्रतिक्षित व्यमुना बद्ध व महित्याब कूनित्व हिल, सिथिर তেমন রত্ন দেবরাজভবনে আছে কি না। যে সংগীত, অভ্ধ-জন্ম দিবানিশি কর্ণে ভ্রমিতাম; যে সংগীত, এখন কেবল এই ঘুমে-চলু-চলু জোৎসালোকে দেখিতেছি, যে সংগীত. এই বন্ধ-মাথা মুজ্গবনে অনুভব করিতেছি; শুনিব, তেমন সংগাত অমরাবতীতে আছে কি না। একদিন-হায়। কোথায় टमरे निन !-- अकिन, यथनरे भूथ जूनिया ठारिमाहि, उथनरे দেখিলাছি, দেই সংগীত চক্ষের উপর ঝলসিতেছে 📲 এখন দে দিন নাই: দে বীণা চিরদিনের মতন নীরব হইয়াছে, সে কর্ছ চিন্নিধেনর মতন নিত্তক হইয়াছে—তবু সেই সংগীতধ্বনি আজিও বেন কর্ণে বাজে--সেই সংগীতের সরটুকু আজিও अमर्य माभिया ब्रह्मिए। मश्तीष्ठ दिया दियम । मञ्चरा-त्योचर्या मानेड कि क्षकात ? हतिरवान हति ! छरव . मिछा বকিয়া মরিলাম। আমার ছঃখ তোমরা বুঝিবে না; আমার এ অনমদাহের পাপনামি ভোমাদের ভাল নাগিবে না। আমার কথা করন্ধন বুঝিবে ? যে আপনার হুৎপিও ছিঁড়িয়া ফেলিয়া আপনার প্রাণের প্রাণকে ভানাইরা দিরাও, পাষাণে বৃক্ন বাঁবিরা दािका आर्ट, ता देन चामात क्या चात्र क्यक्त त्थित्व? যাতার প্রণম, কেবল শতিমাত্র অবলয়ন করিয়া সজীব প্রতিত্ত

The mind, the music breathing from her lace,

— The Bride of Abydox.

পারে, সে বৈ ক্রিলার কথা ক্যক্তন ব্রিত্রে থারের প্রীতি, শাবকহীনা বিহলীর স্থার, শাশানভূমির চতুর্দিকে ব্রিয়া পুরিরা বেড়ার, সে বৈ আমার কথা ক্যক্তন ব্রিরা প্রায় প্রায় ক্রিয়া করাই নেরাজের নির্কাত কল্পরেও নির্বাণ হয় না, সে বৈ আমার কথা আর ক্রক্তন ব্রিবে ? গাহার প্রথম নান্তিকের মনেও পরলোকের অভিত্যে বিশ্বাস জ্যাইতে পারে—তর্ক হিলা ঠেলিয়া, শরীর হইতে ননকে পৃথক্ করিয়া দিতে পাবে, সে বৈ আমার কথা ক্যক্তন ব্রিবে ? সে, করি না হইয়াও, পংসারের শোকতাপে, বির্ভের বাডনার, বৈরাজের কাতরভার, গতাল্পরনের বিষের জালার করি হইরা উঠিয়াছে, সে বৈ, আমার এ অসহজ্য প্রগাপের জর্থবাধ ক্যুল্নন করিবে ? কিন্তু

আ মরি মরি! কি শোভাই ছড়াইতেছ মা—আ মরি মরি!

একটা কুত্রবীচি অভিমান করিয়া চলিয়া ঘাইতেছে, আর একটা
তেমনি কুত্রবীচি, তাহাকে ধরিয়া ফিরাইবার জন্মই যেন পশ্চাং
গণ্ডাং ছুটতেছে—পশ্চাতে অসংখ্য কৃত্র বীচি, নিক্ষা
লোকের স্থার, এ অভিমানের পরিণামরহক্ত দেখিবার জন্য
লগ বানিয়া চলিরাছে;—প্রত্যেকের মাথার মাণিক জনিতেছে।

তক্রদেব, নারনিসনের ন্যার আপন সৌল্লের্য্য জাপনি বিভোর

ইইয়া, একশ্বার ভোর কছে জনে মুখ দেখিতেছেন, আর
হাসিয়া গ্রিক্স পড়িতেছেন—আফ্রাকে আটখানা হইতেছেন।

এই ত ক্রিনাশের গোড়া, গুই ও সুক্র অনুষ্ঠের মুল মা।

'ই ও জানীর কালায়। উহার ঐ গাল্ডরা হাসি, ঐ ব্রহ্মই
আচ্নাদ- দেখিবাই ও মরিতে ইচ্ছা করে। উহাকে দেখিনে

পামার টুকের ভিতর, কি-মানি-কি-বেদ, কি-জানি-কেমন-Cक्मन करत । के भगाक, दश्र-पत्रिपूर्व निर्वृत्तात्र गरम, निर्वृत्तात्ता-भव कानरतत मरक कानत कतिया सन, व्यम्कमत नेत्रन, नेत्रन मृत्र अमृत, हानिया दन्द । वहमित्नत्र निर्कान कानात्र दनन ध्राहेबा छिटि। তাहाटक मध्यत्रमत्र आज्ञ भद्र हहेबा यास, তবুষেন একটু স্থুও হয়। যুখন হঃখের প্রবৃদ্ধ পেষণে প্রাণ জাহি তাহি করে, তথন একটু কাঁদিতে পারিলে—কেহ দেখিতে नारे, तकर अनिएक मारे; निक्कत्न, निकंद्र, रेष्ट्रांमछ छान-ভিরিম্না কাঁনিতে পারিলে বেমন স্থুৰ হয়, তেমনি যেন একটু অংথ হয়। গভীর ছংথের সঙ্গে একটু অংখ; সাশানে থেন क्रमत माला, ठितनिकांनिएडत कर्ण त्वन यांनानकीड, श्वाय-সানে যেন অথস্থতি, চিরবিরহীর ঘেন প্রিমতমার প্রেমনিশি - कि अपि किमन अकर्र स्थ इत्र। छाडे हक्करणव ! छामारक এত ভাৰবাসি। এত বে অত্যাচার কর, এত বে কানাও, এত বে नाजानावृत थानिथावाव कत्र, उत् के प्रथहेक्त्र मेम তোমাকে বড় ভালবাসি। তোমার ঐ কলঙ বদি মৃতিয়ী কেলিতে পার, তাহা হইলে আরও ভালবাদি। তাহা হইলে, ত্যমাকে দেখিলে যাহা মনে পড়ে, ভাহার একটা মন-বৃথান উপমাহণ পাই। তাহা হইবে, প্রতিদিন এই নিত্ত স্মান খলিয়া স্কানা তোমার দেখি—বাহাকে আর কথন দেখিতে পাইব বা, ভাষাকে অন্তরের ভিতর দেখিবার জন্ত দর্বদা ্ৰতোমাৰ দেখি।

ভা আমি এত কাৰি কৰ মা ? কেন কাদিব ? মাৰ্ক কি মহাপাতক ক্ৰিয়াছি, এবন তি ভক্তর অপরাৎ কাৰ্কাছি কার পাকা ধানে ই দিয়ছি কার সর্বনাশ করিয়ছি যে চির-দিন কাঁদিয়া মরিব 🛊 আমার অপরাধ কি মা 🕈 বিধাতা এক जनाद शुन्तर कृतिशक्तिन आत आशाद स्थेनस्यान विभारी . कतिशाहित्वन, जारे मा, आमात्र दिनवाड कैंपिटड बहेटर ? বাহাতে বাহাতে আমার অনুরাগ, বাহা বাহা আমার চক্ষে বড় श्चमत्र, बाहा किছू जाबि ভानवानि, तम मकल विधाना अकाधारत मिनाहेबाहित्नन; बाद विधा । बामात्क बक्त करदान नाहे. डाहे মা, নামি প্রাবণের মেঘের ফার নিরন্তর সুরিব ? * বিধাতা পৌল্ব্যাম্বরাগী করিয়াছেন, যে সৌল্ব্যাম্বরাগী হইয়াছে ব্লিয়া: যাহাকে পবিত্রভাপ্রির করিয়াছেন, সে তাহাকে ভাশ বাসিয়াছি ব্লিয়া, যে আমাকে এই পুণিবীতে স্বৰ্গপ্তৰ অনুভব ক্রাইয়াছিল, তাহাকে ভাল বাদিরাছি বলিয়া, আমি কাঁদিরা মরিব ? কেন মা ? আমার অপরাধ কি মা ? त्मरे **डांगम्थ्यानि ए**। शिष्याहिल, त्नाच डांशत ना कांगान ? এই ছার হৃদর যে গভিরাছিল, দোষ ভাহার না আমার প পরের অপরাধে পরের দণ্ড কেন মা ? যে ভাগ, তাহাকে ভাশবাদা কি পাপ ? তা ত নহ ৷ বিধাত: কোন মূৰ্ধ ভোষাকে জীবমঙ্গৰতী বৰে ৷ কালসৰ্প এত অন্দৰ কৰিছা ছিলে কেন ? সর্বাদের আকৃতি এত মধুর করিয়াছিলে

^{* &}quot;The thou wert beautiful and I not blind, Eath been the ain which shuts me from mankind." The Lament of Tasse.

दिन मा ? खानशैन ध्यम मुखामक ात्राहिश कि मा,
मःगाद्य এठ व्यविष्ठात, এठ निष्ठ्रेत्र कि एक ? हेश्य अवसात्र
छेउद:— अवसाद कि निष्ठेत्र कि हम हेल्हा पूर्वक की वृदक्
प्रःथ किन, नम्न माहा जिनि हेळा करतन, जाहा कि तमा जेठिए आरतन ना—जिनि, हम निष्ठ्रंत, नम्न ध्यपूर्व। जाहार निष्ट्रंत्र
वित्र हेल्हां ना कत्र, विष्ठ ना; किन्न जाहा हेल्ला, हेह्रा
ध्याह्म प्राहात किन कि हहेरव एम, जाहात छेल्ला अमन किष्ट्र
ध्याह्म, पाहात श्राह्म जीहात हेल्लामां कार्या असिन्छ हहेर्छ
ध्याम ना। जिनि स्म श्राह्म किन्न किन्न

[.] See John Stuert Mil's Three Essays on Religion,

ভূমির হইবামার রোদন করি,—সার সেই দিন বে প্রবেশ খুলিরাছে, ভাহা আর ইহ জল্ম গুকাইল না। অনেক সময় মনে করি, এ মনুষা জন্ম কেন? কেহ বলিভে পারে না, কেন ? আমার বেথি হয়, কাঁদিবার জন্মই মনুষাজন্ম।

তবে মা, রোদন করা কি দৌর্কাণ ? আমি যে এত কাঁদি—আমি কি ক্র্লাণ ? রোদন করা দৌর্কাণ, নহে, কিছ আমি প্র্লাণ বাট । ত্র্যোধন শক্ত ; তব্ ভীম বধন তাহার মন্তবে পদাঘাত করিল, তথন ব্ধিন্তির কাঁদিলেন—ব্ধিন্তির বর্মপুত্র । ঈশা মহ্ব্যক্রাতির হুংথে হুংধী হইরা কাঁদিয়া-ছিলেন—ঈশা ঈশরপুত্র । রামচক্র রাবণের জন্ত কাঁদিয়া-ছিলেন—রামচক্র বিক্র অবতার । শাক্যাণিংহ মন্ত্রাজাতির হুংপে কাঁদিয়াছেন, মন্ত্রের হুংথ নিবারণের জন্ত পর্বত্যাণী হইরাছিলেন—রাজ্য ছাড়িয়া, পিতা মাতা ছাড়িয়া, প্রেণরিনী জ্রা ছাড়িয়া, সর্লাসী হইরাছিলেন—শাক্ষানিংহ বুদ্দেব । পৃথিবীর প্রায় তৃতীয়াংশ কোক তাঁহার উপাদক হা তাই বিলিরাছি তা, রোদন করা দৌর্কাণ্য নহে। যে কথন কাঁদে নাই, সে নাঁচ। তবে আমি কাঁদি বিলিরা আমি হ্র্লাণ কেন গু তাঁহাদের রোদনে আর আমার রোদনে প্রভেষ কি গ প্রাভিদ্য আনেক ক্র

Vide Max Muller's Chips from a German Work-shop,

^{*} Berghaus, in his Physical Atlan, gives the following division of the human race according to religion:

Budhists 31.2 per cent. Brahmanists 13.4 per cent.

Christians 50.7 Heathens 8.7

Mahometans 15.7 Jews 0.3

ভাঁহারা পরের অন্ত বোদন করিবাছিলেন থ্ডরাং ভাঁহাদের নাম প্রাতংশ্বরণীয়: আমি আপনার জন্ত কাঁদি, স্বতরাং আমি কুত্র, আমি চুর্বল, আমি সামান্ত। আমার বোদনে ভার্যপরতা चाहि, ए। रे वाभि कै। तिरु कानिशंद प्रसंग। भागात निस्मत श्रुत्थव अवमान दहेबाए विका जाबि कांति, छाटे जाबि दर्बन : আমাৰ প্ৰণ্য পাৰ্থপর, তাই আমি চ্যাল । সে গিয়াছে-সংসার, এ শেক তাপপুর্ণ সংসার, এ হাতা হাবের সংসার ভাড়িয়া পিষাক্তে ১৭ জ্জাইয়াছে; চিবদিনের মতন, শাজির উৎসঞ্জে क्षप्रविदीन निरास्त्रिक वर्षेत्राह्म-त्र कुषाहेगाह, त्र শাচিমাছে ভার ছাতে বাঙাদ বালিয়াছে-- যেখানে সে গিয়াছে. रमशान अञ्चालात नारे, विशव मारे, श्रंथ नारे, विल्लंभ नारे: त्मवारम मर्वह छान, मरहे छन्मत, मरहे शविक—छात, सामि कामि কেন প আমার জেছ ধনি বিশুদ্ধ হাইত, আমি যদি আপনা ভূলিয়া ভালবাসিতে পাবিভাম, তাহা হইলে তার মৃত্যুতে আমি, হুখ। ना ६२. ए: विड ८ इरेजाम ना। छाड़ा इरे नारे, अहार मुडेरिड াধবারাত্রি চক্ষের উপর দেখিয়াও আপনা জুলিতে পারি নাই. তাই আমি দায়াল। বে পরের জল্প আপনাকে ভলিতে পাবে ना, त्महें दर्भन, त्महें मामान, तमहें मूझ। दे भारत, त्महें महर, त्नहे मछ, त्नहें ध्याकः महनीय। व्यापि अ द्योपन्या निहां कुछ কারতে চাই-পারি না বে মা। মনে করি, আর আপুনার कश्च केंग्निय ना---(शाक्षा यन यादन ना दर या! यदन कति. यसगावाजिए क्याब शांन भित् मस्यावाछित्रे शकः भक्त भक्ती कीं ने नार्यन क्षत्र, व्याननारक जूनिया गरिन-क्रक पूर व्यनचिक्का नारे (इ मा।

क्न क्न क्र्क्न-कृषि धरे बैंड शादेखहा वाब, कि বলিয়া বলিয়া ভোষার তীরে তীরে বৃদ্ধিতেছে। তীরত্ বৃক্ষরান্ধি নাডিয়া, মন্তক দোলাইয়া কি বলিতেছে। उपरवादिनी रहती शाकिया शाकिया छनिया छैठिएक । সকলেরই কি ভাষা আছে মা ? আছে বৈ কি। আমাদের স্ক্তেদিনী প্রতিতা নাই ব্রিয়া আমরা তাহা বুঝি না। কিন্ত আমি আজি বুঝিতেছি। তোমার স্লিশ-শীকর-বাহী সমীরণম্পর্শে দিব্য কর্ণ পাইয়াছি, তোমার ভীরে সৈকভাদনে বসিয়। দিবা জ্ঞান পাইয়াছি, তাই আৰু ভাবরম্বজনের কথা ব্রিতেছি। লতা বলিতেছে—দেশ, অনন্ত নীলবিস্থতি-भरश भ समात हांम, भूनामनिना धहे बाह्बी, बिक्न মারুতের এই হিলোগ-আমি স্থী, ভাই ছবিভেছি, কেননা, ा स्थी त्रहे ६कन, त्रहे अस्ति। बाद् वनित्रहरू—त्वस, कि রাজোলানৈ, কি হুর্গম অরণো, বেপ্লানে বে ফুলটি ফুটে, ভাছার স্থান আমি ভোমানের জন্ত বছন করিয়া বেড়াই—আমার कान जांक नारे, जुतू शरवह दांचा माथाव विदेश रिक्शेर-द না লইতে আইলে, ডা'র ঘরে গিয়া দিয়া আসি-অভএব निः यार्थ भत्रविण्डकरे भारमें वर्ष। दुक्कं विमालक्कि-दुन्ध, दव नागारक देशन कविष्ठ भारेल, छोडारक छात्रामारन नामि विम्थ नहि- थेड এव भक्ट के दशह कवाई टाक्ड प्रवस । दर मिक् णशिक देव ना जानवात । जात्र का जूनि वनिराज्य-राज्य, णांगि द्वती : भागांत निरमंत्र एवं छःथ नारे—द्वित 'रङानारमञ् ত্ত কারি, কেননা, ভোমাদিগকে আৰি ভাৰবাসি, <u>এবং কে</u> ভাৰবাৰে, সেই <u>কাৰে</u>। কিন্তু আমার বোদৰের পরিবাম

আছে। আমি কেই ছড়াইতে ছড়াইতে কিন্তু অবশেষে জনৰ সাগরে নিশাই; তথনও যে আমি—সেই আমিই থাকি, ভোমাদের জন্ত বে অপার সেহ তাহা অকুট থাকে, কেবৰ **(सहस्रमिछ (तामन थांद्र ना—(क्वन, कून कून थांद्र ना—** অতএব স্বেহকে অনন্ত-বিস্থৃতি-গ্রভ করাই পর্য পুরুষার্থ। সমগ্র মানবজাতিকে মেহ করাই সেহের প্রাকৃত সুধ, কেননা, এ প্রথমে বিরহ নাই-এক জন বিয়াছে; সেই শৃশ্ব সিংহাসনে ষ্দি আর কাছাকেও ছান দি, সেও ঘাইতে পারে, কিন্তু মহুষ্য-জাতি ত কথন যাইবে না -- বাজিবিশেষ মরিতে পারে, কিন্ত মহুবাজাতি ত কথন স্থিবে না। ব্দিই যায়,—আমাতে ত ভাষা দেখিতে ৰইবে না। ভাই বলিতেছিলাম, এ প্ৰণৱে বিরহ নাই। তাই বটে; - আমি এক অনকে ভালবাসিয়াছিলাম विजयि स्वामि इश्बी। योन गमध मानवसालितक, अथवा ममक ভারতবর্ধকে, অন্ততঃ সমগ্র বন্ধদেশকে হাবরে স্থান দিতাম. **डाहा इंडरण ७७ कांनिए इहेउ ना-स्वर्शनेउ स्थ शांकिड.** অধচ হেছেক্নিত ছঃথ থাকিও না। ব্যিলাম মা, তুমি পতিত-পাবনী কট, তুমি অধন-ভারিণী বট, ভোমাকে স্পর্ণ করিলে পবিত্রতা কলে, তোমার জীবে বাস করিলৈ মুক্তি হয়। বে ধর্মা শিক্ষা করিতে চার, সে যেন ভোমার নিকটে আইনে; যে জান লাভ করিতে চার, সে যেল ভোষার নিকটে আইলে; যে ক্লখের ভিগারী, সে যেন ভোষার নিকটে আইলে।, ভূমি সর্ব-श्वधारादिमी, नर्सार्थनाविका-लहर, बामात्र वर्ने जिल्ला (प मा । यदि चाक्र कथन अग्रहासक देव-त्रेपंत ना कलन, किन्न विति स्रोध मध्यासम्। इतः उत्त त्यन त्यामा जीत्र समावश्य করি—অক্তরে রাম্চক্রবর্তী হওরা অপেক্ষা তোশার জীবে। কীটাগ্কীট হওরা ভাল। কিন্তু, শীচবণে প্রণাম করিয়া আজিকার মতন বিদার হই মা—বড় যুম পাইতেছে।

ইতি দিতীয় প্রস্তাব।



প্রাণের ব্যবসায়।

थक्षे। श्राप्तत राष्ट्रमाय कतिरम दय ना ? मतुन किनिरमद वादमां इत्र, श्राप्तित वादमांत्र इत्र ना ? कथन वादेमांत्र वानिका শিখিলাম না-এ পাপ বালালীজনা পবিত্র হ'বে কেমন করিয়া ? আজু কাল্ অনেকের বিশাস হইয়াছে, ব্যবসায় না করিলে वाकाजीत উদ্ধার इटेटर मा, वाकानीत উत्ति इटेटर मा । टक्न १ প্রাচীন ভারত বড় হইরাছিল কেমন করিয়া ? প্রাচীন ভারতে वार्षिका धरकबादर हिल ना विनायहि मा-वड कम। ध्यातीन রোম উল্লভ হইল কেমন করিয়া ? মুসলমানেরা বড় ইইল কেমন করিরাণ ভা' ত নয়; কোন একটা বিধয় প্রধান লক্ষ্য হইল্লা थाकिलाई रहेग । তোমার আমার गक्षा रहेलाई रहेग, छोड़ी নয়: তোমার আমার লক্ষ্য না হইলেই হইল না, ডাছাও मर्ट-अाडीद नका इहेन्न शक्तिकहै हेहेन। जोहाट ड्रिंस আমি বাদ থাকিতেও পারি। ব্যবসারেও বেমন, ইহাজেও তেমনি। বাণিজ্য-প্রধান-দেশে বাণিজ্য কিছু সকলেই করে না। ভারত বড় হইরাছিল, জান এবং ধর্ম প্রধান লক্ষা করিয়া। **डार्ट बिन्ना, क्रांतीन छात्राड मुर्ग हिल मा, क्र्या**निक हिल मा, 'धर्म नहर । किन्त क्ष रहेग क आवश कर रहेग ना दकत है छेक्केन अंकारकंद्र भेद 'डेक्कनंडद मधाक तथा तथा ना दक्ते के

প্রাতঃস্থ্য প্রাতেই অস্তমিত হইল কেন ? স্নাতিভেদ ছিল াৰিয়া। জ্ঞান ব্ৰাক্ষণেরা একচেটে করিলেন, জাতীর লক্ষ্য हहैट পাইन ना। আমিবেরা বড় হইবেন, ভারত অধংপতি लंग। यङ्गिन मध्यमात्र छेठियां ना गाहेरलाइ, यङ्गिन मध्य ভারতদন্তান এক সম্প্রদাম না হইতেছে, তভদিন ভারতের প্रकृष्ठ मक्षन हहेरव नाः त्याम वर्ष हहेबाहिन, व्याविभव्य नकाः कतिशा । मुगमभारनता एक श्रेशाहिल, धर्माश्रीता लग्हा कविहा । कार्थक राष्ट्र हरेबाहिन, देश्न ७ रहे इरिहा, डोका नक्षा किया। ভারতের যাহ। দেখ, ভাহাতেই দর্শনশাস্ত্র এবং ধর্মভাব দেখিতে পাইবে। প্রত্যেক হিন্দুর্ঘনী, মৃত্যুর পর আ্যার অবহ। পারস্পর্যা সমালোচন করিতে সক্ষম। প্রত্যেক হিন্দুসন্তানকে, নিন দেখিয়া বাতীর বাহির হইতে হয়, যরের কন্ধী ঘরে আনিতে নন দেখিতে হয়, আহারের পূর্বে এবঁং আহারের সঙ্গে বেডা-बाधमा कविट इतः, ठिठिरे मिथि, व्यात माकारमत स्वा থরচই লিপ্তি প্রথমে আরাধা দেবতার নাম গিথিতে হয়; শরন করিবার সময় ঈশরের নাম করিয়া শরন করিতে হয়; বিছানা হইতে উঠিবার সময় ঈশবের নাম করিয়া উঠিতে হয়; प्तरणावः नार्यः पञ्चादनवं नानः वाशिः शोजीगारनवः कण स्टेरद विनां अभिनिष्ठवन्ता कनारिक अस्था विवाह्णभटन वीविना नि ।: दब्राह्मत्र गांदा दम्य, जांदादज्वे जनवानिक्रमाम अवः क्षित-राता विद्यारकः। देश्यरका अविश्वकागण, त्याम्नाम् लाजकारी सामना देशस्त्रका निया, क्रजार, छेका नका क्तिबार कई रहेत्क हारे, होकारकर कीवरनव मात-मर्वाच मान-विशिष्ठ ठाइ । दबके बाद कि गका नारे है अपि वर्ग अवन

कांत त्म मिन नारे-रेश्टबंब वावमात्री, नेश्टबंब वकु; जामत्री ব্যবসায়ী নহি, আমরা ছোট। তাহার উত্তর আছে। है : दिला वार्तिकात नाम काहोब वार्निका नहि-है : दिल नर्स अथान नव रकन १ बर्मानत वानिका देशन का का नाम, छत्व अर्थान देश्वर ७त वालका वड़ दकन ? देशक कावन, देशक বে পরিমাণ উৎসাহ, যে পরিমাণ ষত্ন, বে পরিমাণ একাঞ্ডা यानिटका निवारह क्यांनि अना विषया जनरमका अधिक वका-প্ৰতা বিনাপ্ত ক্রিয়াছে। তাই বুলি, জাতীয় উন্নতি অবনতি জাতীর একাগ্রতার উপর নির্ভর করে। যে জাতির যে দিকে সাভাবিক প্রবশতা আছে, দে জাতি দেই প্রেই উন্নতি লাভ ক্রিতে পারে। আমাদের জাতীয় একাগতা নাই-धक्रिकां. मृत्त्रव केश-श्रामात्मत काठीव कावनर मार्ट, তাই আমরা ছোট—আমরা বড় থাকিয়াও ছোট হইরাছি। আমাদের: উন্নতির পক্ষে, একবে, জাতীয় জীবন সংস্থাপন করা নিতান্ত আবশ্রক। জাতীয় জীবন হউক, পরে উন্নতি इरेरा । साथा नारे जात्र माधाराधा । कीवनरे नारे, जात्र छेन्नछि। छाटे विन, छाटे श्रास्त्रम्भज्ञानक, छाटे क्रेजिना যুত্রপার, উরতির কথা একবে পাক্, মাহাত্রে আতীর শীবন মংখাপিত করিতে পার, তাছার কনা বন্ধ-পরিকর হও। ভূমি পার্য এ কথা বলিছে পার যে, য়বি আতীঃ জীবনাভাবে छेप्रकि , अव्यवस्त्र , अञ्चन, उदन देश्यास्त्रीतिकान्मरथा दिवेहेकू **छत्रिक ब्रहेशारक, छारा दरेल त्कान कित्रा १ (ट्रिक्तारक त** इरेटकरे लाख ना, कार्। ८क विद्युद्ध ? मामात व लंबा, बाराव जाम अकुष केविक कारा हर ना । देश्तकाविकात्वर्ष গ্রারস্তাবধি এ কান পর্যাস্ত আমরা কিঞ্চিৎ উরত হইয়াছি, श्रीकाद कति ; किन्नु आंत्र व्यक्ति वाड़िय ना । व्यक्ति इंदेशास्त्, त्म কেবল আমাদের বৃদ্ধির প্রাথর্ম্যে, আমাদের প্রতিভার তীক্ষতার कंकन। जना कान विकित लिएन, धारे कालात मध्या, धार्मान भाग जेविक करेक मां। 'धारे कारनव' मरक्षा, करव रकान विकिष्ठ कां वित्ननीय पर्ननविकानमारिका এउपूत पथन शाईमारह ? व्यागतः। त्यक्षेत्रीयद्वतः कविष्यं क्षत्रक्षमः कविष्यं भावि - कप्र वन मःकृष्ठळ देश्यक "कुमात्रमञ्जयत्त्र" कविष अथदा উछत्र-त्रांम-চরিতের গভীরতার ভিতর প্রবেশ করিতে গারে ? আমরা दिकन वृश्वित् भाति, शिष्कामत कृष्टेमर्था आदम कतिए भाति, ক্যান্টের ছটিলতা পরিকার করিতে পারি –অন্য কোন বিজিত জাতি পারিত ? বিজিত জাতি থাকু, কয় জন ইংবেজ পণ্ডিত শাংখ্যদর্শনের জাটপতা পরিকার করিতে পারে দ শহরাচার্যোত্র অমার্থী প্রতিভা, অমান্ত্রী বিদ্যার ভিতর প্রবেশ করিতে পারে ? কেবল বুদ্ধিতে উন্তি থাকিলে আমবা সর্বপ্রধান না হই, অবশ্ৰ এক প্ৰধান জাতি হইছা থাকিতাম। তাই বলি, অথে জাতীয়ত্ব সংখাপনে যত্ন কর্ম কিন্তু, কেমন ভোলা মন, কি বলিতে বিলতেছি—একটা প্রাণের ব্যবসার कतिता स्व मा १ এको। वत छाड़ा नहेशा, तड़वाबाता धकी। व्यारवद्ग स्माक्त्रेन चुनित्य इत्र ना १ इत्र, किन्छ चादनात्र हिनित्व ना। এ किनिय विनिशं विकाय स्थाना। हेराव शास्क कालना रहेट कुटि मा । अदनक जिनाती जुलित जुलित भारत, किन शाहक कुछ ना। विनिव जान वर्ते,-शहनाम ना वनिश क्छ सन कामिया मरत, भारेरल मकरनर ठाविकार्थ इत, भारेता

्रातारिक प्रकर्म मताम मतिया थारक-धीवन असकात रही সংসার শুক্ত হয়, জগতেক বৈচিত্র্য মুছিয়া যায়, জ্যোতিকনিট্র बीनथाड हरेश यात्र, खन्मत भगार्थित स्त्रीन्मर्या धूरेश बाब, गुर्किश ভিতর আওন জলিয়া উঠে, মন-পতক তাহাতেই পড়িরা ছট্রাই करत, প্রাণ উদাস হইরা ধার-মরিতে ইচ্ছা করে। জিনির ভাগ বটে, কিন্তু আপনা হইতে কেই গইতে আসে না-পারে ধরিয়া, হাতে ধরিয়া, চক্ষের জল দিয়া অভিবেক করিয়া দিকে: হয়, নতুবা কেহ লয় না। যে প্রাণের ব্যবসার করে, সে হে বঞ্জ নয়, তার বিখাস কি! বাহা পুঁজিয়া মেলে না, তাহার ব্যবদায়ীয় সভাবাদিতায় কে বিশ্বাস করিবে ? ভাই বলিয়াছি छ, तर्वकान कविरण हिनार ना । किनिय कांग वर्षे, किस @ পাপ দংদাবে কোন্ ভাগ জিনিবটার -আদল্প আছে ? জগৎ-পদ্ধতির কাছে, কোনু ভাল জিনিষটার আদর আছে ? কুছুম ভকাইরা ধার, দৌন্দর্য্য বিক্বত হয়, প্রেম ভালিরা খার, রমনী কানে—কোন ভাল জিনিষ্টার আদর আছে ? ত্রীলোকের পকে, পুরুষের পক্ষে এক্ট নির্ম—বে আগুনে আমাদের হাত পোরে, त्परे बांश्वत्म ठाशास्त्रत्व (भारक्। बामात्मत्र शुक्क, बांशार्क আপত্তি নাই; কিন্তু তাহাদের পুড়িবে কেন? কে ছোলে আমরা ক্লিষ্ট হই, সেই রোগ তাহাদের উপরও অইটাটার করে। আনরা মরি, তাহাতে হুঃখ নাই, কিন্ধ তাহাদ্যে সামা ধারবে কেন ? তাহাড়েই বলি, কোন্ ভাল জিনিব্টার আদর আছে ? পুৰ্বাৰশিতে বোগজননতা আছে, ৰুৰুপে কণ্ড আছে; त्थनाम विवर कार्ष, त्यार नीमानक्रण बारह, वार्षेत्रिकारन नःकामक्का बाट्स, तमनीत-कर्छ शातम कथा बाट्स, तमनीत करक

क्ष आहि, द्वानीत समस्य छाथ आहि-आवात वनि, क्लान ভাগ जिनियोत आयुत आहु ? ठन्तरमत कुल माहे, किः छरकत शक्ष नाहे, हेकूत कन नाहे. मशीएडत पर्यानाभाषाशिका नाहे. सूर्थ गांखि नारे, गांखिए स्थ नारे-(कान छान जिनियहा अस्कवारत छाल ? य निमीवन पूर्वनकारीत जानम, रमह নৰিনীবনই সন্তরণকারীর মৃত্যু; বে নৃত্যুতা ইংরেছের প্রৌরব, নেই সভাতাই <u>আমাদের সর্বনাশ</u>: যে চিন্তাশক্তি ভোমার মুথ, দেই চিম্তাশক্তিই আমার কাল: যে চাঁদ তোমাকে ष्यानिष्ठ करत, त्मरे ठाँमरे प्यामारक कामात्र; त्म छानवामा ভোমাকে বৰ্গজ্থ দেয়, সেই ভালবায়াই আমাকে নরক-যন্ত্রণা तम्म—कान जान किनियों। এक्वादं जान १ किक्र—में त्व ডাকিতেছে 'চাই বেল ফুল'। আছো, উহার ভার আনের বোঝা মাধায় শইয়া, পথে পথে, গলিতে গলিতে, বাড়ীতে गाड़ीत्छ, छाकिया दिष्ठाहेल स्व ना ? छाकिल स्व मा ?-"ভোমরা কেছ প্রাণ নেবে গো? বে লয়, সে কাঁদে; বে না नम्, त्म काँदमः त्य दनम्, त्म भागम रुषः त्य मा दमम्, त्य লোক ভাল নহে;—তোমরা কেহ এ অধ্যের প্রাণ নেবে भी ?" मा । प्रे कक्ष धनित्न चाद कि नहेर्ड वानितं ? जरत ना इत धनिय,—"<u>जिनित उठ छात</u>; हेहां कांछ् शाक्रिक कार्या উৎসাহ कर, सर्थ मण्डि इस, मध्यादत अञ्चलात इस, आणास বিখান হয় কেবল রাত্তে নিজা হয় না,—কেহ প্রাঞ্ নেবে त्या १" व्यक्तिक इदेश मा । के त्यं ककी के शाकिश। अही त्य क् नय, ७ अध्यक्त त्व चरवद जांगत्व, छांदा जामि त्वन त्विनाम, क्षित्र मक्रम कि बुबिरन ? कर्ब क क्योंगे शक्तिया निया निवा,

"জিনিয় অতুল; যে বিক্রম করে, তার পরবোকে মৃক্তি হয়; त्य क्रम करत तम त्योचन कितियां भाग, मध्मात सम्मन तम्ब ; ভার অংরের হাসি কিরিয়া আসে, চক্ষের জল ওকাইয়া যায়;—সে দশরীরে অর্থভাগ করে-তোমরা কেহ আনার প্রাণ নেবে গো ?" বেশ কথা। কিন্তু ভাকিয়া ডাকিয়া গলা ভাঙ্গিয়া য়ায়, তবু কেহ লইতে চাহে না। পরের প্রাণ বৃইতে গেলেই আপনার প্রাণ্টা যায়—অনেকের ভাগোই নিছের প্রাণটা আগে না খোয়াইলে পরের প্রাণ পাওরা যার না। নিজের যার বলিয়া, পরের প্রাণ কেহ শইতে চাহে না। আবার ভাঙ্গিয়া বিক্রয় করিলে অনেক 'আহক भित्न, किन नमछ आन कह नहें छ हारह मा। धान्त स्थ-টুকু অনেকৈ চার, প্রাণের ছার্যুকু কেহ কইতে চাহে না; मन्त्र आनमहुक् वहर् हारह, अनुराव अवनावहुक वहरू চাছে ना-च्रायत च्यी तात्र मिल, इः व्यव इःयी मिल नां। के छ इंड ! इः स्थत इः शै मिल ना - मत्नत कथा विन्तात करा मन्त्र भारत मास्य थे किया भारे ना।

इःथ (करन এक जन नहें छ भारत, करन अक जन नहें छ । कि ज पाकिस्त जावात इःश्वे कि । यन मा पाक, विका ना पाक, वह ना पाक, महात्र ना पाक, धृर ना पाक, श्वे ना

নতুৰা আর প্রাণের ব্যবসায় করিতে আসিব কেন গু এখন যাচিয়া দিতে চাই, কেহ লয় না; লও লও ক্রিয়া লোকের পারে ধরিয়া সাধিয়া বেড়াই, কেহ শইতে চায় না; সে, পাছে ছারাই, এই ভয়ে মরমে মরিয়া থাকিত। দথলীপথের নৃতন মঞ্জরি চিত্র পেলেই আর যেন আপনাতে আপনি থাকিত না। আমিও সেই গ্ৰগদ ভাব দেখিয়া, আমাতে যেন আর আমি থাকিতাম না, কেমন থেন হইয়া ঘাইতাম। মনে করিতাম, বুক চিরিয়া, বুকের ভিতর করিয়া, বুকের ভিতর হাত বাহির করিলা, দুশু হাতে চাশিলা বাখি—শরীরের পার্থকাটুরুও গালে সহিত না। কি যেন হইতাম, কেমন ঘেন হইতাম-গলিয়া জল হইতাম না, কিন্তু গলিৱা কেম্ন বেন্তুইতাম ৷ দে ভাব ভূলিয়া পেলাম-বহুদিন অভ্যাস না থাকায়, ভূলিয়া গেলাম-वहानि संयो मार्काए नाहे, वहानि भतिहा नाहे, प्रम हहेएड थीय यांव शहेबारह। नव आरह-हानि आरह, द्यांनन আছে, সেহ আছে, প্রেম আছে, অর্রাগ আছে, আশা আছে —ना शांकित कि मासूब वांटि ?—अब ट्रांक, अधिक ट्रांक, श्दरे আছে-- दक्वन त्मरे शनिया त्क्यन-रुख्या छाविष्ठ नारे। वड़ मधुत छाव। न्यूडिटेड दावा वितन, धवनक दान दक्रमन रहेश गाँह, किंक (कुमन ब्यांत हुई मा) छाडाटक वाहिस्त **ठाक व्यक्ति, जीवीत बूट्यत विजय छन् क्**टीहेश बूट्यतः जिजरो **जाहारक मिलिना—गून** भेला वाहिरत जाहारक দেখিয়া বেষন হইতাৰ, তেবৰ আৰু হই না। এখন ঠিকানা থাকে; তথ্ম, कि যে করি, তার ঠিকানা গাইডাম না। সেই ভাগहेकूत **अंक, अदि शनिश**िक स्वश्नांत अक्ष, ध्रयन श्र

হাতে ক্রিয়া ভ্যারে ছয়ারে মাথা কুটিয়া ক্ডোই; কিছ এখন ঘাটিয়া দিতে চাই, তবু কেছ শইতে চাহে না। তেমন লোক जांत्र मिला मा। এ मानातत्रक्रांकदेत एत तक जाएह, किस তেমন আর নাই। এ অনন্ত বিধে ঢের চাঁদ আছে, কিন্তু এ ছার পৃথিবীতে একটা বই না। জুপিটরে চারিটা, ইউরেনসে ছরটা, সেটরনে আটটা—আমাদের এ পাপ লোকে একটা বই না। আমাদের ছন্ত্রেও একটা বই না। একবার মাত্র আপনা অপেকা পর বড় হয়। কেবল এক জনের সহিত তুলনায়. অধিৰ সংসার ভুক্ত বলিয়া বোধ হয়। অন্তকে যত্ন করিতে পারি, এছা করিতে পারি, আনর করিতে পারি, সোহাগ করিতে পারি-কিন্তু ভাববাদা কেবল সেই। আমাদের প্রথম ভালবাসাই, আমানের শেষ ভালবাসা। আমানের প্রথম ভাল-বাসাই, আমাদের একমাত্র ভালবাসা। বে মৃতি, দিনাতে गरखरात्र दाबिशां हत्कत्र जुलि इस नाहे, म मुर्कि हिक्काल চকে নাগিয়া থাকে। বে মৃতি একবার হৃদ্যে অভিত হইয়াছে, ্ৰে কুৰ্জি: চিত্ৰকাশ হৰুৰে থাকে। সময়স্ৰোতে সব ধুইয় यात-ज्ञंभ, त्योचन, अष्ट्रमंडा, स्थ, आंगा, नव स्तित्रा याद क्षि श्रारवद नार्ग मूट्ड मा-श्रद्धिण द्रिक्त कत्रिया दर्गनित्य ें का शांतिरम, त्व मांग यात्र नां। एक्सर देकह रवनां। टे ेर्बार, ब्रांत मध्ने त्रव रह ना । छात्र भन भावात मध्न नामा बरक, दुवन भूटचंद दाया बहन कहा माल। বলিভেছিলাম, তুলিয়া গেলাম-

প্রাণের ব্যবসার করিব। কিন্তু কি মূল্যে জিনিব বিক্রা করিকে ভাল হয় ? কি মূল্য পাইলে দিতে পারি ? ক্রিক

তবে শান্তি। শান্তি ? তবে আর এ ব্যবসায়ে কাল কি ? আহবীর গর্ভে শরন করিলেই ত হইছে পারে—লোকের হাতে পারে ধরা কেন ? আহবী-সৈকত-শঘায় চিরনিনের মতন শবন করার বে শান্তি, তেমন শান্তি আর কোথার ? তবে হাও। মন্দ্র কি ?—তবে তাই।

কয়না-সহাবে বাটার বাহির হইলাম। ডাকিলাম—উটেচ্যবরে ডাকিলাস, বিক্ত প্রাণ নেবে গো ।'', এক বার—কই বার—
তিন বার—কৈছ লইতে চাহিল না। একটি গুছের অভ্যন্তর
হইতে, নৈশ লগন বিনীপ করিয়া, আনন্দধননি উঠিতেছিল।
বিশ্ব লোক তুণ পাইলে, তুণই অবলম্বন করে। মনে করিলাম।
এইখানেই বনি প্রাণের মন্তি হয়। গুছে প্রবেশ করিলাম।
ডাকিলাম, প্রাণ নেবে গো ।' একটি স্ত্রীলোক বাহির হুইছা
ভিক্তানিজ্ঞান, শুলা কত ।''

कांभि त्विनांभ, "स्व" ।

রমনী একটু হানিরা বলিলেন— ত্রব ? ত্রব কে কাহাকে
দিতে পারে ? ত্রব আপন আপন আরম্ভ। আমাদের সহবাসকে
লোকে ধর্মবান বলে। কথা ঠিক; কিছু এ উপমান প্রকৃত্ত পৌলব্য নকলে বুঝে না। ত্বর্গে স্বত্তাস হর, কিছু আপন
আপন ত্র্বব সর্বেরা ঘাইতে হর। আমরাও বাকে তাকে
ত্রবী করিতে পারি না—টেকি স্বর্গেও ধান কানে।"

একটি ছুইটি করিয়া অনেকগুলি স্ত্রীলোক আদিয়া জুটলেন। প্রাণের ব্যবসায়ীর কথা ভনিয়া সকলেই কৌতৃহলপরবল হুইলেন। একলন জিজাদিলেন—"ভোমার নিকট কডগুলি প্রাণ আছে?"

षात्रि विनात्र, "এकि वह मा ।"

ক্ষারী বলিলেন, "একটি জিনিব গইরা কি ব্যবসায় হয় ?"
ক্ষার একজন উঠিয়া বলিলেন, "কই দেখি, কেমন আণ ?"

ব্যক্ত হইরা প্রাণ খুলিয়া দিলাম। অন্দরী দেখিয়া মলিলেন,
"এপ্রাণ কে লইবে? এ বে ড্যামেল প্রাণ! ইহাতে উৎসাহকট, রন কই, প্রস্তুরতা কই, আশাক্ষই ?—এ ড্যামেল জিনিব
কে লইবে? এ বে ব্যবহার করা জিলিছু!—আর কাহারও কাছে
বিক্রয় করিবাছিলে না কি ?" আমারা বুর্ণের ভিতর সাসবমহন আরম্ভ হইল। মতক খুরিল। চলে অ্রুকার মেখিলান।
চল্যু বিহীর্ণ করিয়া, ডক. কঠ দিয়া কথা বাছিয়া ফুইলাংবিকের
করি নাই। আমি লগুথ করিয়া বলিতে পারি, বিক্রর করি জাই।
একলন ভাড়িরা বাইবাছিল। আমার অ্রোভসারে বাছে সিক্র বিহা, প্রাণ চুরি করিয়াছিল। একদিন—তথ্য শ্রম্ভের ট্রান

ভালিল। একটি নিজিতা বালিকার মুখ বড় হালর নামিল। त्मव निनाम मुक्र भवत्म त्कांश्यात्यांकः जामिया त्मरे मृत्यत উপর পড়িরাছিল—বড় ছম্মর নাগির। আমার বুন ভালিয়া-क्रिन, यूर्वत द्यांत क्रिन-पृथ्वानि तक श्रुमत गानिन। कार्श्यक লিকার ভাষ নিশ্চল হইরা নেই মুখ দেখিতে লাগিলাম – বুকের ভিতর নৃতন ক্ষেত্র করঙ্গ উঠিল ; চিত্রালোড: নৃতন পথ খোদিত कतिया छूछिन। क्तिया च्तिया, किविवा कितिया, त्मरे पूर्व त्मिथ-नाम-बद्ध कुम्ब नार्शिन। आकारनत कें। स्टब्स दरिवर्गाम-बद्ध चुन्द्र नाजिल। इकुर्किक हाहियां प्रिनाम-मःमात्र वकु चुन्द्र লাগিল। বুকের ভিতর চাহিয়া দেখি,—সর্বনাশ। আমার প্রাণ চুরি গ্রিয়াছে। অনুসন্ধান করিবার। চক্রদেবকে বিজ্ঞাসা ক্রিকাম—চন্দ্রমের হাসিয়া উঠিবেন ৷ বুক্ কভাকে ক্রিভাসা कत्रिमाम-डाहाबा माथा नाष्ट्रिम। क्क्रमञ्जनदीतिगदक जिळामा कृतिनाम-छाराजा शानिता ও উद्यात गाउन छनिता चिक्न । नबीदनंदक किळाना कविनाम-नबीद्रन 'हाम हास' कदिना **श्रामिक एक्ट वानिकारक किळागा कविनाम-वानिका, गूर्व** কাপড় দিবা হ'লিয়া ঘর হইতে প্রাইরা সেব। ব্রিলাম, সেই চোর-বছুৰা প্রাইবে কেন ?

शक्तवी विनिट्सन, "कांत्रदक्रे वृति विनिट्स, कृदव जिनिय विनादेश क्रांट्रिय ना दक्त ?"

क्यारेश गरित ? ७ श्री । क्यांत कार्य किरारेश शाइत ? इंक क्यारेश गरित ? दबरे मूल तारे मधुत शांति क्यांते मूल क्यांगाम,—नियानन विथि। अकी वरे आन गांव मारे दक्त खारा करेंगा, अकी क नियारहरे, बांक क्यों। विशे प्रकिनांब

করিতাম। তখন সংশার চিনিতাম না। ভাগবাসিলেই 🙉 কাঁনিতে হয়, তাহা কে স্থানিত পুঞ্জন বে হইবে, জাহা কে জানিত ? স্বলরীকে বলিলাম,—"কিরাইরা চাহিব কি, সেই मुख मिथियां गव ज्लियां दश्लाम।" प्रमृती बिलालन, "छटव আবার ব্যবসায় করিতে আসিয়াছ যে বড় ?" আমি উত্তর क्तिनाम, "इः स्थत कथा बनित कि, त्म अथन नाहै। कानममूख উভরে উভরের মুধ চাহিরা, উভরে সভ্রণ করিতেছিলাম। নতরণ করিতে করিতে, আমি ভালিয়া যাইতে লাগিলাম, সে पुरिन, कहे जात छेठिन ना । शुर्त्स लाटकत मूर्य छनित्राहिनाम, এ সমুদ্রের কাভারী আছে। তথন অন্ত বিষয় চিন্তা করিবার व्यवनत हिन ना, ब्लाटक राहा विनन, छाराहे दिशान कतिनाम। त्ने विन कांडबकात्त्, बाक्नकात्व कांकिनाम-'बनाबनाव ! **ভবপারাবারকাণ্ডারী । जागांत প্রাণাধিক, আমার জীবনদর্মার,** धरे करन प्रविद्यातक, पूनिया नाथ । पत्रित्यय यह श्र्मिया मां ।" एक डाकिमान, कुछ क्रांतिमान-त्मात्कव्र विश्रा कथा। ध शांबाबाटवंड काश्रांकी नाहे।" - सम्बदी बनित्वन, "त ত গিরাছে, কিন্ত ভোষার আণ কি তোষায় কিরাইরা দিলা शिवादक ?" आमि विनाय, "क्विविता क्वित वामू नाहे, गरम कतियां नहेश यात्र नारे,-क्षित्रा विश्वहर । प्रमारी शंजित्वम । विगटनम, "खरव , प्रमुप्ति त्नाक केंद्र नह। ता प्रवन ट्यांनाव विका बाब जाहे, क्यन त्न जिनित्व ट्यांनाक অধিকার কি । ভূমি ভাষা বিক্রম করিবে কি বলিয়া । আর -श्रम देन किन्त्र कतिया है क्रिकेटगांत्र दिनियां स्थम कृति क्रक किनिय कितारेश नरेनात क्या मुख्य जान नारे, कथन कार्य দান করাই হইনাছে। দিয়া বে ফিরাইয়া লয়, সে মহাপাশী।
আবার স্থানিগার মথিত হইল। ইকারের অর্কেক পোনিত
শোবণ করিয়া একটা নিখাস বাহির হইল। চক্ষে কল আদিল।
কাঁনিলাম। আর কিছু বলিবার মুব ছিল মা, সেগান হইতে
বাহির হইলাম। পথে আসিতে আসিতে ভাবিলাম—তাই ত,
এ ছার মোটা বৃদ্ধিতে ঐ সামায়া কণাটা হোগায় নাই ? সে
লোক ভাল নহেই ত বটে। একবার যে জিনিয় এক জনকে
দিয়াছি, তাহা আবার এক জনকে দিবার অবিকার কি ? য়হা
দিয়াছি, ভাহা গিয়াছে। কিছু ঐ ত আলা। জিনিয় নিলে
আর পাওয়া বায় না। গেল—সাত্ গেল—একেবারে হাতের
বাহির। কিন্তু ভা না হইলে আর দেওয়াই কি ? ভাইভ বটে;
আর এক জনকে যে দিতে বায়, সে লোক ভাল নহে।

কিন্তু, মাহ্য যার—মাহা দি, তাহা ফিরাইয়া দিয়া যায় না কেন ? যাহাকে প্রাণ দি, সে গেলে আমার প্রাণ, আমার হয় না কেন ? তার অভাব হয়, কিন্তু দেই অভাবের অভাব হয় না কেন ? জিনিব বায়, তাহার ছতি থাকে কেন ? ছতি। ছতি। ছতি। তাহার অভাব মিশিয়া রহিয়াছে। ঐ ক্যাটার অর্থই, কি যেন নাই। যাহা নাই, তাহারই মানলিব ভাবসমন্তির নামই ত ছতি। হারান জিনিবের তালিকা বই জানার ছজি কি ? একটি একটি করিয়া জিনিব, তাহার হব জানার লাক, তাহার ভাববারীয় হ্লীয় ববরণ, তাহার হব জানারিছের উগ্রচিত্র, এ তালিকার ইটের কেন এমন হয় ? যাহা বায়, তাহার নাম পর্যান্ত উঠিয়া যায় না কেন ? বে জিনিব নাই, তাহার নাম প্রাণ্ড উঠিয়া যায় না কেন ? বে জিনিব নাই, তাহার নাম প্রাণ্ড উঠিয়া যায় না কেন ? বে জিনিব নাই, তাহার নাম বেন ? এ পাপ ছতি কেন ? কিন্তু

श्विना थाकिल कि मसूरवात छेत्रकि इहेल । मारे या इहेगा। যাহাকে লোকে উয়তি বলে, তাহাতে কি কাহানও অধবৃদ্ধি इत्र ? ममारकत छेत्रेजि निवसन एक कान कारन स्थी श्रेत्री छ ? ছই শত বর্ষ পুরেরর লোক আমাদের অপেকা হঃবী ছিল 🕶 ? ভাহাদের মেহগনি টেবিল ছিল না; ইঞ্জি চেয়ার ছিল না; ভাহারা ফ্রি-উইল নেসেনিটি ভানিত না; তাহার! অয়জান, व्यवज्ञान कथन छटन मादे; छाहावा हानिः वृष्टे शास्त्र निष्ठ ना, উপাধানের তবে ম্যাচ্বল থাকিত না, টেবিশের উপর ঘড়ি টক্ টক্ করিত না-কিন্ত, তাই বলিয়া তাহারা আমাদের অপেকা হঃৰী ছিল কি ? মন্তবোর হুথ দুঃখ ফি পেন্ট লন, কোট, হাাটের উপর নির্ভর করে ? সামাজিক উন্নতিতে কথনও কাহার চক্ষের জল ওকাইয়াছে কি ?—কথন কাহারও শৃষ্ঠ জন্ম ভরিয়াছে কি ?-কথন কাহারও কণরসকভূমে কুত্রম স্টিয়াছে কি !-ক্ৰন কাহায়ও হাৱান ধন ফিরিয়া আদিয়াছে কি ? किंद्र ना। मन्द्रशात सूथ प्रःथ अज्ञान वहेगा। सात्र अज्ञान श्राष्ट्र, धवः यात्र त्महे अञ्चाव यत्र कतित्महे भून हत्र, त्महे स्थी। यात्र मक्न चलाव भूर्ग हम ना, त्म इःथी। यात्र अधिकाश्म थाना १५ इत ना, त्म उद्योगिक इंग्डी। बाह् थाना अनाव अन्वनीय, दम करवाहिक दानी। गीरा अलाना, जाराब क्ष .त नानाविकः त्वं तक काबी। वाबाब बात काँने अकावः बाहे, णात क्षेत्र द्वारी स्थाउ नाहे। चलाव ना शाकाउ स्थ नाहे। व्याचार शाकित्व, जांशी भूर्वत हहेत्व, उत्तरहे श्रेच। व्याचार यारारम्य व्यक्ति व्यक्तानं, कांबारम्य इत्थ मञ्जानमानः कृष्टिकः। শাহার অভাব অয়, ভাহার হংগ সম্ভাবনাও অংশকার জন্ম।

উন্নতিতে অভাব বৃদ্ধি হয়, স্ত্রাং ছ:ৰ বৃদ্ধি হয়। তাড়িত-বার্তাবহ দা থাকা, উন্নত আতির পক্ষে অমুখের কারণ হইতে পারে, কিন্তু যাহারা, ইহা না থাকাকে অভাবমধ্যে গণ্য করে না, ভাছাদের ভাড়িভবার্তাবহ না থাকায় ৮:২ কি ৭ উম্ভিডে বিলাদের উপকরণ বাড়ে মাত্র। কিন্তু কি বলিতেছিলাম, ভাল্যা গিয়াছি—স্থৃতি কেন ? স্থৃতি না থাকিলে মনুষ্যের উল্লি হইত নাণ না হইল, নাই--বুকের ভিতর এ সমুদোজ স ত থাকিত না। নৈরাশু-বায় যে অন্তর্নের ভিতর হল করিতেছে, ভাহা ত গামিত। সদবের এ স্পষ্ট হাহাকার ত উপশ্মিত হইত। কিন্তু মহুয়োৰ অনেকটা **পুৰ**ও স্থৃতিমূলক। সুতিৰ ভাতাৰে, সে অধের অভাব হইত যে! হোক—মুখ গেলে, তাহার সঙ্গে यिन इ: ४ थांत्र, जाहा इटेटन खब थाक, जाहाटक जालिक नाहे : এ যন্ত্রণা আর সহ হয় না। দিবানিশি বুকে ক্রিয়া অন্ল বহিতে আর পারি না। নিরস্তর হৃদ্যের পরতে পরতে, হৃদ্ধের ভরে ন্তবে বে লক্ষ্ লক্ষ্ বৃশ্চিকৰংশন হইতেছে, তাহার উৎকট যাতনা আর সহে না।

আর এই পাপণতি আমাবই আশ্রের থাকিয়া আমাকেই
পোড়ার। শীলভাবে স্বাসী বেমন, যে কুক্তলে আশ্রের লয়,
আহারই ডাল ভারিয়া আগুন আলে, স্বতিপিশাচী তেমনই
আমাদের আশ্রের থাকিয়া, আমাদেরই অনিষ্ঠ করে—আমাদে,ই
প্রাণের ডাল ভারিয়া ভারিয়া কার্নানলে পোড়ার। রাধ্য
নেক্তে বেমন আমাদেরই টাকা ধাইরা, আমাদেরই আশ্রেরে,
আমাদেরই অরে উদর পোষণ ক্রিয়া, ইত্র লোকের জার
আমাদেরই অরে উদর পোষণ ক্রিয়া, ইত্র লোকের জার
আমাদিগ্রেই অভয়োচিত গালিনালাল ক্রিয়াহে, স্বতিপিশাচী

তেমনি আমানেরই বুকে বিষয়, আমাদেরই ছান্ত্র চর্বাণ করে।
মেকলে সাহেবকে, বাহার ভাল বনিতে কটি হয়, চিনি বন্ন—
আমি বলিব না। মিছানিছি ভদ্রনোকের নামে যে কলকারোপ
করিতে পানে, সে বলি ভদ্রনোক ত ছোটলোক কে ? কিন্তু
ক্তির কলা কি বলিতেছিলাম—স্তিপিশালী আমানের ক্ষম
চর্কাণ করে। তাহার উভ্য ওঠানাত দিয়া যে বিকট শোণিতধারা বহে, তাহাকেই সাধারণ লোকে "অঞ্চণগো" বলে—ভালা
কথার, সেই ইতিপিশালীচন্ত্রিত ছান্যানঃসত শোণিতপ্রবাহের
নাম, চক্ষের জন। বন্ কেলার। অঞ্চ শন্দের ইহার অপেক্ষা
সাল্য আদি পর্যান্ত হয় নাই। বনিহারি। ভর্মা করি, ভ্রিধাণ অভিধান প্রণেত্রণ আমার এই অর্থ গ্রহণ করিবেন।
কিন্তু দাঃ বন্ধ গোলমাল হইয়া গেল——

কিন্তু এ জন্মে আর প্রাণের গতি করিতে পারিকাম না।
আর প্রাণের ব্যব্দান করা হইল না। থাছাতে স্বন্ধ দাবাজ
করিতে পারিলাম না, তাহা লইনা বাবসান করিব কি বলিমা প্র্রিকাম, আমার জ্বনদীর কুল নাই। ভন্নতিক আরও ভালিয়া
কোল। কাঁদিতে কাঁদিতে গুহে ফিরিয়া আ্লিকাম।

ইতি তৃতীয় প্রস্তাব



श्रुविभांत्र ननी।

তর তর করিয়া আপন মনে কোঝার হাইতেছ, একবাব দাড়াও দেখি হে। দাড়াও; একবার ভাল করিয়া তোনার দেখি। এ ছংথের মহ্যাজীবনে ছংথ অনস্কবিধ্, কিন্তু মর্মান্তিক ছংথ এই যে, কিছুই ভাল করিয়া দেখা হয় না। যাহা কিছু দেখিলাম, যাহা দেখিরা নোহিত হইলাম, বাহা দেখিরা আবার দেখিবার জন্ত লালায়িত হইলাম, কিছুই ভাল করিয়া দেখা হইল না। কুলুম, দেখিতে দেখিতে ভকাইরা রেল; ইম্প্রহু, দেখিতে না দেখিতে মিলাইরা পেল; ক্লপ্রভা বেমন ভাসিল, অমনি ভবিল—কিছুই নয়ন ভরিয়া দেখা হইল না। সার, কুল্বনের সৌকুমার্য্য, বিছাতের শোভা, ইম্পুরুর, বেচিত্র্যা, গায়াছগগনের কোমলতা, বসন্তপ্রনের মাধুরী, চন্দ্রবিদ্ধর গবিত্রতা, বেথানে একাধারে মিলিত দেখিলাম, তাহাও কোথার চলিয়া গেল। কোথার চলিয়া গেল,—

> ভাষ করি পেখন না ভেগ। মেখনালা সঞ্জে ভড়িত-কতা অমু হাদরে শেশ দেই গেল ॥^{১১}

একবার দাঁড়াও দেখি হে। একবার দাঁড়াও; একবার ন্যুন ভরিয়া, দাধ মিটাইয়া ভোমার দেখি। ভোমার বড় ভাগবাদি। তুমি হুন্দর, তাই ভোমার ভাগবাদি। তুমি কোমৰ, তাই ভোষায় ভাৰবাসি। যেমন ভোষায় ছানয়ে, তেমনি আমারও ধ্নরে কালিমা পড়িয়াছে, তাই তোমায় ভালবাসি আর ভালবাদি তোমার এ-

"ঘুমে ঢুলু ঢ়লু বুগললোচন মুখে মৃছ মৃছ হাস।"

তক কি ওই জন্ত । তাত নয়। আর কিছু আছে কি ? এ ভালবাদার ভিতর—এ কেবল চক্ষের ভালবাদার ভিতর, আর কিছু আছে কি ? তুমি মাকাশের চাদ, সামাদের আকশি क्ष्म-कथन ७ दूरक कदिए शाहेव ना-पुरक शाबिया, একশ্বার, পদকে একশ্বার, মুখধানি চাহিলা দেখিতে ত शांदेव मा । विलवात किছू नारे, खर् किছू विल विल मन्न করিয়া, কেবল পর্ণাস্থটুকুর জন্ত, কথন ত অনর্থক জাগিয়া রাভ পোহাইতে পাইব না। কথন ত আমার জন্ত একটু व्यक्ति हानि, वाणि वानिशाहि बनिशा अकर्षे व्यक्ति व्यक्ति। ও টাদমুৰে দেখিতে পাইৰ না-কখন ত ৰচনামূত কৰ্ণবিবয় করিয়া ঢালিবে না—কেবল চক্ষের গাল্বাসা—ইহার ভিতর আবার কিছু আছে কি? বুঝি তাই। তোমাকে দেখিলে, খৃতির গভীর অক্কারের ভিত্তর চি বেন অস্পষ্ট দেখিতে नार्रे। त्मिक्ट नार्रे, जातात नात्क मत्या, करे जात ध्रावित्व शाहे जा। पृथि , शहे जा। य निरंक छोकहि-पूर । जारा गारा हारे, जारा करे भारे मा मध्यात भू निया दन्ति, त्र म्मूर्गमिन धक्यांना देव हिल ना । म्यस्त চাহিরা দেখি, কি বেন ্ধু খু করিতৈছে—দিগন্ধ বাালিরা,

शमत्राकान जित्री, कि त्यन पू ध्कतिरहर । भ्रष्टे कि दिन द्व किडूरे दरन नगा। यरुष्ट्रम नय, व्यत्नभा नय, माधत मग्र, व्यक्त नेनी नम्, आंकान नम्न साहा किहूबहै महिल लाटक पद्म समरम्ब जुनना दनग, जाहा नेत्र-तन्हें कि द्वन, किहूहें द्वन नव। भक्ष ভূমে ওয়েসিদ্ আছে, অরণো জীব আছে, প্রান্তরে সর্মী আছে, সাগরে দ্বীপ আছে, নদীতে জন আছে, আকাশে তারা আছে-खनता किছू नारे। व जनीत कृत नारे, व नशीर द्वा नारे; ইহাতে মংস্ত ভাগে না, চক্ত হাগে না, নক্ষত্ৰ নাচে না, প্ৰতি-वित्र अएए ना; व ननीटि कन नारे, मृखिका नारे, वानुका नारे- व गरी म्थमह । व आकारम छात्र नारे, मनी नारे, नकड़े नारे ; देशार अध्य जिंक ना, विद्याप शारम ना, जैकाशाल हम ना, वञ्च भटक नां- ध षांकान ष्यांकानमय। ध सकपूरम प्रशाहिक भए मा, बाधू वरह मा, छेवान वार्य मा , हेहारक बानूका माहे, ষ্তি লা নাই, ধওকুল নাই-এ নকভূম নকভূমময়। এ অরগ্যে महारी नारे, पूक नारे, गला नारे, जुन नारे, अब नारे; रेर्ड्ड वक्रम्ब मूटि मा, बत्नत्र शांधी शांध मा- व व्यवश क्रिक विहुदे मह। दनावाछ भ् बिर्म शाह ना। छात्र शत कानछ छ्:८४, कानए छ मिनिवाइ क्छ, अनक काकारमत मिटक यथन ठाँट, उथन ভোষাকে কেৰিবা, অ'বাৰ সেই বহামনী মূৰ্তি ভাগিনা উঠে ! তাই কলম্বী টান, তোমার কলম সবেও তোমার এত জালবাসি। क्ि देव गांस नाहे, इश्व देव छव नाहे, कातांक देव हानांक हो, राम देव कीव ना-छद् अछ जानवानि। (करन त्यहे अछून स्थ-থানির বঙ্গে পুরুষক্স আছে বলিয়া, নতুবা,—তুমি আমার কে 🔭 ্ৰিক শশি, যাহা মনে পড়ে তাহাতে বড় বন্ধপা পাই। জীবন

স্বকার, সংগার পৃত্ত-মন কেমন উদাস হইয়া যায়। আমি স্থা চাহি না, কেননা হুখ, ছ:খ হইতে অবিযোজ্য- সুৰছ:বের বে মূর্ত্তি সক্রেটিস্ কল্পনা করিলাছিলেন, তাহাই ঠিক। আমি ক্রখ চাহি না-কেবল শান্তির ভিধারি। বলিতে পার, চক্রদেব. যেথানে গেলে চক্ষের জল শুকায, এমন শান্তিনিকেতন কোথায় প ভাহাকে ভূলিতে পারিলে, বোধ করি, শাস্তি পাইতে পারি। ভবে, তাহাকে ভূলিব কি ? হা মদৃষ্ঠ! ভূলিব মনে করিলেই ভুলিতে পারি কই ? কিন্ত ভুলিতে যদি পারি, ভাহা হুইলেই কি ভূলিতে চুট্টি ? যদি কোন দেবতা প্রসায় হইয়া বর দিতে চায়, खाद कि खाशांदक जूनिएक ठारे ? खाशा श्रेशन कि ठारे ? कि আবার চাই 🖟 তাহাকেই চাই। ঐ বরটি ছাড়া যদি সার সব भिरंड होत्र, তবে कि हारे ? जुनिएंड धारे कि ? ना ; डारारक यमि ना लाई, उदर मतिएउ छाई। ও वहाँछ अपि ना लाई-पि বাঁচিয়া থাকিতে হয়, অথচ তাহাকে না গাই, তবে কি ভুলিতে हाई १ ना, जावांत्र मतित्कु हारे। कथा श्रेटकाइ, मुकू रि मां इष,-छटव-छटव-छटव-आवांत्र मतिएछ हारे। मदन दर ্ছইবে না, ও বর বেঁ পাইব না —তবু আবার মরিতে চাই। নতুবা আর কি চাহিব ? তাহাকে ভুলিবার কথা মূথে আনিতে পারিব मा,-बाब कि हाहिय ? वर्ष त्य केति, त्म क देशद्य ना क्षक त्य বিলাপ করি, সেত ওনে না—কই সাধনা করিতে ত আরে বা— কং চক্ষের জন মুছাইতে ত আসে না। তাবে ভলিব না কেন ? त्यम ज, जूनिया बरिव; जाबात व अक्कारक मील जीलत्व, व व्याकारन है। के केरिय, य नजीरण नक्क नाहित्य, य मक्क्रा कृष्ट्रम कृष्टित, व नमूद्ध बीन जानित्त, व नम्रत्ना नव जानित्त;

এ মেথে বিছাৎ হাসিবে; আবার সংসার স্থলর দেখিব, জগৎফার্ট্যে বৈচিত্রা দেখিব, মন্থর-মুখে দেবজাব দেখিব, স্কলকে
বিশ্বাস করিব, উচ্চ হাসি হাসিব, পৌবের রক্তনীকে ক্র বোর
করিব); আবার হনরবল্প বাজিবে, শৃত্ত হানদ ভরিবে, গহের
আকর্ষণী শক্তি কিরিবে, চক্ষের জল শুকাইবে, অন্তরের খাস
নিলাইবে, ছঃখলর্কারী পোহাইবে—বেশ, ত, ভূলি না কেন ?
ভূলিব কি ? ভূলিব কি ? না, ছেইল না, সারিলাম না ভার বি
করিব ? মন মানিল না। স্থলর বুঝিল না, বুক বাধিতে পারিলাম
না—কি করিব,নাচার। দিবানিশি তাহাকে ভাবিষা ভাবিনা এখন
ভন্মর হইরা উঠিয়াছি। এখন ঐ স্থতিই আমার জীবন—উহা
ভূদিলে থাকিব কি লইয়া ? শৃত্ত হ্বর অংগক্ষা যন্ত্রণা ভাল।

বলিতে সক্ষা করে, কিন্তু, এত জালাবস্থা সহ করিবা, এমন করিয়া সরমে শরিষাও বে সেই মাতিমূলে পড়িয়া পাকি—
আন্চান করি, ছট্ দট্ করি, কাদি, তরু যে সেই জলস্ত কালা
থকে করিয়া রাখি, তাহার মধ্যে একটু বার্থপরতা আছে। বিদয়ে
সে থাকিলে, ক্লয় বেশ্ পবিত্র থাকে। যে গৃহে সে অভিথি,
সে গৃহে কাঠিছা বার্কণ্ড কিছু দাঁড়াইতে পায় না। সে মধ্যে
থাকিলে—সে মনহাড়া কথন্ ? সে মনে থাকিলে, গেন বিনা
আয়াসে, পদরত হাসিতে হাসিতে পারি, পরের কারায় কাঁদিজে
শার—মেন জাপনা আপনি আপনাকে ভূলিয়া যাই; বেশ্
বেন অন্তব্য করি বে, পরকে মধী করিবার জছাই এ মহ্যাল্য।
হলম প্রিয়া যায় বটে, কিছু না পুড়িলে অপ্রিত্তা দ্রাহইবে
কেমন ক্রিয়া ? না পোড়াইলে স্থব্ও খাটি হয় না। লোকমৃথ্ব বা আক্রিকে সহ্লয়তা জ্বিবে কেমন করিয়া ? শীকায়

করিয়াছি ত, একটু সার্থপরতা আছে। সে আমার ধর্মের রন্ধন। তাহাকে মন হইতে দ্র করিলে, ধর্মের বন্ধন ছিড়িয়া যাইবে। আনি একদরে মুখ কদরে না থাকিবে ধর্মগ্রন্থি শিথিল হইরা যায়। অন্ত কোন জীলোক একদরে স্থান পার না;—রীলোকের কথা ভাবিলেই, আমনি সে আনিয়া সমস্ত হৃদ্দটুকু জুড়িয়া দাঁড়ায়। ভাহাতেই বলি, তাহাকে ভ্লিলে ধর্মের পথে হির হইয়া চলিতে পারিব না— আন্থবিসর্জনটা কেবল কথার কথা হইয়া দাঁড়াইবে। কাগজে কলমে নিংম্বার্থ পরহিত্তরতের অনেক কথা লিবিতে পারিলেও পারিতে পারি, কিন্ত এখন যেমন অন্তরের পরতে প্রতে ভাহা অনুভব করি, তেমনটি আর পাকিবে না।

সে দিন ঘণন সেই ভোগস্পাহাশ্র সংসারত্যাণী বোণীপুরুষ বিশিলেন, "জাঁলোককে কালভুঞ্জী ভানিনা, তাহার পথের দ্রে থাকিও; যদি ধর্মে মন থাকে, প্রাসঞ্জয়ে অভিলাধ থাকে, তবে কথন রমণীর মুধ দেখিও না—তথন আমি, মুথ ফুটিয়া কিছু বিলাম না বটে, কিছু মনে মনে হাদিলাম। পাছে সে মনে বাথা পায়, এই জন্ম তাহার কথার আগতি করিলাম না, কিছু মনে মনে হাদিলাম। হা কঞা। প্রবিশ্বনের পাছে বাহাত হয়, এই ভয়ে রমণীর মুধ দেখিবে না হ হা ক্যা রম্পার প্রাণাত বাহাত ক্যান মুধ দেখিবে না, ত ব্যাহাত ক্যান ক্যান ক্ষান্ত ক্যান ক্যান ক্ষান্ত ক্যান ক্যান ক্ষান্ত ক্যান ক্যান

ভক্তিপ্ৰতি কি-নহিফুতা কি-আগুবিদৰ্জন কি-নি:খাৰ্ र्धागवामा वि १ ७ मूर्थ मिदिन ना उ स्नित्व तकमन कतिया, नक्तकानत्न त्र कृत कृत्हे, त्र दक्षन कृत-जाशादिशाद देव গাম, দে কেমন সংগীত—দেবতারা দে আমাদিগকে ছেছ করেম. त्म दिवसन दिव**—अनेख दिवर, अनेख दिवस क**शिक वरन ? क পাপ বংশারে, রমণীর মুখ ব্যতীত, আর দেখিবার উপতৃক্ত কি আছে ? রমণীর কণ্ঠশব্দ বাতীত, শুনিবার উপযুক্ত আর কি আছে ? धर्मिकार वक, त्रमीद्यपत्तत कात्र कार कार कर ब्रांट्ड १

ও কি ও শশি, মেধের আড়াল হইতে অক্তাৎ বাহির হইলা डेक शिन शिनिएडइ स वर्ष १ कि विनएडइ १ विथा उर्था १ भूरवत्र भागत ? भूरवत्र देव कि ; नकुता अख:शूत्रवंका मात्रीयर कतिता बाब क्वन ? नानीइल नानीएक नमग्र ब्लाइ, नानीइल অভুপরিবর্তনের কমতা আছে, দাদীরও বিবয়বিশেবে নৃস্পূর্ণ श्रारीनका चारकः; किन्न व्यारगत दर व्यान, जीवरनन दर जीवन, धर्म देव रक्षन, मःशाद्य देव भाष्टिनिटक्छन, शुरू देव काक्ष्य भक्ति-जात मानीत्वत नमजानमत नारे, जात मानीत्व अञ्चलित বৰ্তন নাই, তার কোন বাধীনতা নাই। সে আমিতে গুনাইছে দাসী, সে উঠিতে বসিতে দাসী, সে চলিতে ফিরিতে দাসী, বে रोविस्क केलिएक रागी, त्म क्रकिनकाम मानी, त्म क्रमदेव यप्न वागी। छाद मानीत्यत त्याचन नाडे कात्र मानीत्यत भगा और, जार मानीएकर वानश्मा मारे। े जार्क मक देखा পোষ্ঠাইতে পার, বে অপমান ইচ্ছা করিতে পার, অতি জয়ত্ত ইজিম্পালনা চরিভার্থের উপক্রণশাত করিছা রাখিতে পার্

অপরের জীড়ার পুতুল হওয়ার ভাষ, বে অভ্যাচারী তাহারই বিশাস্পান্থী হওয়ার স্থায় অধঃপাত আর কি আছে 💡 তাহারাও মার্য, তোমরাও মাত্র—তাহাদের উপর এ আধিপতা তোমা-দিগকে কে দিল ? শরীরের উপর অভ্যানার অধর্ম ৷ ইক্তিয়ের উপর অত্যাচার ভতে।ধিক অংশ। কিন্তু দ্ধান্ত্রের উপর অত্যা-চারের স্থায় অংশ জগতে নাই। তোমরা কিসের উপর অভ্যা-চার না কর ? তোমরা, আপনাদের জ্ঞা সহত্র ব্যান রাখিয়া, कारामित्र नर्वत्र, अक वृद्धन रहान दाविहा माछ। देव नील क्षित्र মুহুর্তে নিবিতে পারে, যে দীহার বিন্দু প্রতি স্থারশিতে শুকা-ইতে পারে, বে দতা প্রতিপদে হিড়িতে পারে, বে ক্সম প্রতি बाध्डिम्बाल रुख्यां श्हेर्ड भार्य, त्र हेन्र्यत् श्रीड भन्तर মিণাহতে পারে, বে শৃত্তপ্রকিপ্ত প্রস্তর্যত প্রতিকাশ মৃত্তিকাশাৎ ছইতে পারে, যে জলবুৰুদ কথার কথার জল হইয়া নাইতে পালে, ভাছার দক্ষে ভাহাদের দর্বার বাধিয়া দাও। তোমাদের এক বন্ধন ছিড়ে, সহস্র বন্ধন থাকে। তাহাদের একটিমাত্র বন্ধন ; সেইটি ছিড়িলেই স্ব কুরাইল। সকল অর্থের বে সার, তার এই চ্পশা— ভোনাদের বুধের আদের নয় ? তার পিডামাতা নাই ভার छदि उच्च नाष्टे, विक्रभट कांत्र सामी देन दक्क नारे। दा दिन বিবাহ হইল, সেই মিন তার মনের সকল নদী বামিনারার गंबिड रहेन;-वानीरे शिटामाण, वानीरे छाँदेवन, वानीरे शानकाम, पामिते मुर्नाय, यामीहे हेरलाक-शरलाक, श्रामीहे ठेडूर्सर्ग ्र शामिलारमामकणानरे जात धारान कर्य, शामित्रवन-দেবাই তার পরম ধর্ম, খামিদ্ধমণ্ডল তার সংসারদার্থিকর क्यमी, चार्मिक्यभावविक छाउ कंदनानतात रक्ता । जूनि केहिरीन

গদাদাত কর, সে বেশ—সে তোমার প্রতি বিরক্ত হইলেই। নরকে যাইবে। কেন এত অভ্যাচার । কেবল কথার ভাল-বাসা নর । এ স্থবসৌন্দর্যপূর্ণ সংসার সে দেবিতে পাইবে না কেন। যাহা করিতে ভাল লাগে, ভাহা করিতে পাইবে না কেন।

কথা কি জান, সকল বিষয়েরই ছই পার্শ আছে। কিছুই একেবারে ভাল নহে—আলোকেও ছারা আছে; কিছুই একেবারে মন্দ নহে—শোক হইডে সহুদরতা জন্ম। এ কেবল এক পার্শ দেখান হইল। জন্ই রাট মিলুও কেবল এক পার্শ দেখান হইল। জন্ই রাট মিলুও কেবল এক পার্শ দেখান হইল। জন্ই রাট মিলুও কেবল এক পার্শ দেখার শক্তির পরিচয় থাকিলেও, সন্দেহ দুর হর না। ইহার জন্ত পার্শও আছে। নমাজপদ্ধতি জন্মারে ভাহারা দাসী বটে, কিন্ত প্রকৃতি পক্ষে, সভ্য কথা বল দেখি, তাহারা আমাদের দাসী, না আমরা ভাহাদের দাস ? ফল কথা, বেখানে ভালবাসা আছে, সেখানে পরস্পরে প্রস্পরের বাস, পরস্পরে পরস্পরের প্রভ্

"তুমি সে ভাষের সরবস ধন, ভাষ সে ভোষার প্রাণ।"

ক্ষী এবং স্বামীর এই প্রকৃত সমন। আর—মুখনোন্দ্যাপুর্থ সংসার দেখিতে পাইবে না কেন ? হা অদৃষ্ট! সংসার মুনোন্দ্যাপুর্গ হইলে দেখাইতে কে না চাহিত ? তাহা সম বলিয়াইত দেখিতে দি না। সংসার ফুখনদ্যাতামুক্ত শেকি ভালপুর, প্রব্দনাপ্রভারনাপুর্গ বলিয়াইকে দেখিতে দি না। ভাহারা বাহাতে ভাল থাকে, ভাহতে কি আমাদের অসাধ ?

^{*} Mill's Subjection of Women.

ाःगात्त्रत छ्व हहेट्छ धतिवा वाचि, এ हेव्हा कामात्वत नव। व्यामा-दमत वामना, मःभादतन छः व इहेटल व्यख्दत नाथि। यांगीन हरेना কি মুখী হইবে ? আমরা যে দিবারাত্রি বুকে করিয়া পাথি, ভাহার অপেকা কি সংগার ভাল ? আমরা যে মুথে বাম দেখিলে मण पिक अकवात एथि, मूच मिन इटेटम माथाम आकाम ভাঙ্গিরা পড়ে, চকে জল দেখিলে, তাহা মুছাইবার কম্ম প্রাণ দিতে পারি-সংসারে কি ইহার অধিক আদর পাইবে? এ স্বার্থপর সংসারে ও কাঁচা মুখধানির পানে কে তাকাইবে? মনে অভিনাবের উন্ন হইতে না হইতে কে দে অভিনার পুরাইবার अंक বাাকুল হইবে? গৃহসরোবরে, মেহসলিলে, অদেরপবনে, সোহাগের বাদাম তুলিয়া, মাধুর্যার ধ্বজা উড়া-ইয়া, যে প্রমোদতরণী নাচিয়া বেড়ায়, সেই ক্ষুপ্রপ্রাণ ভরণী, मःनात्रमरामाशत्त्र উভागज्यस्मानाम्बून कठण क्रमतानित , উপর শোক-তাপ-ছঃখ-নৈরাঞ-প্রব**শ-বাত্যা-সভা**ড়িত **হই**য়া वित्नां जिल दहेरन, तम कि छान ? य विषम अनतम आसता भारतिंग मार्च मार्च श्रीफ़िकि, तारे भारत वह नवनीत श्रुत পুড়িবে, দে কি ভাল ? যে চরণে কাঁটা ফুটিলে বুকে লেল বিধে; যাহাকে বুকের ভিতর, বুক ঢাকা দিয়া রাখিয়াও, পাছে ব্যথা পার विनश अर्थ मति, जेठिरक वनित्क नश्यवात हकू हास्त्रि। द्वारि, द्वार्थ पुर्तिगरी प्रकृमात्रका हिश्नाद्वनक्षीय क्रिष्ठ १६८न, बालाव्यनीय वाङ्ग रहेटर्-थान धतिया कि हेरा दावा गाय १ कायका वित्र তাहाटि इ:य नाहे, जानदा मश्माद्रणहरू हथ हहे, छोहारे हैं। नार्ड,-- डाशात्रा स्टाब बाक्। छाशासत्र स्टाबत जानकी, कामना माणोह रहिया वानिया निय-वामका वाकित्छ, छाराबा कार

मह कृतित्व दक्त ? अन्न त्व जागाउन रहे, এउ त्व कृत्यं जान कति, किहुरे छ मन् थारक मा- धरे होनम्थ मिथल नव जुनिक ষাই। পাশ্চাত্য সভ্যতাকে নমন্বার করি, আমেরিকার দৃষ্টান্তকে সাষ্টাঙ্গ প্রণিশাত করি, আমরা কিন্ত জ্ঞারের নিধি হৃদরেই वाथिव। श्वन्दव त्राथिव, शांत्रिटक मिथित शांतिव, कांतिटक एमिश्ल काँपिय-जारांत्र श्रीतिमात्न, त्क्रिय श्रहे मुस्थानि मिथित । यथन द्वांत्रात्माककः । जातियां चांक्नि कवित्त, ज्यन ওই মুখথানি দেখিব। বধন কোমণ আকাশে তুমি উঠিয়া, সাঞ্চিকার মতন এমনই দৌন্দর্য্য ছড়াইবে, তথন তোমাকে **८मिथा, अक्वात ७६ मूथ्यानि छाहिया (मर्थिय । यथन मः मार्याद्रव** कमर्याजा त्मिश्वा त्मिश्वा हत्क मूल विधित, ज्थन अकवात खरे मूबलात्म हारिया हक् क्लारेया नरेत। यथन वानाञ्चनच সকল আবার জাগিয়া উঠিবে, বালাঞীভার সলীদিগকে মনে সকল সমবেত দেখিব। মধন পরলোকের চিন্তা আদিয়া উদর हरेत, ज्वन जानात अहे मूबवानि दिविद्रा जतमा दीवित। वसन প্রহঃবে কাতর ত্ইরা ওই চক্ষে অঞ্বিশু দেখা দিবে, তথ্ন **একবার ওই মুখ্যানি দেখিরা মন্তব্যের মহত্ব শিবিব। আর** यथम अवस्मत्री, ভाक्तश्रीजिमत्री, देवर्गमहिक् जामत्री, द्वानीत्र ক্রশন্তার শিক্ষে ব্লিয়া, পরের জন্ত আপনাকে ভূলিয়া বাইত্তে ज्यम कार्यात्र अहे मूथ्यामि ठाहिमा मिथिना निक्रा व जानवामात्र क्रिएम् बहेव। देशंत अधिक अधिका जीत हारि ना। देशंत জধিক স্থৰ আৰু কি আছে ? এখন পবিত্ৰ নিধিকে বে বিশাসের। উপকরণ মনে করে, রমণীকে ব্র ক্ষত পশুরুতি চরিতার্থেয়

श्रुनीयश्री गांव विश्वा चारन, दव बूर्व, त्व बीह, त्त्र मश्रुवानात्मव क्रमह, त्म महाकाद निमाह। किन्द मन्ध्रम, त्नामार कार्क कि वनिय मत्न कवित्रा जानित्राहिनाम, जूनिया निगाहि। ७३ उ জালা! দিবানিশি ভোর করিয়া রাখিয়াছে। আমার মন, কি कानि कि जानत्म, कि कानि कि इश्र्य, कि कानि कि जारगात. চিস্তাতরদিণীতে সাঁতার দিতে পারে না ত, কেবল প্রোতে গা छानिया छानिया यात्र । कि स्नानि दक्तन ठाँमहे त्य क्षमग्राकाटन উঠে, সেই দিকে একদুঠে চাহিয়া, হাত পা ছাড়িয়া দিয়া ভাদিয়া বার। ভাদিতে ভাদিতে কতদুর চলিয়া বার, তথন আমি আবার আমার মন পানে, একমনে চাহিয়া থাকি। মনে হয়, विश्व हाजांदेगाम । त्यांथ इत्, शंग शंग । मत्मत्र जेभज चय, তাহাত অনেক দিন গিয়াছে; অধিকারটুকু আছে, তাও বা हाताहेगाम । खेक मध्माद्यत हू । विभिन्न हात्राहेश गांत । अछि যত্তে রাখিলেও জিনিব হারাইরা বার। চক্ষে চক্ষে রাখিলেও জিনিব হারাইয়া বাম। বুকে করিয়া রাখিলেও জিনিব ছারাইয়া ঘার। আরার এ হুর্গন অরগো—এ গভীর সমূত্রে জিনিব হার। ्हेरन, फ्रांहांत (थाकहे रव ना । यथन ध मरमात्रक्षवाटम ब्यानिया-ছিলান, তব্ন জননী প্রকৃতি, কত কি সংখ দিয়াছিলেন— সর্গতা, সহত্ব প্রস্থাতা, হিভিন্থাপক্তা, উৎসাহ, বিশ্ব্যাপিনী प्रामा नीनामग्री कंगना । ध्ववारन नाट्य श्रःच नार विनया केंछ ; थरपत्र मानिकी-अल्ब वीविद्या विद्याहितान । ता नव द्यांबाहिता र्शन- এक थक कविकास अदिवास गर रशन-न्या सूत्रा-वेल। नव यात्र, किहूर छ शांदक ना-कितिया बाहेबात जुनत ८क्षण ध्यानगणनात्र काहिनी गहेश गहे। स्थानन, हुमि मा

কি হানবের পিতা ? কিন্তু সম্ভানের জন্য পিতার যে বেছ, তাছা তোমার কট ? জগৎসংসারে এত ছঃখ দিয়াছ কেন ? বিরহখাস দিয়া মানৰধ্বদন্ত গড়িয়াছ কেন ? কেবল রোদনের অভিনয় করি-বার জন্য আমাদিগকে এ রক্ত্মিতে পাঠাইয়াছ কেন ? তুমি দয়াময়। তুমি ইচ্ছাময়। তুমি সর্বশক্তিমানু। অন্যে কি ভাবে, कानि ना ; किन्ह चामि देश द्विएड शादि ना । तथा. हेळा. मंख्रि -তবে সংসারে ছ:খ কেন ? সংসারে যে ছ:খ আছে, তাহা ভ আর কেহ অধীকার করিবে না, স্থতরাং ও তিন্টী কথাই ভূল। তিনি দয়ামর হটলে, আমরা যখন ছাবের ভারে মরিয়া যাই, ज्यन व्यवश्र व्यामात्मत्र वृःश्वित्मात्रतत्र हेक्श कतित्वन-नजुना আর দরা কি ? হ: शीत ছ: श्विरमाठत्नत्र हेळाहे मता। त्म ইন্ডার প্রতিরোধ না থাকিলে অবক্র তাহা কার্য্যে পরিণত ছইবে। ঈশবের ইচ্ছার কোন প্রতিবন্ধক থাকিতে পারে না, মতরাং তাঁহার ইচ্ছা অবল্ঞ কার্য্যে পরিণত হইবে। তাহা হয় না, নহুষোর হঃথ ঘুচে না, যে যাহার ভিখারী, সে ভাহা পাঁছ ना, जाहाटकर विन, जिनि त्म हेक्स करवन ना। जिनि किरमंत्र नशामश ? जात विन जाशांत्र देव्हानत्वक जामात्नत्र क्रःच मृत मा হয়, তবে তিনি কিগের ইচ্ছামর ? কিলের সর্কাশক্তিমান ? কিছ कि विगर्छिष्टिमाम, जुनिया त्रियाहि-

জিনিব, হারাইয়া বায়। হারাইলামই ত বটে। ক্রিক্টিক একেবারে বিস্থাহন না। কিছুরই ও ধ্রুম নাই। এ বিশ্বে আজি বাহা উপস্থিত আছে, ভাষা চিরকালই ছিল। এক পর্মানুর নুমাধিকা নাই—কেবল সংঘোষের বিরেক্ষাত্র— কেবল সক্তর ছুটিয়া হায়। হার হোঁ। সহজ ছুটিয়া বাস কেন্দ্র বরি ত একেবারে বার না কেন ? তাহার পর আবার অন্যাপদন হর কেন ? স্ববের দলে সহক ছুটিরা যার, আবার ত্থের সলে সম্বন্ধ হয় কেন ? ঐ সজে সকল সম্বন্ধ মিটিলেই ত ভাল হয়।

পূর্বিমার শশি, আর এক দিন-এখন সে দিন নাই, আর कथन ए इटेर्ट, त्र जामां अनारे—वहिमन रहेन, जांत এक मिन, মুক্তবাতারনপথে এমনই হাসিরা হাসিরা, ইহার অপেকা সহল-গুণ সৌন্দর্য্য ফুটাইয়া ঘরময় পড়িরাছিলে, আমার শরীরময় পড়িয়াছিলে, আনার প্রাণমর পড়িয়াছিলে। আর কিছুতে কি পড় নাই ? তবে অত স্থলর, অত শীতল, অত প্রেমনয়, অত প্ৰিত্ৰতাময় লাগিয়াছিলে কেন ৭ আর বত হঃখ পাক, তৰন একা নই। ভোমার হাসি বে বেশু মধুর, এ কথা ক্রাইবার শোক ছিল। তোমাকে দেখিতে দেখিতে, যাহার দিকে চাহিয়া ভোমাকে ভুলিয়া বাইতাম, সে এখন নাই। আজি আমি এক। এ জগৎসংসারে আর আমার জুড়াইবার স্থান নাই। এক জনের অভাবে সব অন্ধকার হইরা গিরাছে। সেই এক निन, आब धरे धक मिन। हैं होतह गाना कछ कि हरेश राजा। ঈশবের দ্যার বালাই লইয়া মরি।—কত কোমল জদর ব্যথিত हरेंग, क्ष कूत्रक्महरम अल वितिन, क्ष विवाधन एकारेश जितिन, कछ कीरन अक्षकांत्र बहेगा, कछ क्षमा भूगा ६६ना, कछ कांग्यां मिविशा शिन, कड नक्त काम्य करेन, कड हैन-ভোমার অপেন হত ভাৰ চাদ অভমিত হইল, কই আৰু উঠিল मा। पूनि हीन, बाब, बारेन : आवाद वाल, बानात केरिन। व्यामारमत सम्मानारमय वीकः यात्र-भारमत गर्यन यात्र-व्याप कितिमा चारेरम ना। और महुत मगरम, धानावित्क, धक्रवान

এসো এপথি রে। এই মধুর জ্যোৎসার উপর মধুরতর জ্যোৎসা क्रोंहेग्रा, চক्क्त चार्श এक्दांत मैं। इनि त्त : त्मरें त হাসি, অধর হইতে পলাইয়া গিয়া নয়নপ্রান্তে লুকাইভ, সেই च्यनज्ञान हानि अकवात हान लिबि तत। त्रहे त्य कर्शकानि, যাহার প্রত্যেক-শব্দ-প্রবৃত্তিত-বায়ু-তর্ম কর্ণবিবর দিয়া প্রবেশ ক্রিয়া হন্ত্রের ভিতর ইওলার বীনা বাজাইয়া দিজ. সেই কল कर्छ अकरात कथा कंड एमि तत । रमहे दा मृष्टि, शहांत्र रामिसी জগংসংসারকে স্থলর করিজ, দেই দৃষ্টিতে, এ দম্ব ক্রয়ের উপর একবার অমৃতবর্ষণ কর দেখি রে। সেই যে লাবণালীলা, সায়াক্রগানের ন্যায় প্রকে প্রকে নুতন নুতন শোভা ধারণ করিত, সেই শোভার এ তাপিত প্রাণ একবার জুড়াও দেখি রে ! এত ভালবাসায় যে বিচ্ছেদ হইবে, ইহা কথ্য মনে ছিল না। তোমা ছাড়া হইয়া যে বাঁচিয়া থাকিতে হইবে, ইছা चरधं बानि ना। किंग्र मनि, मिएव अखताल न्कारेल কেন ? দেখ, আমার জনমাকানে একথানি করাল জলদ দেখা দিয়াছে—কথন বর্বে না, কথন গর্জে না, কেবল অন্নকার করিয়া রহিরাছে। ছঃখ হইলে পৃথিবীর লোক কাঁদে, আমি কাঁদিতে পাই না। চক্ষের ভিতর আখন অগিভেছে, ছ্রয়ের ভিতর আখন विविद्या - धक्विम् वंग नारे । व्याध्यायम उनारेश विश्वाहरी ना कि, कानिएड शाह ना । छाई महिएड देखां स्त्र । द्यागांस **'उल-कृषि जतरक पुरिन्ना मता दव ना ? ' (मरब मूक् आक्रिका तरिर्ह्न** (प ? अहे अनिकृष त्वारमात्र खुव त्मक्ती हत्र ना १ क्रेक्ट्रें ब्यार्थ जल्म वह अनिकृत द्वीपूरी, वह देवनक वात्रव्य (क्रांदिश) आमि वफ **जान** वानि जामात कन्दरत मदन मिहन

ভাষা। কিন্তু শৃশাত্ব, আর কি মূথ খুলিবে না । তবে আর कि जना विभिन्ना थाकि । ध्यम घाँ । ५० यथन मत्नत्र कथा হইল, তথন আর ভুলিব না-জাবার সময় পাইলেই ভোমাকে द्विष्ट व्यानिव । अमनरे मश्टगांगत व्यानिया प्रविश गृहिव। टकरण ठल्कत (पथा—जा ठल्कत (पथाई (पथिता गाँहेव। नकन ইক্রিয়কে চক্ষতে আনিয়া, একবার একবার নরন ভরিয়া দেখিয়া शरित। जामात्र ७ हःधमम् कीत्रान, औ स्थ्य । अमनहे यह প্রদে, এমনই নির্ম্জনে, এমনই গভীর নিশায়, এমনই ভীম নীরবে, এমনই করিয়া একা আদিরা ভোমার দেখিরা ঘাইব। এका जानित, त्कनना छःष शार्थभद्र-दकनना, त्य छःश्री त्न मिर्कन छानवारन। आह रा निम वड़ सन्दर्गाक गांकिरव. সোহাণের বড় বেশী ছড়াছড়ি করিবে, সে দিন ঐ স্থলর মুখ-थानि मिथिएक मिथिएक, मान मान अकवात काँमिया गरिव। রোগনে যে এত হথ, তাহা পূর্বে জানিতাস না। যে না জানে. দে আছে ভাল। জানি না, কত দিনে এ হাধাকার খুচিবে। होत्र ! ध--

"হিয়া দগদ্গি, পরাণ পোড়ানি,

কি দিলে হইবে ভাল।" ইভি চতুৰ্থ প্ৰভাব।



गागाल।

--

✓ धरेशांत कांतिल, नकलारे नमान रवः। পिछछ, मूर्णः धनी, पविछः, स्कारं, क्रिशं स्थारं, विश्वारं स्थारं स्थारं क्रिशं स्थारं स्थार

এইখানে বদিয়া একবার চিন্তা করিতে পারিলে, নহুবামহবের অসারতা ব্রিতে পারি, অহলার চুলীকত হর, আন্তানর
সন্তিপ্ত হয়, সার্থপরতার নীচনা কর্মদ্র করিতে সক্ষম হই।
আজি হউক, কালি হউক, দল বিন পরে হউক, নকলকেই
আলি ইউক, কালি হউক, দল বিন পরে হউক, নকলকেই
আলিয়া এই স্থানমূভিকা হইতে হইবের তে নেলভিত্নীর
বীষ্টা, বে হর্জন অহলার, আর পৃথিবী নাই বলিয়া রোধন
করিহাছিল, ভাহা এই মৃতিকালার ইইরাছে—ভূমি আমি কে?
বে ইক্রট লাখাভিমান, ইউরোপ্তর পভিতম্পনীর কাছে সাহ-

ছারে কর চাহিয়াছিল, * তাহা এই মাটিতে বিলীন হইয়াছে-ভূমি আমি কে ? সে দিন বে চিন্তা শক্তি, ঈশরকে সংকার্যাগাধনে অক্ষম বলিতে সাহস করিল, † ভাহা এই মাটিতে মিশিয়াছে--ভূমি আমি কে ? বে রূপের অনলে টুর পুড়িরাছিল, বে মৌন্দর্য্য-তংক্তে থিপুৰ রাবণবংশ ভাসিম। গিয়াছিল, বে লাবণারজুতে জ্লিবদ দিজর বাঁধা পড়িয়াছিল, যে পবিত্র দৌকুমার্য্যে এ পাপ-कारत कालानन कालिशांहि, तम सम्बद्धी, तम तमरी, तम दिनांब-বতী, সে অনির্বাচনীরা, এই মাটিতে পরিণত হইয়াছে,—তুমি আনি কে ? কর দিনের জন্ত সংসার ? কর দিনের জন্ত জীবন ? এই নদীসদয়ে ছলবিষের স্থায়; যে বাভাসে উঠিল, সেই বাভা-सिर भिनाहेर**ः भारत। आकि रान अहसारत मा**जिया, এक ৰুন ভাতাকে চরণে দলিত করিলাম, কিন্তু কালি এমন দিন আদিতে পারে, যে আমাকে পুগাকরুকুরে পদাবাত করিলেও আমি তাহার প্রতিবিধান করিতে পারিব নাল। কেন অহঙার ? কিলের জন্ত অহড়ার ? এ অনত বিখে, আমি কে-আমি কড টুকু—আমি কি । এই মাটির পতুলে, অহকার শোভা পার না। তাই विविद्धिशाम, এই दान महत छिठिता नकन अहदात-বিলার অহকার, প্রভূত্তর সহকার, ধনের সহকার, দৌন্দব্যের অহদাব, বুদ্ধির অহদার, প্রতিভার অহদার, ক্ষতার অস্কার, प्रहरूरियम प्रहर्शन-भक्त प्रहरूकि हुन **हरे**शे यात्र। व्यान त्मरे विन, अन्त, अनिहार्या-नगारेया तका नारे। दा जीक-त्यहे नचन रमन, जादानद खाद, सदन इत्त अवाकृषि निर्देशन

^{*} See Lewes's History of Philosophy. Auguste Counter

See J. S. Mill's Three Essays on Religion.

कति हैं, मूर्यत श्रीम लोखनशाल किन्छ। जीर्यालो किन्छिन, जिनि अलाँहेटल शांतिकान ना। अनिशांकि अली देवया नाहें — केबदात हरक मकरनहें ममान। अर्थ कि, लोहा जीनि मां— कथन किन नाहे, इस क कथन किन्छना। किन्छ भागानकृषित और डिशक्त, कीन्छ। अ श्रीन भर्यत्र जार्यकां ने ने अ

আর স্বার্থপরতা, ভাহারও কুদ্রহ অসুমিত হয়। স্থুবে, ष्मीम अनवाभि व्यनस्थावाद्य ,व्यवादिक इरेटकः। भरकान, বিপুলা ধরিত্রী পড়িয়া বহিয়াছে। মতকেপিরি ক্রানত আকাশ বিস্তুত রহিয়াছে। তাহাতে অসংখ্য দৌরমণ্ডল, **অস্তুর্নীয়** নাক্ষত্রিক জগৎ, নাচিয়া বেড়াইতেছে; সংখ্যাতীত ধুর্মধি ছুটাছুটা করিতেছে। ভিতরে, অনম্ভ ছঃপরাশি, কুরুদাগরবৎ, मनमञ्च माञ्ययः, ज्निरङहा स विरू पृष्टि किता १, रम्हे বিকেই খনত-আমি কত কুল-কত দামান্ত ? এই দামান্তের, এই কুরের, এই কুরাদপিকুরতারের অন্ত এত আলাস, এত যতু, এড গোল, এড বিভাট, এড পাপ !-বড় লজার কণা। সেই क्टार रुख कतियां रा कीयन अভिवाहिङ हहेन, छोहात महन्द কোথার ? কিন্ত তুমি, আমি কুল হইলেও, মানবলাতি কুজ নতে। একটি একটি মহব্য শইয়াই মহব্যজাতি, স্বীকার করি; क्षि जार्रिमां करें महर। दिन् दिन वाहि गरेश गुरुक करी। क्या बाल बहेश स्मन, त्वयू त्वयू बाल्का नहेश मक्छ्म; क्ष क्ष नक्य नदेश हात्रानेथ ; नत्रमान् नदेश व अनक विश्व ! व्यक्षारे पर्य-मस्यादाणि प्रदेश। यह वार्या आवानमर्गत ं क्यों महत्र चारह। त्रीकांत कृति, राजिमारकत छात्र चाकि-

মাত্রেরও ধবংস আছে। এরপ প্রমাণ আছে দে, এ কাল নির্মান্ত আনক প্রাচীন জাতি পৃথিবী হইতে লগু ইইয়াছে এবং আনক নৃতন জাতির আবিজ্ঞাব হইয়াছে। কিছু ভারতে আমার ক্ষতি কি ? বে দিন মহযাজাতির লোপ ইইবে, সে দিন আমিও তাহা দেখিতে থাকিব না, কেননা আমিও মহযা—মহ্যাজাতির অন্তর্গত। কিছু কি বে বলিতেছিলাম, ভুলিয়া গিয়াছি—

এইখানে জাসিয়া সকল জিনিবের সমাধি হয়। ভাল, মলা, নং, অনং, সব এই পথ দিয়া সংসার পরিত্যাগ করিয়া বায়। এ হথের স্থান। এইখানে শরন করিছে পারিলে শোকভাগ যায়, জালাযাল্লগা ক্রায়, সকল ছংগ দ্র হয়—আধ্যাত্মিক, আধি-ভৌতিক, আধিনৈবিক, সকল ছংগ দ্র হয় *। আবার ভাগ বলি, এ ছংগের স্থান। এইখানে বে আগুন জলে, ভালা এ জল্মে নিবে না। ভাহতে মৌল্ব্যা পোড়ে, প্রেমী পোড়ে, সরলভা শোড়ে, ব্রীড়া পোড়ে, কোমলতা পোড়ে, পবিক্রভা

^{*} ত্বংগ জিবিধ;—আধ্যাত্মিক, আধিতোতিক, আধিলৈ দিক। আধ্যাভিক ত্বংগ জাবার ছই ভাগে বিভক্ত;—লারীর এবং মানস। বাতপিতলেখার বৈষম্য নিমিত বে চুংগ (মোগাছি) তাহার লাম শারীর হুংগ।
কার, জোগ, লোভ, লোহ, ইর্বা, বিষাধ এবং বিষয়বিশেষের উনির্জ্ব নিব্দ কার, জোগ, লোভ, লোহ, ইর্বা, বিষাধ এবং বিষয়বিশেষের উনির্জ্ব নিব্দ কার, জোগ, লাভার নাম বার্লাস হুলে। উত্তর ক্লেনীরই এ সক্ষম ছুংগ আভ্যাভাগি হেতুসর্ভুত্ব বুলিরা, ইহাদিবের নাম আবাহান্তিক ছুংগ। বাহ হেতু
সায়ত্ব চংগত বিষয় —আবিভোতিক এবং আবিদৈবিক। সহন্ত, গভ,
গক্ষা, সাহিত্যা; এবং হাবর নিবিত্ত বে হুংগ ভাষাই আবিভোতিক। বন্ধ,
রাজন, বিনাচক এবং একাবেশ নিবক্ষম বে হুংগ, ভাষার নাম আবিদ্যানিক
ছুংগ।—সাংগ্যত্যকামুদি।

পোর্ভি, বাহা পুড়িবার নর, ভাহাও পোড়ে—আর তার সলৈ
সঙ্গে অপরের আশা, উৎসাহ, প্রফুরতা, স্থপ, উচ্চাভিলাধ,
মারা, সব পুথ হর। তাই বলি, এছান অথেরও বটে, গৃঃধেরও
ঘটে—যে চলিয়া বায়, তার স্থপ, যে পড়িয়া থাকে, তার হঃখ।
এ সংসারেরই ঐ নিয়ম—সবই ভাল, সবই মলা। কুর্মে
সৌরভ আছে, কণ্টকও আছে; মধুছে মিইচা আছে, তীরতাও
আছে; স্থারশিতে প্রশুরতা আছে, রোগজননপ্রবণতাও
আছে ক; রমণীর চক্ষে সৌন্র্যা আছে, সর্বনাশও আছে;
রমণীশ্রদ্ধে ভালবাসা আছে, প্রতারণাও আছে; ধনে ক্ষমতা
বৃদ্ধি করে, বৌননির্কাচনের প্রতিব্যক্তাও করে । জগতে

* Sunstroke. See Tanner's Practice of Medicine. Vol. I. Page 375.

t The Grecian poet, Theognis, who lived 550 B. C. clearly saw, that wealth often checks the proper action of sexual selection, He thus writes:—

"But, in the daily matches that we make,
The price is everything: for money's sake,
Men marry: women are in marriage given;
The churl or ruffian, that in wealth has thriven,
May match his offspring with the proudest race:
Thus everything is mixed, noble and base!
If then in outward manner, form, and mind,
You find us a degraded, motley kind,
Wonder no more, my friend! the cause is plain.

And to lament the consequence is vain."

See Darwin's Descent of Man, Part I. Chap. II.

Also Part III. Chap. XX. १ द्योननियाच्य,—Sexual Selection. কোথাও নির্দোষ কিছু দেখিতে পাইবে না। সকলই ভাল
মল মিশ্রিত। স্থতরাং প্রকৃতি দেখিয়া বতদ্র ব্রিতে পারি,
ভাহাতে বোধ হয় বে, এই পরিদৃশুমান বিষের বে আদিকারণ,
নেও ভালতে মলতে মিশ্রিত; অথবা ছুইটি শক্তি হইতে এ জগৎ
সমুৎপন্ন—সেই শক্তির, একটি ভাল, একটি মল; একটি
লেছ, একটি ঘণা; একটি অনুরাগ, একটি বিরাগ; একটি
আহ্রণ, অপরটি প্রতিক্রেপ *। কিন্তু, কি বলিতে বলিতে, কি
বলিতেছি—

এই বে সংসার, ইহা এক মহাক্ষণান। চিরপ্রবহ্নান কাল্যােতঃ, দিনে দিনে, দণ্ডে দণ্ডে, মৃহর্জে মৃহর্জে, পলকে শন্তঃ, স্ব ভাসাইরা লইরা গিয়া বিশ্বতির গর্ডে কেলিতেছে। পুর্যুহুর্জে বাহা দেবিয়াছি, উপস্থিত মৃহর্জে আর ভাহা নাই—প্রাপ্তরে বাহা দেবিয়াছি, উপস্থিত মৃহর্জে আর ভাহা নাই—প্রাণি দিলেও আর ফিরিয়া আদিবে না। এইক্লে যাহা রহিরাছে, পরক্লে আর ছাহা থাকিবে না—অবিশ সংসার প্রতিরাছে, পরক্লে আর ছাহা থাকিবে না। কোবায় যাইবে, কোবার বায়, তাহা ভূমিও বভদুর জান, আমিও ভতদুর জানি এবং ভূমি আমি বাহা আনি, ভাহার অবিক কেহই জানে না। সবই যায়, কিছুই থাকে না—খাকে কেবল ক্রীরি। কীর্তি অক্তর। কালিবাস গিরাছেন, শতুরুলা আছে। সেক্সনীয়ের গিরাছেন, হার্লেট জাছে। ওয়ানিটেন বিরাছেন, আমেরিকার বাবীনভাধেনা আলও উভিত্তেছে। কসো বিরাছেন,

^{*} Attraction and Registance of matter. This theory originted with Laplace; it has chess expounded by Haplace; Spencer.

সামের ছক্কভিনাদ আৰও পৃথিবী ভরিষা বোবিত হইভেছে!
কীর্ত্তি থাকে। অকীর্ত্তিও থাকে। ক্লাইব গিয়াছেন, ভারতের
অঞ্চপ্রবাহ বহিতেছে। লর্ড নর্যক্রক বাবেন, কিন্তু মন্দ্রী রাণীর
চক্ষের অল শুকাইবে না, বরদার ছথেখাস মিলাহবে না।
অকীর্ত্তিও থাকে। লোকের ভাল, লোকের মন্দ, লোকের সঙ্গে
চলিয়া যায়; কীর্ত্তি এবং অকীর্ত্তি জগতে বিচরণ করিতে থাকে।
ওয়াসিংটনের খদেশাহরাগ ভাঁহার সঙ্গে চলিয়া গিয়াছে। সেয়পীয়রের চরিত্রদোষও ভাঁহার সঙ্গে চলিয়া গিয়াছে। কেক-

* M. Villemain says: -"Pevery year, it is stated, he went during the summer to spend some of his time at Stratford, with his wife, and children, and his aged father. The post's taste for the beauties of nature. Lis vivid impression of the green landscapes of England, would alone indicate that he was in the habit of seeking rural repose. In his own time, however, another motive was attributed for these frequent voyages; it has been stated that, upon the road to his native place, he was foud of stopping at the Crown in Oxford, the histess of which, remarkable for her elegance and beauty. became the mother of the poet Davenant. Shakespoore, who was an intimate quest, was godfather to this child, who was said to belong to him by a closer tie, and who subsequently took a singuler pride in boasting of this descent. We are better shie to understand, after this, the zeal of the royalist Daysnant for the republican Milton. It was doubtless in his eyes a double debt of postic parentage. See Alfanse de Lamartine's Biographies and portraits of some Celebrated people.

المين

ভাঁহারা লোকের যে উপকার করিয়াছেন, ভাইার দৌরভ দিন দিন বৃদ্ধি পাইতেছে। তাই বৃদ্ধি

"ভাল মন্দ ছুই, সঙ্গে চলি যায়ব, পর উপকার দে লাভ।"

. ইহাই লগতের সার তত্ত্—ধর্মের মূল ভিত্তি—প্ণাের ত্বর্ণ সোপান। কিন্তু কি বলিভেছিশাম ?—

এই সংসার এক মহাখাশান। যে চিতানল ইহাতে গজিতেছে, তাহাতে না পোড়ে এমন জিনিব নাই। জড়প্রাকৃতি কাহারও মুখ তাকায় না; যাহা সল্পে পড়ে, তাহাই
পোড়াইয়া, সমান জলিতে জলিতে, সমান হাসিতে হাসিতে
চলিয়া যায়। ঐ বে নক্জনিচর অধাককারে অক্যক্ করিতেছে,
ফি সকল এই বিশ্বাপী মহাবহ্নির ফুলিক্সাত্র। এ সংসারে,
কোথার জনল নাই ? নিশাল চল্রিকাব, প্রকৃত্ত মলিকার,
কোকিনের রবে, কুমনের সৌরভে, মূত্র পবনে, পাণীর
ক্জনে, রননীর মুখে, প্রক্রের বুকে—কোথার জনল নাই ?
কিনে মাহার পোড়ে না ? ভালবাস, পুড়িতে হইবে; ক্রালবাসিও মা, তদ্ধিক পুড়িতে হইবে। পুত্রক্তা না হইলে,
শ্লু গৃহ লইয়া পুড়তে হইবে; হইলে, সংসারজ্ঞানার প্রড়িতে
হইবে। শুরু মহায় কেন, সমস্ত জীবই পুড়িতেছে। প্রাকৃতিক

Vol. I. Essay on Shakes fearer See also Richardson's &c. &c. Life of Sir William Davenant.

নির্মাচনে পৃড়িতেছে, যৌননির্মাচনে পৃড়িতেছে, সামাধিক নির্মাচনে পৃড়িতেছে, পরস্পরের অভ্যাচারে পৃড়িতেছে। কে পোড়ে না ? এ সংসারে আসিয়া স্কুত্ব মনে, অক্ষত্ত শরীরে কে গিরাছে ? আবার ছংবের উপর ছংব এই যে, এ পাপ সংসারে সহদয়তা নাই, সহার্ত্তি নাই, করুণা নাই। এই অনন্ত জীবসমূহ, এই মহাবহ্নিতে হাড়ে হাড়ে দগ্ধ হইতেছে;— জড়প্রকৃতি কেবল ব্যক্ত করে মাত্র। শশবরের সদা-হাসি-হাসি মুথে কথন কি বিষাদ-চিহ্ন দেবিয়াছ ? নক্ষত্রাজির সোহাগের মৃছ্ কম্পনে কথন কি ত্রাসরুদ্ধি দেবিয়াছ। কলোলিনীর কলনিনাদে কথন কি স্বর্যাকৃতি দেবিয়াছ ? নবকুস্থমিতা ব্রত্তীর দোলনীতে কথন কি তালভক্ষ দেবিয়াছ ? আমরা পৃড়িতেছি—কিছ ঐ দেব, বৃক্তরাজি করতালি দিরা নাচিতেছে—ঐ শুন, সমীরণ হাসিতেছে—হো—হো—হো—হো

ং হার ! এমন করিয়া আর কত দিন পুড়িব ? কত দিনে এ যরণা মুরাইবে ? আর কখন কি তোষার পাইব না ? আজি হউক, কালি হউক, দশ দিন পরে হউক, জনাজ্ঞান্তরে হউক, মুগদ্গান্তরে হউক—আর কখন কি ভোষার পাইব না ? না পাই, ভুলিতেও কি পাইব না ?

বলৈ মনে একটা বিখাদ আছে যে, যে দিন এই দৈকতশ্বায় শেব নিজায় নিজিত ছইন, সেই দিন হয় ত তাহাকে
ভূলিতে পারিব—হয় ত এ সাল্লাহ্য-সমীরণ থামিবে—হয় ত এ
জনগ নিবিবে—হয় ত ভাহাকে ভূলিব। এইরূপ একটা বিশ্বাস
আছে বলিয়া, সময়ে দময়ে মনিতে সাধ্য হয়। আবার ভাত্ত
বিশ্ব, ভাহাকে ভূলিতে হইবে, ভাহার সজে সময় মিটিবে, এই

ক্লপ বিশাস আছে বলিবাই মরিতে পারি না। এ জন্মের পোধ লে যে চক্লের বাহির হইবাছে, ভাহা ত জানি; কিন্তু অন্তরের অন্তরে ত জাগিতেছে। সে বেধানে আছে, সে স্থান পবিত্র— সে মন্দির সাধ করিবা ভান্ধিব কেন? তাহা কি প্রাণ ধরিবা ভালা যার? সে বতক্ষণ চিন্তার বিষয়, সে বধন আমার এক নাত্র চিন্তা, তথন চিন্তা থাক্। বড় যন্ত্রণা পাই, তা বলিয়া কি করিব? ভাহার জন্ত বদি বন্ধণা সন্থ করিতে না পারিলাম, তবে মন্থাজন্মে বিক্!—এ ছাই ভালবাসায় ধিক্! ধিক্ এ প্রাণে!

হয় ত আবার ভাহাকে পাইব। হয় ত পরলোকে, ভাহাতে আমাতে আবার এক হইব। জাগতিক পরিবর্তন-পারস্পর্য্যে হর ত সেই মাটিতে এই মাটিতে একতে মিশিতে পারে-দেই বর-বপুর পরমাণুর সঙ্গে, এই পোড়া মাটির পরমাণুর मक्छि बर्केट शादत । इरे दिल्द विश्विष्ठ उपकृत्वत शूमः मगराव रहेंबा, मूछन अक मदा रहे इहेट्ड शास्त्र। छाहे विन, পরবোকে তাহাতে আমাতে আবার হর ত এক হইব। বম ভোগানাধ : ভাহাতে আর আমাতে—প্রাণের বে প্রাণ, कीवटनकं देव कीवन, मस्तकं देव नशन, क्षंत्रक देव क्षक, তাহাতে आत आगारठ-नःगारतत्र त क्रक, जीवरनंत त ভেকি, গৃহহর বে আকর্ষনী শক্তি, জানার বে সেই, ভাহাতে चात्र चामाटल—वश्माताकारात्र (व होव, बीवन वक्कूटम त्व क्टानिम्, जनमानात त्र क्रम्यी, बीबानम् नाव तः नाम्नामा, छाराष्ट कांत्र जामाण-गृथिनीत व नात, चर्मत व नमूना, देशमाद्यत त्य मर्त्त्व, संबद्धमारकत त्य ज्याविक, जाशाकः

আর আমাতে—গৃহকুঞের সেই স্বপভা, চিন্তাসরোবরের সেই প্রফুল নগিনী, আশালতার সেই সংগ্রহতক, তাহাতে আর बांगार७-नःमात श्रवारमत राहे स्वरमंत्री मिननी, जीवनमकः ভূমের সেই শীত**ল সরোবর, ভূতভবিষ্যতের অন্ধ**কারের সেই উজ্জন নক্ষত্ৰ, হাদয় কাননের দেই বিকচ কুন্তুম, তাহাতে আর আমাতে—আশায় যে বিখাস, মানায় বে মোহ, ভালবাসায় বে কবিছ, গু:থে যে সাম্বনা, স্থাথে যে সে—বা—তাই, তাহাতে আর আমাতে হয় ও আবার মিলিত হইব। সে মরিয়া মাটি হইরাছে, আমি মরিয়া মাটি হইব; - ছই মাটতে এক হইবে। আমার দেহের প্রমাণুতে, তাহার দেহের প্রমাণুতে সংঘটন ঘটবে। তাহাতে আমাতে এক হইরা এক নৃতন সন্থার अञ्चामत हरेटव । यांश हरेटव, छाहा मन मामञी हरेटल हरेटड शाद्रा, किन्ह कि ऋत्वत्र मिनन ! कि ऋत्वत्र मःचछन ! जानदत्रत সেই আদরিণী, সোহাগের সেই সোহাগিনী, অতীতের ক্ষেলাকাশের সৈই ইজবয়, উপস্থিতের আঁধার গগনের সেই বৌলামিনী—কেমন বুকভরা মিলন! ছই জনে এক হইয়া এক न्जन मचा रहेर--का महिद्ध | कि खरशह समयोत । सीरवह দেহাম্বর প্রাপ্তিতে কোনু মূর্থ সন্দেহ করে ? আত্মার শরীয়-शत्रभावीयकांन अमस्य किरा ? आश्रा कि ? **मही**त्रवस्त्र গতি মাত্র। তাই বনি, শরীরস্থ প্রত্যেক প্রমাণু আত্মা ।।

^{*} হার্নার্ট পোন্ধর বলেদ এবং আহ্নান্ত প্রভাক্ত দেখিতেছি বে, কুত এক বিন্দু বীর্বা হইতে, সন্তান উৎপন্ন হন, এবং দেই বীর্বাবিন্দ্সন্ত্র সন্তান, শিতার বোদ, সিভার প্রকৃতি, পিতার দোক্তণ প্রাপ্ত হয়। সর্ গান্টন,

বিলিষ্ট দৈহবিশেবের অবুর ছারা দেহান্তর স্টের বিচিত্র কি দ মাত্র মরিয়া বৃহা হইতে পারে, তুণ হইতে গারে, প্রস্তর হইতে পারে, মাছ্য হইতে পারে, মক্ষত্র হইতে পারে, প্র হইতে পারে, কীট হইতে পারে। পিথাগোরাস পূর্বজন্ম अबांक हिल्म. हेरा विक्रित कि ? त्व जीक वामांन मारम করিয়া দেশের বাহির হইতে পারে না, তাহার শরীরে একি-मिन व्यथवा त्मकन्मदत्रत्र, निकत 'वथवा शनिवत्मत त्नात्भावतन অংবা ইপামিন ওাদের, ত্রাদিডাস্ অথবা লাইসাভারের, তামের অথবা অর্জনের দেহাংশ থাকিতে পারে। রামের মারীরে, হয়ত কালডেরন অথবা লোপুডি ভেগার, গেটে অথবা শীলারের, পিটার্ক অথবা তাণ্টের, কর্ণেলি অথবা রেসাইনের, সেম্মুপীয়র অথবা কালিদালের, হোমর অথবা বর্জিলের, ব্যাস অথবা वाजीकित जाया चाटह। शारमत त्नर, इत्रष्ठ कानिशत वर्षना মেগলিয়াবেকির বিলিষ্ট দেহের উপকরণে রচিত। এই বে হংসপ্তচ লেখনী, ইহার ভিতর হয় ত তল্টেয়ার অথবা রুসো আছেন। এই মদিপাত্তে হয়ত শাক্যসিংহ অথবা কোমৎ जाह्न। এই इत्रव, याहात जना नानाविक. এই श्रनत्य स्वतः দেই আছে। মতুৰ্য-দেহের আণ্বিক পরিবর্তন প্রতিনয়ত সংঘটিত চইতেছে। প্রত্যেক ব্যক্তি প্রতি সাত বংমরে নব

ভাহার 'Hereditary Genus' নামক পুতকে প্রতিপদ করিবাছেন যে, প্রতিভা পর্যন্ত আমরা পিতার নিকট হইতে প্রাপ্ত হয়, স্বতরাং ইহা বীকার্যা যে ঐ শীহাবিল্তে পিতার মানসিং প্রবং শারীরিক উভয় প্রকৃতিই আছে। যিনি এ পর্যান্ত বীকার করিবেন, তিনি বোধ হয়, আমানের উপনি-উভা প্রতিজ্ঞান লাপতি করিবেন না।

करगवत शांत्र करता राहे निवल-अवस्थान शतिवर्कन-अवारह ভাগিরা আলিরা, হয় ত সেই দেহের পরমাণ এই দেহে मिलिएउछ। क्रगरंछ किছ्हे चार्क्या नरह। क्रगरंछ नक्तहे অভাশ্চর্যা। যে গিরাছে বলিয়া জগৎ সংসার আধার হইয়া গিলাছে, সে আবার ফিরিয়া আসিতে পারে—বুগ বুগান্তরে হউক, করকলান্তরে হউক, নেই অকলম্ব চাঁম আদিয়া আবার এ গগনে দেখা দিতে পারে। পুনর্জন্ম অসম্ভব নহে। তাহাতে---तिहे अमृत्। निधि o-गांश घांश हिल, ति नकलहे आहि। किइहे अदक्वादा विल्श इत ना। नवहे चारह, त्कवन अकटब নাই। সেই দকল উপকরণ জগতে বিশ্বাজমান রহিয়াছে: বে निन छोटोरात अकब मःघरेन घरित. तहे मिन-मरन कतिएक श्वास नाहिया डिटर्ग, खारनंत्र डिड्ड द्वामांक श्व-टम्टे निन আবার সংগার-মকভূমে সেই স্কুমার, সেই মনোহর, সেই श्चनत कृत्रम कृष्टित-एम निक आत्मा कतिया, कन् इहेर्ड অগদন্তর পর্যান্ত সৌরভ-তরক ছুটাইরা, বিষের এক প্রান্ত হইতে অন্ত প্রাপ্ত পবিত্রভাস্রোভে ধৌত করিয়া ছুটিয়া উঠিবে। পুনর্জন্ম অসম্ভব নয়। জীবের দেহপরস্পরাসক্তি অসম্ভব নয়। हिन्द्रश्य अमन क्लान क्ला नाहे, बाहा अक्लाद्र जांच-अमन 'কোন মত নাই, যাহা হাসিয়া উজাইয়া দেওয়া যায়। বে চিন্তা-नीन, दम वित्रकान वनित्व, हिन्दुशर्य मद्वीएक्टे। यपि दकान धर्य . मासिवात छेशवुक इत छ त्म हिन्दुशम् । निताकात स्थेत, श्रीन-वात कथा—त्वहनित्राणक टेठ्ड कशरू द्वाधा प्रवि नहि ; यठ पिन ना मिश्रिक शाहे, कक मिन सामित मा। देखायत सन्दर-राज्य क्रवंत कथा ;-- धक काल्यक अवह कार्य ; त्य कार्य হইতে এই কগৎ সমূৎপদ্ম হইয়াছে, সেই কারণ হইতে অক্তরূপ স্টে অসন্তব। সর্বাক্তিমান্ দ্যামন্ত ক্লয়, বাতুলের কথা;— আপন আপন হাদ্যকে জিজ্ঞাসা করিয়া দেখা। একটি জীব পৃথিবীতে আদিবে—দে মরিয়া যাইতে পারে, সে অকর্মণ্য হইতে পারে, সে পৃথিবীর ভারমাত্র হইতে পারে,—কিন্ত কেবল ভাহার সংসারপ্রবেশের কল, অপর একটি উৎক্রইতর জীবকে • দৃত্যুমন্ত্রণা ভোগ করিতে হয়। সে যাতনা নিবন্ধন কোন লাভ নাই, কোন আপন নিরাক্ত হয় না, কোন উদ্দেশ্ত সংসাধিত হয় না, কাহারও হাব বাড়েনা, কাহারও হাব বাড়েনা কেবল আহার সংযাতনা ভোগ করিতে হয় । নির্থকি যাতনা দেওয়া যাহার অভিপ্রেত, সে নির্মুর, সে নির্দ্ধ বাড়না দেওয়া যাহার অভিপ্রেত, সে নির্মুর, সে নির্দ্ধ—কিন্ত, কি বলিতে হলিতে, কি বলিতেছি——

সে আবার আসিতে পারে। যে গিয়াছে—জগতের মাধুরি হরণ করিরা, হনরের পরতে পরতে আঞ্চন জালিয়া দিয়া, সোণার সংসার ছারথার করিয়া দিয়া, হারের পাত্রে গরন ঢালিয়া দিয়া, ক্ষম্ভরে বাহিরে নৈরাভ মাথিয়া দিয়া, বে পলাইরাছে, সে

^{* &}quot;Oh fairest of creation! last and best of all God's works!"

-- Milton's Paradise Lost, Rook IX.

[া] বাহা কিছু লগতে গটে, তাহাই অবস্থা ইপনের অভিপ্রেড। সন্ধান প্রস্বের নুসর ব্রীলোকের বে অসম্বেদনা হয়, তাহার উপনের অভিপ্রেড । কে দাসন ব্যক্তনা নিজ্ঞানন, কেবন্ধ, ত্রিবিশ্বন কোনই লাভ কেনা বাহ না। নিজ্ঞাননে জেন বেওয়া নিঠুরের কাজ—স্বভরাং ক্লবর নিঠুর।

See J. S. Mill's There Rivers on Religion On Nature 1.

আবার ফিরিয়া আসিতে পারে। কিন্তু আমি কি পাণন হইলাম না কি? কোখায় নে? কোখায় আমি? কোখায় সে ভালবাসা । কোখায় সে ভালবাসা । কোখায় সে ভালবাসা । কোখায় সে ভালবাসা । কোখায় সে চিরপ্রেমাছনুস-পরিপ্রত ভালর । হার। কেন মরিলাম না । চক্ষে ধ্লা দিয়া সে বখন পলাইল, কেন ভাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ছটিলাম না । বখন মৃত্যুর বিকট ছায়া সেই মুখে লাগিল, তখন কেন গরল খাইলাম না । সেই যে চিতা, নৈশাক্ষকার দ্যু করিয়া, ভালীরখীনৈকত আলো করিয়া অলিয়াছিল, কেন ভাহাতে ভইলাম না । নেই সোণার দেহের দ্যাবিল, কেন ভাহাতে ভইলাম না । নেই সোণার দেহের দ্যাবিল অহি খবন পারাণে বৃক বাধিয়া ভাসাইয়া দিলাম, তখন সঙ্গে কেন জলে ঝাঁপ দিলাম না । কেন উল্লুক্তে প্রোণ্ড্যাপ করিলাম না ।

ভার মথিত হইল। চকে অন্ধকার দেখিলাম। কাতরখরে, উল্লান্ডলাবে ডাকিলাম—"প্রাণাধিকে, কোথার তৃমি ?
আমার অন্তরের আলোক, আমার বাহিরের অন্তর, আমার
নবনের মণি, আমার সকলের সব,—আমার সবের সকল—
ভীবন-সর্বাস্থ, ভূমি আমার কোথার!"—অপর পার হইতে
কঠোর প্রতিধানি কঠোর খরে, অ্মান মুখের উপর ডাকিরা
বিলা—'আর কোথায়' * । আকালে সেই কঠোর খর
নাচিরা নাচিরা বিলা—ক্রার কোথায়'। দুরে সেই কঠোর

^{* &}quot;Hark to the hurried assection of Despair: Where is my child?—an Echo assewers—'Where?"

_Byron, The Bride of Abydos.

কর মিলাইতে মিলাইতে বলিগ-- 'আর কোথায়'। তত্তিত হইগাম। মুহুর্কেকের জন্ত অতর্জগতের অভিত লোপ হইগ। হার! প্রতিধানি ক্রমন করিতে, পোড়া বিধাতাকে কে বলিয়াছিল ?

ইতি পঞ্চম প্রস্তাব।



"I came to the place of my birth, and cried, 'The friends of my youth, where are then?" and an Echo mawered, 'Where are they?"—From an Arabic M. S.

Byzon's note on the above couplet,

बन्दन खन्या गर्म।

আবার বসস্ত আদিরাছে। ফুলসাজে সাজিলাই খগ্নের তেউ नहेता, जावाद वनस जानिहारह ; किस टन के ? शृट्स छान-বাসিতাম; এখন ভাৰবাসি না, ভাই বসত্ত আদিয়াছে; ভালবাসা থাকিলে, হয় ও আসিত না। থাহাকে পূর্বে ভাল--वांति जाम, धाबन जानवांति, जित्रकांत जानवानिव, त्न छ देक वांतिम ना । शहारक छामवांति ना त्म वांतिरव ना त्कन १--তা আদে--वाहादक खानवानि, दक्वन मिहे चारन ना। दुरक वृत्क नवशर्यालाम इरेन, मांबाद भाषाव नव अवन्तु वृत्ति, बाँदिक बादक लामत्र वामित्रा कृष्टिन, श्रीबाद्य श्रवीद्द श्रवेक कृष्टिन, নবীৰ খ্ৰাম শোভাৰ জগৎ মাজিক, ক্ষিত্ত-নেই খ্ৰাম শোভাৱ মধ্যে বে খাম লোভা, সে আদিল কৈ ? আনা আদিল কৈ ? উৎসাহ আসিৰ কৈ ৷ প্ৰকৃত্ততা আদিৰ কৈ ৷ সংগ্ৰহ সেই চাঞ্চলা আদিল কৈ ? সে মাধুরি আদিল কৈ ? আশার যে याना, উৎসাহে य देश्यार, अञ्चलात त अञ्चला, त्योक्तर्या दा मोक्या, माधूर्या दा माधूरि, कारब दा कारब-दा चानिन কৈ? বভুরাজ, আবার আনাইতে আসিয়াছ? মড়ার উপুর थाँजात या - रेराटिक कि कि श्रु शोक्य बाटक ? इःथीत इःथहिक করিতে কে না পারে ? বে অ্থকুদ্ধি করিতে পারে, সেই মক্স ৷ ভারিতে সুকরেই পারে, ব্রে গড়িতে পারে, বেই মহৎ। कारिनीएड अनिवादि,--वाबश्य कानिएड कानिएड कानिया,

यानिनीत मानत्क नागियाहिन। यामन वरनत त्य मानत्क कृत ছুটে নাই, সে মালঞ্চ অককাৎ কুলের ভারে ভালিরা পড়িল। ঋতুরাজ, নিয়তিলোতে ভানিয়া আজি তুমি আমার এ মানঞ नानिवाह, किन्न एक जरू मक्षतिन कि ? जमत अक्षतिन कि ? নোহাগিনী ব্ৰত্তী সৌল্ব্যভাৱে ভারি হইলা ছুলিল কৈ ? প্রত্যেক হর্যারশ্বিসম্পাতের সঙ্গে রূপের শহর উঠিল কৈ 🤊 প্রতি মৃত্-স্মীরণ-হিলোকে সোরত-তরক ছটিল কৈ ? যাহা ফিরিয়া शहित स्थी हरे, जाहा कि ? श्रकृष्ठि स्रातक स्थितिय कित्राहेरज পারে, কিন্তু সকল পারে না। জড়জগতের অনেক জিনিব যার, আবার ফিরিয়াও আসে। কিন্তু অন্তর্জগতের বাহা বায়, ভাर्।, একেবারে यात्र—উড়িরা বার—ধুইরা বার—মুছিরা বার— ক্ষরের মতন যায়—কশ্মিন কালেও আর ফিরে না। অবিন্নি মাসিল, কিন্তু সেই চিরবসম্ভদ্র হৃদর আর আসিল না। হরি! হরি! জ্যোতিফনিচয়, অনস্ত-বিস্তৃতি-মধ্যগত, অনস্ত श्रीन-विदात्री, मुर्शिश्व बहेशा शिशाष्ट्र-चार्गत चार्ताक, चार्गत পবিত্রতা, অর্গের শোভা পুদিবীতে আনিবার জন্ত কুত্র ছিড বৰিয়া জার বোধ হয় না। কোকিল, পাথী হইয়া গিয়াছে - जमनीम चत्र * विद्या आंत्र त्यांथ. इत्र ना। ध मश्नांत,

"O Cuckeo j shall I call thee bird,
Or but a wandering voice?

Again:
Even yet thou art to me
No bird, but an invisible thing,
A voice, a mystery."—Wordsporth.

যন্ত্রণাকারাগার হইয়াছে—স্থানকেতন বলিয়া আর বোধ হয় মা। স্থানের গুড়তম প্রাদেশ পর্যান্ত আলোকিত করিয়া, গৃহ-कृष्ट कुछम छूटिन। मत्न कतियोम, खीवनवहार्चत्र अहे श्राचम ম্বল। আশা করিলাম, আরও কত ফুটবে। নিলালণ বিধাতা দেখাইল, সেই শেষ ফুক। প্রেমের মালক্ষে কেবল একবার ফুল ফুটে। আমার সাধের বসস্তে অকস্মাৎ শীত আসিয়া দেখা निन। आयोत वर् नार्यत कृत, अमिन मिनन स्टेशं (श्रेत বভ সোহাগের কোকিল, কলকণ্ঠ বাজাইয়া কেবল উঠিতেছিল, অম্নি নীরব হইল। বড় ছাথের আশালতা অম্নি ভালিয়া পতিল। যে যাইবার নয়, সে গেল,—এ ছার প্রাণ ত কৈ গেল না। সমীরণ মৃত্ব মৃত্ কাঁদিতেছে—হায়, হায়, হায়! এই মৃত্র প্রনে কর ছাথের চেউ, কত নৈরাপ্তকাতরতা, কত বিশ্বত স্বপ্নপ্রবাহ, কত জন্মান্তরীণ অম্পষ্ট ভাব আনিয়া বে বুকের উপর চালাইয়া দেহ, ভাহা আর কি বলিব দু সহসা কে বেৰ আদিয়া নিখাদের পথ কৰা করিয়া দীড়ায়-বৃহি:ছ বায়ু मश्रक खेबिहे हरेरिक सम मा । धक्की नियान, धक्वान, हरेवान, जिनवादत्र ग्रेनिटङ रुष। व्यान करत-पू, मृ, पू। दव निटक ठाकाहे, आश्वन अनिटिडाइ-प्, यु, यु। धमनीटिड धमनीटिड भनग अनिट्टाइ-४, ४, ४। श्रीष्ठ (गामकूर्ण, श्रीष्ठ हेलिया, প্রতি শোণিতবিন্তে **অন্ত**্রা**লতেছে—**ধৃ, ধৃ, ধৃ। জার এ পাপ ফ্রন্থের ভিতর কি বে ইইজেছে, ভার জার কি বলিব-কালানল, প্রলয়ানল, নরকানল, জনবের অনগৃত রচিত অনল ष्वितंत्राह्म-भू, भू, भू।

ग्र ग्रंडिंड क्रिया, ग्रंगात गुंड क्रिया, बीवन व्यक्षकात्र

করিয়া, অধ্যকে এমন করিয়া নাজেহাল করিয়া যাওয়া—এ ত জোমার মতন কাজ হর নাই, প্রাণাধিক! তোমাকে মনে शिष्टिल, कावाब हटकत्र छेन्द्र क्यांच्या कृष्टित, कर्नविद्य पिता गः शिक्टिहान थारान कदिरा, नानिकात्र शाक्षिकाल सोत्रक व्यामिशा वाशित, कार्यव डेनव व्याज-वर्ग इट्राव, व्याव हरेट गांध याहेट्द; कि ना छःथ हन्न, এ छात लान बान ना **८कन ? कि नां मार इय, व मा**णिद एनइ, व मारमाश्विरमानिक-অুশ পরিহার করিয়া দায়াজ্ সমীরণ হই। স্থীরণ চইয়া, वान वान, भहान भहान, जीवा शैरतं, कृष्ण कृष्ण, कृष्ण কুলুমে, আকাশে আকাশে, নক্ষতের নক্ষতের, যেখানে যেখানে স্থানর কিছু দেখিতে পাইব, সেই সেই স্থাল মনের জ্বার্থ গাইমা বেড়াই। কি না লাল্যা হয়, মহুষ্যদেহ ত্যাগ কবিয়া পাপিয়া হইরা, নীল গগনের এক প্রান্ত হইটে অন্ত প্রান্ত বিরহ-সংগীতধ্বনিতে ভরিক্স দি। দেখ দেখি, কি ছইয়াছে, প্রাণা-ধিক ৷ আমার প্রাণ যে কেমন করে, তাহা কেবল আমিই कि (य इटेबाएड, डाहांत माको जागांत क्षमत ।

জানি না, কোন্ পাপে রাষণের চিন্তা বুকে করিয়া বহন করি। জানি না, কোন্ পাপে জীবনাতের জীবন চঃধের জীবন হবরাছে। জানি না, কোন্ পালে জভরের বাহিরে হাহাকার পজিয়া সিয়ছে। ভালবাসা কি পাল ? প্রদয় কি লোমাবহ ? তাহা ত নহে। প্রণরকে যে লোমাবহ মনে করে, লে মুর্থ, মহাম্থ, গঙ্ম্ব, গোম্ব, হজিম্ব। মহ্বাজীবনে যত কিছু উদ্যেশ্ভ ইতৈত পারে, প্রণর স্বাপেকা মহব। প্রবর্তী কালের মন্ব্য প্রকৃতি, পূর্ববর্তী কালের প্রণংগণ্টনসাপেক। কেবল বাজিবিশেবের বলিয়া নহে, মন্ত্যাজাতির শুভাশুভ এই প্রণ্রের উপর নির্ভর করে *। তাহাতেই বলি, প্রণর ধল—প্রণয় নমত—প্রণয় পূজা প্রণর ধর্ম—প্রণয় দেবজ—প্রণয় ঈররত্ব। স্থার্থভাগি যদি দেবভাব হর, ভাহা হইলে ইহা মুক্তকঠে বলিতে পারি যে, প্রণয় বাতীত আর কোথাও দেবভাব দেখি নাই; প্রণর ব্যতীত অক্ত দেবজ স্বীকাব্রু করি না। কেবল ইহাই নহে। মন্ত্রের অনেক মহংকীতি প্রণয়ন্ত্রণ গ্রেষ্

"The final aim of all love-intrigues, be they comic or tragic, is really of more importance than all other cude in human life. What it all turns upon is nothing less than the composition of the next generation. It is not the weal or woo of any one individual, but that of the human race to come, which is here at stake."—Schopenhauer.

t Mr. Darwin thinks that "musical notes and rhythm were first acquired by the male or female progenitors of mankind for the sake of charming the opposite sex." Herbert Spencer concludes that the cadences used in emotional speech afford the foundation of which music has been developed. But the question arises why were cadences used in emotional speech? and we may adopt Darwin's explanation for want of a better. If mankind acquired musical notes for the sake of charming the opposite sex, musical tones would

আছে कः, কিন্ধ, কি ব্লিতেছিলাম ভূলিয়া গেলাম—
কিন্দু এ দাকণ বাতনা সন্ধ কৰি ? বাঁহারা বলেন, এ সংসার
পরীকার স্থান, তাঁহারা বড় প্রান্তঃ। পরীকা কিসের ? ঈশর
ক্ষেন ক্রিয়াছেন; আমরা তেমনই হইরাছি—কিসের জল্প
পরীকা ? স্বর্ট পদার্থের গুণাগুণের পরীকার হারা কেবল
ক্রিয়া ক্ষরতার পরীকা হয়। আমার ঘড়িটী যদি অল্ল কারণে
বিগড়াইরা বার, তাহাতে ঘড়ির অপরাধ কি ? এই মাত্র বলা
ঘাইতে পারে বে, নির্দ্ধান্তা কুশলী নহেন। আমাদের পাণের
জল্প ও ঈশর আমানিগকে দারী করিতে পারেন না। আমাতে
বাহা আছে, আমি ছাড়া সংসারে বাহা আছে, সব তিনি
করিয়াছেন—এ জনর ভূমি গড়িরাছ; এ সংসার ভূমি গড়িরাছ,

of necessity be firmly associated with some of the strongest passions an animal is capable of feeling, and would consequently be used instinctively, or through association, when strong emotions were expressed in speech.

- Darwin's Descent of Man, Part III. Ch. XIX.

This is also Darwin's opinion. He says:—"We may believe that musical sounds afforded one of the bases for the development of language.

Lord Monboddo in his Origin of Language says that Dr. Blacklock thought "that the first language among men was music, and that before our ideas were expressed by articulate sounds, they were communicated by tones, varied according to different degrees of gravity and acuteness." হদরে সংসারে যে সম্বর, ভাহারত সংস্থাপক তুমি—ডবে আমাদের পাণ কি । যদি পাপ থাকে, তাহার দারী কে ! তুমি না
আমরা ! আমাদের পশুভাব অনেকটা আছে, খীকার করি;
কিন্তু আমাদিগকে পশু অথবা পশুর অভি নিকট কুটুর করিয়াছ
কেন ! * কিন্তু—

মক্ষক ছাই ! হংবের মুখ কি কেহই তাকাইতে হানে
না ? এমনই ত মনের হুংখে মরমে মরিয়া আছি, তাহার উপর
আবার নহকারশাখার বিদিয়া পঞ্চমম্বরে কোকিল ডাকিতেছে—
কুছা। কি স্থানি কেন, ঐ কুছরব,

"কাণের ভিতর দিয়া, মরমে পশিল গো, আকুল করিল মোর প্রাণ।"

ঐ যে কোকিল, উহার রব শুনিলে, প্রাণটার জিতরও বেন কোকিল ডাকিরা উঠে। কিন্তু একবার বৈ আর ডাকে না— একবার সাড়া দিরা, অমনি নীরব হয়। আবার বাহিরে, তরুশাখার বসিরা, ভীত্র পঞ্চন † বর সগনমার্গে প্রতিথানিত

The reader, I presume, is already acquainted with Darwin.

। হারের পঞ্চমকেই লোঞে মধুর করে, কিন্তু আমি এ কথার অসুমোনন করি বা। পঞ্চল বড় জীত্র-নিষ্টুড়া ক্রাছে, কিন্তু সধ্য নিষ্টুড়ার জাত,

^{* &}quot;Without question, the mode of origin, and the early stages of the development of man, are identical with those of the animals immediately below him in the scale; without a doubt in these respects, he is far nearer to spes than the ages are to the dog."—Huxley's Man's Place in Nature.

कांत्रता, दकांकिन छाटक, कूटः। ध्वरे मधीवन-वांनापृष्ठित ভার বির্থীর জনবের ভার, কালিদাসের প্রকৃতিবর্ণনের ভার, धिष्टे मूछ मगोवरभन्न कात-धरे मूछ मगीवन रमरे कूछवर जानिया কাণ ভরিষা ঢালিয়া দেয়। বুকের ভিতর অমনি প্রতিধানি इइ,- छेहः। ' छन नाहे कि. श्री छ पति हा-भावात वह पृद्ध দেই প্রতিধানির প্রতিধানি হয়। বুকের ভিতর প্রতিধানি হয়, ্উত্ত:, আবার দূরে, বারু দূরে – বুকের ভিতর বুক, তাহার ভিতর বে বুক আছে, সেই খানে সেই প্রতিধানির প্রতিধানি, কাতর चात ए। क्-छ:-छ:-छ:। अहे मुक् भवनहे छ कु। दक्मन শ্বপ্লের ডেউ আদিয়াই যে গাছে লাগে, শ্বতির অন্ধকারের ভিতর কত আলোক ঝিকৃ মিকৃ ক্রিয়া উঠে—বছ দিনের স্থপথ সকল এক এক করিয়া জাগিয়া উঠে। মনের ভিতর, কেমন अब वर्ष कर्नाननानिनी त्याउवजी मृद् कनकवदात श्रवा-হিত হয় ৷ তাহাতে সেই অতুপ মৃবথানি, সেই সর্কোপমা-দ্রব্যসমূচ্চয়েন নির্মিত মুখখানি, চকিতের ভার ভাসিরা, দেখিতে ৰা দেখিতে অমনি ছু-উ-ন্ করিয়া তুবিলা বায়। ছোট বড় চেউ মাত্র গোটাক্তক দেখিতে পাই।

এই বে বদত্তের চাদ আমরি মরি। এই চুলু চুলু ভাব বড় ভালবাদি। শরভের চাদকেই কোকে স্কলর বলে, কিছ-উহার হারি বড় প্রথম, বড় বালস্চক, বড় মর্বভেদী। অভ হালি সকলের ভালা লাগে না। আমার মতন যার অদৃত্ত, ভার বড় কটিন বাজে। আর এই বে ইবলকারমুক্ত ক্যোৎসা, বড় উর। আমার কর্পে সাজারই দর্বাগেকা মিট্ট বলিয়া বোধ হয়।
"ভিরসচিত্তি লোকং।"

वहै त निक्षिष्ठ क्यांरवा, वहे त वधमांश क्यांरवां, हेशंब কাছে সে ছাই। এই জোৎমাজোতঃ প্রকে পড়িলে, আমার সেই প্রাবের অধিক ধন, স্বতির বাবে, পশ্চাৎ কিরিয়া দাঁড়ায়। সেই मध्य रामि—त्य रामित्क मत्त्रत्र अक्कांत्र मुद्र रूप. मःमाद्रिय মুধ স্থলায় দেখার, ত্রী কাতির প্রতি ভক্তি হয়, মহুযোর প্রতি অধুরাগ হয়; বে ছাসি দেখিলে সহদয়তা কলে, অপবিত্রতা पुर हत, अन् क्षत्रिक नङ्गिष्ठ रहे, मरमत्र मानिस कार्विश्र यांग-त मधुत शांति राविष्ड शांहे ना चर्छ, किंह छाहारक छ এकरात्र त्मबिट्ड शाहे. अवर छाहांदक त्मबाहे सूथ। त्य যাহাকে ভালবাসে, সে তাহার ছারা দেখিলেও ক্রথী হর। ट्रपट होन गुववानि, मत्न मत्न छिक कतिहा जानिए शाहि ना बर्फ, मानम-भरहे अधिकम आँकिएक भावि ना बर्फ, किन्छ ব্লিয়াছি ত, তাহার ছারামান ভাবিয়া বে ভাবহিলোল নছে. তাহাতেই বিভোর হইরা যাই। এই ছলে বিষরচনার একট কারিগরি দেখিতে পাই—যে বাহাকে ভালবাসে, সে ভার মুখাবয়ব মনে আনিতে পারে না। এমনই চক্ষের জলে প্র **दाबिटक शांहे मां, कांत्र खेशव आवात्र यति त्यहे कूटक-माथा मूब** নিরম্বর চন্দের উপর ভাষিয়া বেড়াইত, তবে আর বাঁচিতাম না। "ইছাতে কারিগরের বাহাত্রী কত টুকু, তাহা সেই वातिश्वरे बात्नन, किन्न देशन कात्रण क्र्यांशा नरह। कथी कि स्नाम, मकन स्वन धकराब कथन स्वयं हम नाहै। इटेंके रेव हक् नरह, वंशन त्व जरण ,शिक्तिरह, छवन तार्ह जराहर मिना निर्वाद - तारे चारम्य चानम्बर्गाय गानगहिरहारम ज्**रिया निवादक । इंदेफी क्षण अकता कतिया क्षन दावा दश**्र লাই। এই জ্ঞা এমন হয়;—নৈ অধরপ্রার হুগানি মনে ফরিতে পারি, সে চক্ষু ছাট মনে করিতে পারি; দে অতুল লালাট মনে করিতে পারি; দেই অধরে সেই হানি, ভাহাও মনে করিতে পারি; দেই চক্তে পেই দৃটি, ভাহাও মনে করিতে পারি; দেই চক্তে পেই দৃটি, ভাহাও মনে করিতে পারি; দেই লগাটে দেই অপূর্ব গরিমা, ভাহাও মনে করিতে পারি;—কিও মে স্থাণানি মনে আলে না। এক এক করিয়া সকল অক মনে আলে, ক্রিড সকল অক একতে মনে আলে না—এক এক করিয়া শকল অক দিনাতে সহত্রবার দেখিরাছি; সকল অস একতের মনে আলে না—এক এক করিয়া শকল অক দিনাতে সহত্রবার দেখিরাছি; সকল অস একতের মনে আরু এক কথা, সেই স্থের কেমন বে অপূর্ব ভারবিকাশ, আকৃতিতে গঠন ভূবিয়া থাকিত।

সংশ্ন বে এক দিন দেখিই, দৈন স্থও কথন অনৃতি হইল
না। প্রায় নিজুই বনে করি, জাগিতে হউক, গুমাইতে হটুক,
একবার ধদি তাহাকে বেখিতে পাই; কিন্তু এ পাপ অগতের
কেমন নিছুর নিরম, এ অনো আর কথন তাহাকে দেখিলাম
না। কেন কেনিছে পাই না ? সভত বাহাকে ভাবি, ভাবিতে
বাহাকে ভানবানি বাহাকে বেবিবার জন্ম লালামিত, তাহাকে
কেনিছে পাই না কেন ? লোকে বলে, যে বিবর দর্মনা চিন্তা
ক্রাভ্রার, তাহাই বালে দেখা নাম। ওটা মিলা কথা ।।

sics; mentions the fact, but I do not remember him to have attempted an explanation anywhere. The explanation however, is not far to seek. Dreams' are effects; and as effects, they must have some antecedent cause. This cause, we find

শ্বপ্নই হউক, আর অন্ত কিছুই হউক, সৰই নিয়নাধীন। সংশ্লেষ্ট হউক আর জাঞাদবছারই হউক, জারসাহত্যোপ নিয়নামুদারে ভাষার অবিশ্লেষ্ট ঘটিয়া থাকে। ছইট ভাব প্রশাসন স্থান্থক; ভাষার একটি আদিলেই, অপুরটি আদিবে। নে বৃক্ষত্তনে বাল্যকালে ধ্লাথেকা করিভাম, সে বৃক্ষটি দেখিলে অথনা মনে উঠিলে, আবার দেই দকল মনে পড়ে। সেই বাল্যকাল, সেই উপস্থিতোর্যাদ, সেই শৃক্ত চিত্ত, সেই ক্রীড়ার সন্ধিগণ, সেই অনর্থক আত্মীয়তা, সেই অভিনয় সংগার, সেই হাল্যক হলর, সেই অকারণ রোদন, সেই অকারণ হাল্য দেশের স্থান আবার ক্রালিয়া উঠে, কেননা ইহারা প্রশার

in percention, because perception, is never wholly suspended Leibnitz tells us that "even when we sleep without dreaming there is always some feeble perception. The act of awakening, indeed, shows this." Now if the reader will admit our perceptions to be the groundwork of our dreams, the whole thing becomes as plain as c, a, t, cat. There is law everywhere and in everything. Even in sleep, ideas compot follow one another except in obedience to the laws of association, or the one grand law, hinted at by Aristotle and clearly laid down by Augustin. New our ideas of those whom we leve most are associated for the most part, with our feelings, and feelings of a particular class only, and as past feelings can no ver be the subject of perception, those whom we love, find no place in our dreams. This explanation, however, needs further comment sout now I can devote no more space to such discussions. I have a mind to take up, and attempt an class borate exposition of this subject some other time.

সম্বাৰ্ক। বৃক্টি এবং শৈশবস্থাত্য, ইহার একটিকে বৰ্ষন ভাবিয়াছি, অন্তটকেও ভাবিয়াছি; স্বভরাং একটির দলে দলে অন্তট আসিয়া পড়ে। কিন্ত ভাহাকে ভ কবন কিছুবই সঙ্গে দংগুক্ত করিয়া ভাবি নাই। যথন ভাহাকে ভাবিয়াছি, তথন কেবল ভাহাকেই ভাবিয়াছি। সেই এক ভাবেই হুদ্য ভবিয়া গিয়াছে। কিন্ত কি বলিতে বলিতে, কি

সংসারে দেখিলান হব নাই। এ দারণ ছংখ যে কেবল
আমি এই প্রথম সহু করিলাম, তাহা নহে; কিন্তু গভাছত্বরণ আমার কাল হইরাছে। ছংখ সকলেই ভোগ করে—
হংখলোগের জন্মই পৃথিবীতে আসিয়াছি—ছংখ সকলকেই
তোগ করিতে হয়; কিন্তু, ছিল কি, আর হইল কি, এই
তুলনাম বুক ফাটিয়া বায় । মরিব মরিব মনে করি, মরিতে
পারি না। ছংখের কথা বলিব কি, এক দিন নৌকাখোগে
কোথা হইতে গুহু ফিরিয়া আসিতেছিলাম। ভাগীরণী কদ্যে,
মৃহপ্রনহিল্লোকে, অন্ধ্রারসংশ্লিষ্ট জ্যোৎসার, নক্ষত্রপতিত
নীলচজাতপতলে বসিয়া বসিয়া কত মাধামুভু ভাবিলাম—
হথের অত্বৈর্গ্য, হংথের পরিণাম, নৈরাভের কাতরভা, সেহের

-Southern Innocent Adultory

[&]quot;Could I forget
What I have been; I might the better bear
What I am destined to. I am not the first
That have been wretched; but to think how much
I have been hancier."

বাাক্রতা, সংসারের গতি, মানবের ছ:খ, হানরের দশা, শৈশবের শৃশানিত্তা, নৰমৌবনের চঞ্চলতা, আশার ছলনা, অদৃষ্টের নিষ্ট্রতা, কত ছাই ভন্ম ভাবিলাম। সে দিন, কি জানি কি ভিথি, কিন্তু সেই সময়ে চাঁদ উঠিতেছিল। চন্দ্রপা, অন্ধারের সক্ষে জড়াছড়ি করিতে করিতে, গলার জলে গিয়া শড়িতেছিল। ভাগীরথী, একবার ক্রকৃটিভগী করিয়া চাহিয়া, আবার আপন মনে চলিয়া যাইতেছিল। হেন কালে, দ্রে, বহু দ্রে, মধুর কঠে, টোড়ি রাণিণীতে কে গাইল,—

"গেল না কেন প্রাণ, সই রে, তাহার বিচেছদে।"
ফুল সমারণ, সেই স্থা কর্ণবিবর ভরিয়া চালিয়া দিল।
বুকের ভিতর শব্দ হইল, ছুপ্ ছুপ্ ছুপ্ ছুপ্ হুণ্। কে যেন বুকের উপর
দিয়া হাঁটিয়া গেল। প্রাণের ভিতর হইতে, প্রাণের কাণে কাণে
কে বেন বলিল, জাহুবীর গুর্ভ বড় শান্তিনিকেতন। মনে
ফরিলাম, মরি না কেন ? এই সংগীত ভনিতে ভনিতে, আহুবীর
সলে ডুব দিয়া, একবার ভাহাকে খুজি না কেন ? যথন আশা
নাই, এ ছার জীবনভার বহিয়া আর কাজ কি ? ভা বটে, তবু

^{*} নিধুর টয়া। এ গান্টির এই ছয়েটিই তাল। অপরাংশ ভর্মনোকের
অ্ঞারা। মন্দের মধ্য ছইতে ভালটুকু বাছিয়া লওরা দোবের কথা নহে।
সে নিম ঐ এক ছয়েই শুনিয়ছিলাম। টোটি রাগিপার সে সমর নহৈ,
কিম সুধুর লানিয়াছিল। নিনে বেরাখ গাইতে ছয় না, রাজে ভেরবী
গাইতে ছয় না, এ সকল ক্ষার মর্ব, আমি টিক বুলিয়া উটিকে পারি কা।
সমস্বিশেকে রাগিনীবিশেন শুনিতে বে বড় নিই লাগে, তাহা বুলি; নিম্ম
ভাই ইনিয়া অন্ত সম্মে নিই লানিকে না, এমন নি পার আহে ?

মরিতে পারিকাম না। তার পর আরও কত দিন মনে कतिश्रक्ति, शात्रि गाँदे। यथनदे अ कलना कति, जनने स्वत्मती জননীকে মনে পড়ে। একেই ত নিরপ্তর কেবল আপনার ভাবনা ভাবিমা পাপের ভরা ভারি হইরাছে; ইহার উপর अनमीत हत्क जन পड़ित्न ए। महत्क्छ श्रांन हत्व मा। छक कि এই खड़ १ मित्राल एर शाहि मां, मि कि दक्षण नहरकद्र ভরে ? তাহা নর। যার মনের ভিতর অহোয়াত্র নরকাথি জনিতেছে, তার আর নরকে ভর কি ? তাহা নব। আজিও क्र भरमात अक्रो स्थ श्राह्-शृष्ट् शिया, ना विद्या छाकिए পাই। সকল বন্ধন ছিড়িরাছে—এ ছাল্মর শোধ সকল বন্ধন চিডিয়াছে, ঐ এক বন্ধন আছে। একৰার একৰার যে মা ধৰিয়া ডাকিতে পাই, দেই স্থাৰ এডদিনও এ রাবণের চিতা বুকে করিরা আছি। রোগে হোক, শোকে ছোক, ছাথে হোক, বিপদে হোক্, মা বলিয়া ডাকিলে যেন সক্ষৰ সন্তাপ ভূৱে যায়। आवात राम वामाकाम कितिया शाहै। आवात राम राहे हिस्ता-गुज्ञ, त्रप्रानम्बविष्ठ, व्यद्योध निष्ठ इदेशा वाषाई । व्यादात्र त्यन त्महे मिहाराव अकन भवित्रा, त्महनूर्व मूननारन हाहिन्ना, बिकां, आवात त्यम अक्षण अतिहा भाकर्षण कति, अक्षण शतियां পুটাই। আবার যেন সংগার স্থক্তর হইরা উঠে, প্রস্কৃতির মুখে आक्लाम तनि, साना मित्रिना भारे। त्व कथन मान्यांचा माकु-ভাষার খা ধলিয়া ডাকে লাইঃ ভার মহব্যজন বুখা। বেছের গভীরভা, মহুবাধ্বদরের মধুরভা, শ্লীজাতির পবিজ্ঞা, কিছুই ंटन बानिन नां। वक्रवाबादेन ध्यार करत, शूलक्षात दशर करते,

बीयनम्बह्यी ही। एवर करतन, किन्त मारतत्र मजन अमन अविक प्तर कात ? अंख त्यर कात ? किंख क्यन **खाना मन, धक**. কথা বলিতে, আর এক কথা আসিয়া পড়ে।-

চিরকাল মনে গাধ, তুমি ভাল থাক, তুমি স্থথে থাক, আর আমি বেন ভোষার কাছে থাকি। তুমি হবে থাক, তুমি ভাল থাক, আর তাই দেখিবার জন্ত আমি বেন তোমার কাছে থাকি। তোমার মুখে আমি ছখী, এই কথা কাণে কালে বলিবার জন্ত, আমি বেন তোমার কাছে থাকি। তুমি অবস্থ ভাল আছ, তুমি অবশু স্থাৰে আছ, কেননা তুমি বেখানে গিলাছ, সেধানে কেছ কোন কালে হঃখের বার্ত্তা জানে না; অথবা জানে কি না, তাহা আমরা জানি না-কেননা, সে অপরিজ্ঞাত, অনাবিষ্ণত দেশে বে একবার যায়, সে আর ফিরিয়া আসে না *। কিন্তু ছ:ৰ এই বে. আমি তোমার কাছে থাকিতে পাইলাম না। আরও ছঃখ এই যে, তোমা হইতে বিচ্ছিত্র হইয়াও বাচিয়া থাকিতে হইল।

হায়। আমি মানব হইয়াছিলাম কেন? সে মানবী হইরাছিল কেন্ ? এই সরোবরতীরে ছই জনে তক হইলাম না কেন ? উভবের ভাবে উভরে বিভোর হইয়া, পাতার, পাতা লাগাইরা, শাবার শাবা অভাইরা, উভরের করে উল্লে মত্তক বাধিয়া, নির্জ্জনে চলাচলি করিতাম। উভবে উভয়েছ शना धतिया, प्रनिया प्रनिया, मरबायरतत चळ करन, अरूनवात्र

^{* &}quot;The undiscovered country, from whose bourn No traveller returns"

⁻Shakespeare, Hamlet's Solitonia

উভয়ে উভয়ের মূখ দেখিতাম। আমার মুধকাতিবিধ ভূমি দেখিতে, তোমার মুধপ্রতিবিধ আমি দেখিতাম, আর ছলিতাম। আমার নব্রিকশিত প্রস্ননিচরে, দিবসে সুর্বার্থার স্থ্বর্ণপ্রে, রজনীতে শশাকের রজভভারে, মালা গাঁথিয়া ভোমার কবরীতে পরাইতাম, আর মন্তক বাড়াইয়া দিয়া, ভোমার কুত্রমহার ষাপন কঠে পরিতান। তোনার সৌন্দর্য্যে আপনি সাজিয়া. আমার সাজে ভোষার সাজাইর৷, উভরে উভরের গাঁরে চলিরা পঞ্জিরা প্রেমের ছড়াছড়ি করিতান। পূর্ণিমার রাছে, জ্যোৎসা াৰবিয়া, হুই জনে জ্যোৎমাক্ৰীড়া করিতাম—মৃষ্টি মৃষ্টি জ্যোৎমা ধরিয়া, হাদিতে হাদিতে আমি কেলিয়া দিতান, হাদিতে হাসিতে লুফিয়া শইতে; আবার ততোধিক হাসিতে হাসিতে ভূমি কেলিয়া দিতে, তত্তোধিক হাসিতে হাসিতে আমি ধরিয়া বইভাষ। শশিহীনা নিশায়, ক্ষীণ নক্ষত্রালোকে, হীরকণচিত নীলচন্দ্রভিপতলে, নানদে প্রথম্বতির ভাষ, স্থতিতে তথ্যমের স্থায়, স্থব্যথ্নে তোমার সেই চাদ্যুখখানির স্থায়, আলোকের ष्मायताल मूच हाकिया, छात्रातर्भ, ख्वाडिनात्वा, हकू मृतिया निम्मन **ब्हेश इरे जान विमिश शांकिकाम। এक উ**न्नारम, এक আনন্দে, এত হুৰে, কাণের গোড়ায় গাণ সমীরণ বদি হার হার ক্রিতে আসিত - এ কথা বলিতেছি, কেননা সংসারে কেছ कार्बादक काम द्वितिक भारत ना । अहे सभरभक्षकि, दव निवस्म বিশ্বস্থাও চলিতেছে—দেই দেখিতে পারে না, মার কে दिश्विष्ठ भावित्य ? अ श्रुवक निदय गर्नि टकान C6 ठनमका कर्क् অব্যক্তিত হইরা থাকে;—ক্ষাটা বিভাগ হাসিবার নর; জগতে त्र क्रिके माहि कारी के वाकाम त्मिर्वित मिन मत्मर कत्र, छ के मत्महरू ७ कथात्र अभाग। छद दाहे हिड्समञ् **ভৌতিক্সংখোগোৎপত্ৰভার, আণ**বিক গতোবত্বের অকাট্যা বৈজ্ঞানিক প্রমাণ যতক্ষণ দিতে না পারা যায়, তক্তকণ প্রকৃতি-नित्राक्तर श्रुक्तरत अविष श्रीकांत्र कतारे विद्धानाग्रामां भिष्ठ। তবে দেই চৈতভার স্টিকর্ত্তে অবশ্র সন্দেহ হইতে পারে।, কি**ত্র** হৈতন্ত যে আছে, তাহা ত আর পরকে কিজাস। করিতে হইবে না, ভাহাতে ত আর সম্পেছ হইতে পারে না, প্রতরাং टेठल चार्ड, हैहा मानित्न डाइरिड त्नाव नारे। এथन, এ निवम यनि क्लान महाजन मचात्र ध्वविष्ठ इत्र, उत्त मिर्ट दमिराङ পারে না ড আর কে পারিবে ? ডাই মনের ছ:খে বলিডে-हिशाम, এত সুখের সময়, এমন অমৃতহ্রে অবগাহনের সময় পবন আদিরা বদি গাইত, হার, হার-তবে ছই জনে মাধা দোলাইয়া, এক তালে, এক হুরে, এক য়াগিণীতে, সাধা গলায়, গলায় গলা মিলাইয়া ছুই গলায় এক করিয়া, শক্রভক্তে বলিভাম,—সর, সর, সর;—এত হথে, এড উৎদবে, এড व्यानत्त्व, পোড़ा पूर्व हात्र हात्र देव चात्र क्या नाहे-पूत्र, न्द्र, न्त्र । किन्त अपन कि भूगा कतिशाहि, त्य अन ख अ (भाषा अनुद्धे इहेद ।

এ সংসাবে, কে কের্মন জদৃষ্ট শ্বইয়া আইসে, কিছুই ব্রাবায় না। অথে, সকলেরই সমান দাবি; কিন্তু বেমন নালা ক্ষারের মহোৎসবে, তেমনি সংসাবে,—কেন্তু মংজের মূর্ত্তা গার, কেন্তু বন্দুকের হড়া ধার। অধী এক জনও নহে—ইনি প্রহার বেমনার কাভর, জনি পরিভৃত্তিবৃশ্চিকদংশনে কাভর সকলেরই ভিন্ন ভিন্ন পথ আছে ঘটে, কিন্তু দেখানে সকল পথ

আদিরা মিশিনাছে, দেখানে কেবল হাহাকার আছে, চক্ষের আৰু আছে, আর হারছের শোণিত আছে। বে পথে বে বাও, এক দিন, না এক দিন, সকলকেই এইখানে আনিতে হইবে। সকল অভিনাবের, সকল আকাজ্জার, সকল সাথের পবিণান—কেবল হাহাকার! দেখ ভাই সকল, এ ছাইরের সংসারে ছুতেই কিছু নাই। ধন বল, জন বল, সহায় বল, সম্পত্তি বল, পদ বল, মর্বালা বল, বিলা বল, খাতি বল, সব মিথাা—মনের অনল কিছুতেই নিবে না। স্থ-ভ্যায়, দূর হইতে খাহাকে অক্ত সরোবর বলিয়। বোধ হয়, অগ্রসর হইয়া দেখি, সে সরোবর নহে;—সংসারমকভ্রিতে কলনারিখিসভ্ত মরীচিকা মাত্র। এই হুংথেই ত—

"হিয়ার ভিতরে শ্টায়ে ল্টায়ে কাতরে পারাণ কাঁদে।" ইতি দন্ত প্রস্তাব।



শয়ন-মন্দিরে।

লে রাম নাই, যে অবোধ্যা নাই। এই মহাম্মশান এক मिन প্রমোদোদ্যান ছিল। নীলাকাশে বেমন শন্ততের চাঁদ, कांस्रीत भाग रामन वमरखत वनर्गाला, त्रमीत व्यवस्त रामन मध्य रांगि, तमगीत कर्छ रामन अंगरमत कथा. এ সংসারমধ্য এই মন্দির এক দিন তেমনি ছিল। এইখানে এক দিন কত স্থবের ঢেউ, কত আনন্দের লহরী বে উঠিয়াছে, সে কথা আব পাড়িয়া কাজ কি? বে সময়ের কথা বলিতেছি, তথন এ সংসারকে অমরাষতী ৰশিয়া বোধ হইত। এই গৃহ মেই व्यवतावजीत्व राम नमनकानमञ्जा हिन। रमहे नमनकानस একটা করজম, প্রকৃটিত পারিজাতে আবৃত হইয়া, অন্তর বাহির আলোকিত করিয়া বিরাজিত ছিল। আর আমি অধমা-ধম, দেই পারিজাতদৌরভে বিভার হইবাছিলাম। দেই नन्तकानन, त्रहे अथकृष अथन सामात्र कात्रण स्टेशारह। योशीटक महेशा शह, ८म महि—शह खांबात अत्रुग हहेमारह। वहें अत्रत्म आमि महामि-कि छनः छनि, कि क्न क्लि, ाहा चात विना कि कतित । कामात क्षेत्र, कुछाम कुछाम, नक्दब्र नक्टब्र, शंशरन शंशरन, ग्रांचारन भाषारन, क्रिका क्रिया दिपृष्टि—कि, जोश वृतिहा जाद कि श्रेरत ! जामि जाति, सामात यन कारन, जात विनि कक्षांमी, जिनिहे कारनन-मिक्रां भाव कि कतिव ? क्षांमात सन् "नर्गास महाग्रम शहर कविशारक।

चात्र किंद्रुटव्हे मन नाहै। शक्य विषयहे हिन; এখन किइएडरे नारे। मत्न एव मकन फैकां किनाव हिम, जारां मत्नरे বিশীন হইয়া গিয়াছে। অস্তরে বে সকল সাধ ছিল, সে সকল অন্তরের তাপে গৰিয়া গিয়াছে। আশা করিতে যে না পারি. ভাহা নহে। আমি বে মুর্খ, তাহা স্বীকার করি; কিন্তু সংসারে **বেধিতেছি, আমার অপেকাণ্ড মহাদুর্থ অনেকে** প্রতিপর হইতেছে। আশা করিতে যে না পারি, ভাহা নহে; কিন্তু আশা করিতে আর ইচ্ছা হর না, আশা করিতে আর ভাল লাগে না। প্রতিপদ্ধ হইয়া কি হইবে ? প্রতিপত্তি লইয়া কি করিব ? मिधित एक ? त्रथांचेव कांहात्क ? गांहात्र छात्र लहेट उत्ह নাই, তাহাতে প্রয়োজন ? ধনোপার্প্রন করিব কাহার অন্ত ? জ্ঞানবৃদ্ধি করিব কাহার অন্ত ? বশোলাভ করিব কাহার অন্ত ? সংসারধর্ম করিব কাহার জন্ত ? কে আছে আমার ? এ ভগৎ-শংসারে, আর কে আছে আমার গ আমি একা। ও বিপুল गश्मारत, ध ष्मीय बीवनगाकीर्ग ष्मनस क्यारं, श्रामात विनाड আমার কেই নাই। সেই বস্ত আর কিছুতেই মন নাই। এখন মন আহে, কেবল দুড়াতে। কিন্তু মৃত্যুতেই ধার মঙ্গা, कात मुकु इब मा। त्य काल, त्य हिनाबा सात्र; त्य मन्त, त्य शिक्षा शिटक । य मित्रिक सन बान कानिएन, दन हिनेता यात्र ; वाद अस क्रिक केंद्रिक नारे, ता बदान मा। किन्न कि बनिएक হিলাম ভূলিয়া খেলাম---

আনার গৃহ নাই। দংশার গুঁজিলাম; কিন্ত মাহাকে লোকে গৃহ বলে, তাহা ত কৈ দেখি না। বেখানে মেথানে আকিলেও বেখানে নন পড়িয়া থাকে, অন্তন্ন স্থানিক্ত আহিলেওঁ

त्यवादन गाँदेवात कड ज्ञांन कारत : @ मरमाद्र ता हान कर्म অপেকাও বড়--আমার তেমন স্থান ত কৈ দেখি না। বেখানে **रभरन ट्रनांकजान योव, बांनायबनी कृतांद, मकन इः (यम ट्रा** সকল আপদের শাস্তি হয়, সকল রোগ উপশ্মিত হয়, দকল অন্ধতার অন্তর্ভিত হয়, সকল অনল নির্মাণিত হয়; বেখানে **वित-वमस्य विदासमान. विदाधमश्रवादिण अवस्मान-पामाद्र** CONT शांन ७ देक तिथि नां। होता कि हिन, जात कि हहेगा? পুর্বে যে কোন ছাথ ছিল না, এমন কথা কে বলিতেছে ? ডার वीकिटन ना दकन,- अ मक्साकवार क्रांश्राकार करा कार्य हिन देव कि । यः व वित्रकान हे जारह । देन नवावहार उन्ह हिन्द्र। কত দিন, মাতার ক্রোড় হইতে, কুদ্র কুদ্র অসুদি সঞ্চলিত कतिया, आकात्मत्र कांगटक छाकिछात्र । यश्रदा अलंब विवकात र रगोलर्पात्र कालांग: दशरम दंकवल क्षिणतिवर्धन स्त्र। ७४न ठाँमरक्टे नक्तारभका कुनात विनिधा खानि**छाम। छ**मरभका नांडियां. यात्र यात्र कतियां, याकात्मत्र हैं।संदर्क छाक्छिया । । । সংসাহের সক্ষ ভাক বে প্রত হয় না, ভাছা ভ তথ্য জানিডাম ना,-छाविता मत्न विकिशन, चानिएउटि। चानस्य शक्तिव क्यांक बनिया अनिवाहे साहिकांस- महा व्यानत्त्व, वहे बार्क আপনার পেট চাপড়াইভাষ, জননীর মুখ চাপড়াইভাষ, চুৰ ধরিষা টানিভাষ, মুধ চাপিয়া ধরিভাষ। ভার গর কিরিয়া प्रिकाम, ठीए जारन मारे, जानिएक ह ना, वृति जानिश मा ज्यनं भाषात कृति कृत राज इथानि विशे सननीत राज बतिसी, নেই নাজ লোলাইবা ভাকিতান, তবু সানিত না। स

.



ডাকিজেন, ভবু আনিত না। তথন কাঁদিতে কাঁদিতে সুমাইয়া পদ্ভিতাম। ছাৰ্থ ছিল না কে ৰলিভেছে ? কভ দিন পোষা বিড়ালটার সলে থেলা করিতে ঘাইডাম: থেলিও না। বসিবার ভাষ্ট কত অনুরোধ করিতাম: অনুরোধ গুনিত না। लब्द ध्रिया गिनिया वनाहेबात क्षेत्र क्षित्राम, ज्यू माधि माधि क्रियां हिना यारेख :-- हाथ हिन नां दे बनिएड(ह ? उध्य-ফণার লোভে কভ দিন কত ক্রমর পাথী আসিত,—পেলিবার আশার নিকটে বাইভাষ, উড়িয়া প্রাইড: কড দিন আপন মতে খেলিভাম,—মা আসিয়া কোলে ভুলিরা পঁইলা খেলা ভাকিয়া দিতেন :- ছঃখ ছিল না, কে বলিতেছে ? গু:খ ছিল। দীর্ঘ নিশাস পড়িত। কিন্তু সে নিশাসে আৰু এখনকার নিখাসে আনেক প্রান্তের। তথ্ন, একটা করিয়া রীর্ঘ নিবাস পড়িত, समरबंद अक्टो खोत्र नामिश्रा राष्ट्रेड : এथन, ८ क्टो कवित्रा भीष नियाम भटफ. এक अनक कतियां त्रक कक्षियां वांद्र, समयग्रद्यत ubbi कवित्रा ভाর छिडिता बात, मःमात्रवस्तानत 'वक्ठा कतित्रा প্রতি খলিয়া বার। সে কালের দীর্ঘ নিখাল এমন করিয়া শোণিত भाग कतिए मां *! इश्व हिन मां देक विवादित १ दृश्व हिन;

Again ;

[&]quot;Ail fancy sick she is, and pale of cheer
With sighs of love that cost the fresh blood dear."

— Mid Summer Nights Dream.

[&]quot;Might liquid tears or heart-offending grouns
Or blood-communing sighs recall his life,
I would be blind with weeping, sick with grouns,
Look pale as primress with blood-drinking sighs."

—Messey PA.

किछ, प्रत्रण इत का दकन, हैहा दनिता कथन इ:४ कतिएउ हैन मारे।

বৈ চঃধ গেল-এখন মনে করি, সে হুধ গেল-সে হুংব रशन: कार्यात नजन इ: त्यंत्र मृष्टि हहेन। **ध न्**जन इ: प द् (क श्रामिन, त्र नाक्ष्ण कथा भाव जूनिया कांच नाहे। (पंदे আত্তক, তখনও তঃখ ছিল। দেখিবার সময় চক্ষে পলক পড়ে दकन, वहे वक इ:व। विस्तान बाहेर्ड इम्र दकन, वहे वक इ: । विरम्भ इटेट यथन मृट्ड कितिया यारे, ज्थन क्षांक्रा পাকে কেন, এই এক ছঃধ। স্বারও কন্ত ছঃধ ছিল। মার্থের পাধা নাই কেন-স্পর্ণ, তকের উপর না হইয়া, বকের ভিতর হয় मा दक्म--दर बाहादक जानवादम. दम छाहात्र मदन मिनिया अक হইরা যার না কেন-আরও কত চঃৰ ছিল। সে চঃৰীত গেল-कि इंडे कि विभिन्न थाटक ना। गवह यात्र : उट्टा थ्याटन थहे त्व, यात्र चन्छे छान, जाब अक्ती अक्ती क्तिया यात्र, त्रिता महित्रा यात्र : चात्र, भागात मठन यात चल्हे, जात এक पित्न, এक पर्छ, এक मुद्रार्ख, ध्वक निरम्पयत्र भर्षा नव छानियां यात्र । द्विथिट त्विर्छ আশার বাসা, স্ববেব মন্দির, প্রাকুরতার জীড়াভূমি, জীবন-লতার সংশ্রম তক, প্রকৃতির রমাতম চিত্র, প্রাণের অধিক, ভদ-भिक्रा व्यक्ति धन, नव वांकारम भनिक्षा बाह् । तम ऋरेबंब इंडेबंडे গেল। হার। সে ছঃব গেল কেন্। গেল ত আমি থাকিলাম क्ति ! त्म कृष्य (भेग) जातात मुख्य कृश्यत एहि स्वेगते थ मूजन क्षा देव दंकमन् छोड़ा बाहे तुक कितिया त्रव । सार्व हिन मा रक वंतिराज्यह ? इस्य हिन ; क्यि क्षत्रारक अधन क्तियां छ अवनाम इतम प्रवाहेबा बिक्क मा-विवान-नामदक्ष

উপর স্থির রাধিরা, ভিতরে ভিতরে এমন তর্জ ত তুলিত না।

্ মাহুষের ছার প্রাণে সব সহে। শক্তি অবস্থাগত: অবস্থা मंक्रिंगड नरह। रय मूथ मिन रिवर्ण धक निन म्म निक मुख বোধ হইয়াছে, দে মুধ না দেধিয়াও ত প্রাণ ধরিয়া আছি। धक रख दर हत्कत आंख्र इहेटन श्रष्ट आंत्र श्रीन श्राटक नाहे. দে যে চিরকালের মতন চক্লের বাহির হইল, ভাহাও ত প্রাণে गहिन। रंगरे अगृना निधिटाउँ यनि विकेख इहेनाम, छत्व किरमत क्रम थान १ किरमत क्रम मामात १ किरमत क्रम व हारे शृह ! हिमानक्षत निकृष्ठ कन्नदत्र विषया, त्महे क्रम थान कवित्रा, দেই নাম অপ ক্রিয়া, এ জীবন অতিবাহিত করি না কেন ? এখন গৃহে আর অরণ্যে প্রভেদ কি ? এ জগতে, আমার আশাপথ চাহিতে আর কেহ-নাই-আমার ভার ছ:বী কে? আমাকে আদিতে দেখিলে, আর কার উজ্জল চকু উজ্জলতর इहेर्द ? आंत्र कांत्र मधुत्र खशस्त्र मधुत हांत्रि स्वितिष्ठ मिथिल, বুকের ভিতর জ্যোৎলা স্টবে—বুকের ভিতর বসন্তসমীরণ विद्रात ? आब कात्र कर्श्वय खनित्न, कृडखिवश मूहिना गरित ? আর কার মুখে, সেই পচা, বস্তাপচা, থপ্থনে—ভাহাতে নার श्वार्थ नाहे-काब मूल, त्नहे मुख्न, वित्रमुखन, यथनहे खना यात्र अश्रमहे मुजन : कुछ वाद, कुछ विन,--श्राप्त निकृष्ट छनिकाम, निज्दे न्यन वाधिक-लारे भूशायन-न्यन, तारे बारा-हिहि-'अक बाबा चारकन, जान घर बानीब' कारिनी, चान कार्न मूख छनिएन, ध शहिरात मध्मातरक मानात मध्मात बनिया विष ष्ट्रित ? वानाहे गृहेशा मति ! क्यान त्य खडी, त्यमन त्य रख्या,

टक्मन द्य कर्ठ, दक्मन दय नमनाबदत्रत्र वाक्ष वाहा मच त्रव्रश्रमि, टक्मन देव स्थूत शांखीयां, दक्मन द्यं कि-स्नानि-कि, त्रहे गूद्ध त्नरे कारिनी अनिया, वर्कात नत्क विभिन्ना गारेट नाथ गारेक। সেই কাহিনী ভাহার পূর্বে কভবার শুনিয়াছি, বাল্যকাল হইতে শুনিয়া আসিতেছি, কিন্তু তাহার মুখে শুনিলে, প্রত্যেক শব্দের প্রত্যেক মাত্রাটা পর্যাপ্ত যেন, ক্রায়ের বার ভাঙ্গিয়া হৃদরের ভিতর প্রবেশ করিও। সে কাছিনীতে বিশেষ কবিছের পরিচয় কিছু ছিল না; কিন্তু কি এক গুণ ছিল, তাহা কবিত্তেও **प्रिंड शार्रे** नां, किছूटिं एपिएड शार्रे नां। डाहास्क टक्मन এक माधुरी डिल, त्र माधुरी ठळकतरलथांत्र नाहे, वनश्च-**पर्यत नार्ड, मनी-भारममागढ (ध्यममःशीट नार्ड, क्रमारमञ्जदक्** कृठीय नर्ल नारे, महारचकांत्र अन्त्य नारे-नश्नात्तत्र काथां । त्म माधुबी दिल्ला शाहे ना। छाडा छनिए दिक्यन जानमाई (व इटेंड, ट्यम यानम विषद्य गिष्मा इब नारे, यारेजान हा পড़िया इव नारे, कत्रावात পড़िया रम नारे, अम्लामणन পড়িয়া হয় নাই, সিড্পড়িয়া হয় নাই, রোমীয় এবং জুলিরেট পড়িয়া হয় নাই, রখুবংশ পড়িয়া হয় নাই, মহাভারত পড়িয়া हय नाहे, बामायन পড़िया दव नाहे। त्यमन यमगीब हनय-व्यथात, व्यथितात, व्यवन्यानी, काहिनी ७ (उपनि । हेरांट गांगांक कीर्ति, शाक्रमवर्ष ; गांगांक धानक, धानकन ; मामाक नाज, विश्न बाका ; मामाक मान, व्यक्ति बाक्ष व धर धर बाक-क्छो । बनिशाहि छ, छोहाट वित्वय काम विक्रिया हिन ना-गर्दे ख्यानक, मेंबरे चार्क्या। तारे धक छार। गर्का श्रीराहरे রাজপুর আছে: সকলভালিডেই রাজক্তা আছে; সকল-

শুনিতেই বাৰপুত্ৰ এবং বাৰক্ষাৰ প্ৰণৰ হয়; সকলগুলিতেই প্রণায়ের বর। সকল নামিকাই রূপরতী-কেছ বর আলো করেন; কাহারও হাসিতে মাধিক বরে, কাঁদিতে সুক্রা পড়ে। সেই राज्या राज्यी शाब, त्यरे शक्तिबाब खाँड़ा, त्यरे जान-পজের খাঁড়া, সেই রাক্ষ্য, সেই মানবের সহিত পরীর প্রণয়, সেই ইন্দ্রালনের নৃত্য, সেই বরপ্রার্থনা, সেই অভিনাপ, সেই মর্গের রথে চড়িয়া দেবক্সাদিগের মান করিতে আগমন, সেই পাতালে বাদ, পেই বিকটাকার দৈত্য, সেই মরণকাঠি জীবন-कार्ठि, तरे विनामवजी मानिनी, तरे जमाश्चा ब्राह्मभूत्वव গাড়লত প্রাপ্তি—দেই দব। বেধানে রাজা মরে, দেইখানেই त्रांबरजी शांशन स्त्र ; दाशांत्म इहे तानी, त्महेशांतरे हांकेंकि छ्वा, वकृष्टि इब्रा;-- म्हेथात्न हे इ्हाउँ वि मन्त, वकृष्टि जान। বেণানে রাজার কুবুদি ঘটে, সেইখানেই হাতীশালে হাতী মতে, বেঁড়াশালে বোড়া মরে। বেখানে স্ত্রীলোকের অগমান, जीत्नात्कत मनः नेषा, त्मदे त्राकाहे डेव्हिन यात्र। विनाहि ड, त्रहे **अक्टे कारिनी**त मुख्य नुख्य त्रः व्रत्न याळ। 'हं'ि পर्यास তেমनि कतिशा मिटा हवा। किन्न, जेबूक्त वाजायन-भथ-श्रविष्टे <u> छळक बदन थांव भवन कतिया स्मर्थ, स्मर्थ, स्मर्थ काहिनी छनाव</u> বে স্থ, তেমন হব এ ছার লগতে কোথায় আছে ? সেই हानमूर्य, अ कारिनी छनिएक छनिएक मान क्तिजाम--व्यानिक्मिंग, भूबीरत महीरत मा रहेश, ब्यादन ब्यादन इक मा टकन ? थोरपद चिक्द हांछ वंहित कतिता, छाहांत थान्यस् আবর করিতে পাই না কেন ? সেই কাহিনী প্রাক্তবণ তে निन एकदिनाइ, तारे निन हरेएछरे फ अनन रहेनाहि- কি বে পাগলের মতন আবল তাবল বিক, তার ঠিকানা পাই
লা। দৈই দিন, মনের প্রধান বন্ধন ছিড়িরা গিরাছে—মন
বেন সংসার হইতে বিযুক্ত হইরা পড়িরাছে, প্রের উপর বেন
হেলিরা-পড়িরাছে। সেই দিন হইতে কেমন বে হইরা গিরাছি,
অকটা মধুর শব্দ কোথাও শুনিশেই, একটা ক্ষমর কিছু
লেখিলেই, প্রাণ উনাস হইরা বার—শ্রুমর, পৃথিবীমর,
মাকাশমর, জগৎমর ছড়াইরা পড়ে—কাহার সন্ধানে, তা আর কি
বিনিব পু—যাহার সন্ধানে, তাহাকে কে পুঁজিরা দিবে পু কিন্তু—

সেই মুখে শ্বির দৃষ্টিতে চাহিরা, সেই মুখের লাবণালীলা मिथिएक मिथिएक, ट्रिके मूर्य काहिनी खनाव रा स्थ, राज्यन স্থ বর্গেও নাই। তার প্রত্যেক বাকোর বিনিম্মে এক একটা সৌরস্বাৎ দিলেও উপযুক্ত প্রতিদান হর না-এক একটা মানদিক বৃত্তি ভিঁড়িয়া দিলেও উপযুক্ত মূল্য হয় না। কিন্ত এড বে হব, তাহার মধ্যেও তৃঃধ আসিয়া জুটিত। সুধবানি छान कतिया प्रिथितात श्रुविश इहेछ ना । ज्येनीशर्का-व्येनीरभव কপালে আগুন ৷--প্ৰদীপটা আৰার পশ্চাতে বাকিলে, আমার মুখের ছারা তাহার মুখে পড়িত; ভাহার পশ্চাতে पाकित्त, जाहात मूर्य बांस्नाक शक्ति ना । धरे त्वय, बशर-গমভির একটা অসম্পৃতি। স্বোদ্ত বে, জগংশমতিতে দোষারোপ করিরাছেন, জগৎপদ্ধতিকে অসম্পূর্ণ বাসিয়াছেন, त्म क्यां श्रामानिक,—त्म क्यां बीक्रिं। जामना समन रहेंगाँदै थाकि, आरमाक्ष्मा প্রতিনিয়ত তাহারই সুপুর উপন भा क्या (क्या के अपनिकालिएक त्यांच नारे, व क्या दक रिलिटर थ विचत्रवर्गात चात अक्वी त्मार धरे द्य, नक्य

বিষ্টের চরিভার্থতা, বাক্স কার্য্যের সার্থকতা হয় न।। कान वानिशाहिनाम वित्रा, कांनिएक कांनिएक ठक् रशन। देकवन चानि वनिश्र मन चनवानिशं कत्र क्रम छ्रथी हरेशां हर क कांद्र नाहे ? ' क अबुहेरक मन वरण नाहे ? ' क वृद्ध कर्तिया नवक बढ़ नाहे ! कठ कान कांनिए हि : कठ कान কাঁদিতে হইবে। এ পাপ চকে কত জনই যে আছে, তা জগদীখন জানেন: কিছ কাদ, চিনকাল কাদিলা মন-কালার পরিণাম কারা বৈ আর কিছুই নাই। তাহাতেই বলি, জগৎপদ্ধতি অসম্পূর্ণ। ইহাতে ঈশবের উপর দোম পড়ে, শত্য; ক্রিন্ত ঈশল্প বে কেনন, ঈশর বে কি, তাহা তুমি আমি কি বুৰিব ভাই ? * সকল অপেকা যে † অধিক मानिकः रन अहे मांख बानिक रा. रन किइरे कारन ना। মিউটন জানিতেন বে, জ্ঞান-মহার্ণবের কুলে, তিনি উপল্থও বঙ্গন করিতেছেন মাত্র। জগতের উৎপত্তি সহত্বে, ভূমি আমি कि कामि छारे ? . अरे हात समग्रहेक्य मन कथा পतिकात कतियां আনিতে পারি বা—জগৎকারনের প্রকৃতি নদকে, তুমি আমি कि सानि छाहे ? मिन किंडू कानि, छ त्न धरे गांव रा, छाहां अरखना किन्न कि विगटि विगटि कि वीगटिक

কি ছিল, আর কি হইল ? এক জনের অভাবে বে স্ব ভ্রায়—আলা, ভ্রুসা, স্বৰ, স্ব ভালিয়া বায়, ভাহা কৈ স্থানিত ?

 [&]quot;বে মনে করে, আনি ইবরকে আনিয়াহি, যে কিছুই কানে নাই।
 তৈ ভারকে আয়ভীত গবে করে, সেই ভারকে আনিয়াহে।"—
ভাগবদার্থোপনিবং ।

⁺ Socrates knew, that he knew nothing

ভাহাকে হারাইলে বে সংসায় অভ্নতার হইবে, ভাহা ভানিভাম, किस अमन त्य हहेत्व, छ। कात्र मत्न हिल १ तम त्व कि धन, छी चात्र कि. वनिष। यन मञ्जावजी मठा-चापत्र-मः मार्ल्स স্ফুটিতা। ফার কেমন কৃচি, বলিতে পারি না-পর্চিত্ত অন্ধকার; কিন্তু কজাই ও স্ত্রীকোকের দৌনর্য্য; কজাই ড জী-চরিত্রের কুহক। যে লজ্ঞাশীলা, ভাছাকে বুক চিরিয়া রাধিতে পারি! আর হার গজা নাই, সে-কিন্তু পাপমুখে মন্দ কৰা আসিতেছিল বুৰি। লজ্ঞাই ত প্রণাের ভেডি;--প্রোতন হর না। সজ্জানত্রা দেখিলেই যেন প্রেম আবার नवीन रहेश। উঠে। यामेठी ठानिएक एमिएनरे द्वांप रहा दवन धरे थांब-कान ভानवामायामि इरेबाइ। नच्चा ना थाकितन প্রেমের নবীনত্ব থাকে না—দে 'নিভূই-নব' ভাব থাকে না— সেই 'বর্থনি-তেরি-তথননি-নব' ভাব থাকে না। অভভকণে বঙ্গ-**८९८**ण वानिकाविमानम अधिक्रिंड इहेम्राहिन, जीव्यिटबन धहे কুহক, ক্রমে লুগু হইবার উপক্রম দেখিতেছি । আমি বলি कि, श्वीलाकिनगरक, त्वथानजात्र शतिबर्स मःश्वेठविना। मिथारेटम दक्यन इव ? हेहार इरथत तृष्टि बाजी इताम इहेवांत्र

[🛊] জাসার শারণ হইতেছে, জীমতী ভুবনমোহিনী দেবী কর্তৃক সম্পা-किं 'विस्तापिनी' পजिकाब काम अक इरल जिल्लिक क्रेशास्त्र ;-- "ब्रिक প্ৰৰ, বুবতীয় বুকের বসনের মধ্যে চুকিয়া প্কাচুরি গৌলতেছে। बीलारकेंद्र गीवकार वज्ञभ चनुर्व छात्रव महित्यन त्रक्तिल, यावत इर्श्विठ एरे, जामदा छक्कि रहे-जनदमा किः कविगक्ति और बिल्डा ार्थेड क्षिक

বভাবনা নাই। ইংগ্রেজি বিকার একটি ক্ষণ এই ফ্রিয়াছে বে, দেবীর ক্রতবিদ্য সম্প্রাধ্যের মধ্যে, সংগীতামুরার্গ অতি অরই দেবা বার। বাহারা মনে করেন, সংগীতামুনীলনে লোক বিশাস-প্রিয়, নিরুৎসাহ, আগ্রহশ্যু, তীক হইরা পড়ে, তাঁহারা আন্ত। কি প্রাচীন, কি আগ্রনিক, কোন জাতিই বোধ হয় জন্মান-দিগের স্থায় সংগীতবিদ্যার অন্থনীলন করে নাই; তাহাদের বীর্যা ক্রাস হওরা দ্বে থাক্, সে দিন তাহারা বিলক্ষণ বীর্যা এবং সাহসিকতার পরিচর দিয়াছে। সংগীতে উচ্চু ছালতা দূর করে, নির্হৃরতা ক্রাস করে, মহুবাত বৃদ্ধি করে, *—কিন্ত, কি বলিতে

সে বে কি ধন, ভাহা নার কি বলিব ? বেন নবকুস্থমিতা কভা,—আপন সৌন্দর্যভারে আপনি বিব্রত; যেন প্রাবণের নদী,—আথন লাবণ্যে আপনি মধ; যেন নববিস্থিতি

Bee Montesquieu Reprit des Lote, Book IV., Ch. VIII.

^{*} Polybius, the judicious Polybius, tell us that music was necessary to soften the manners of the Arcadians who dwelt in a country where the atmosphere is bitter and cold; that the inhabitants of Cynothes, who neglected the study of music, surpassed all Greeks in cruelty, and that that city was the scene of the most terrible crimes. Plato does not hesitate to say that a change in music betokens a change in the constitution of the state; and Aristotle, although he seems to have written his work on Politics with the express intention of opposing the opinions of Plato, agrees with him on this subject. Theophrastus, Plutarch, Strabo, all the ancients, thought the same.—

থিকা, আপন প্রাক্মার্যো - জাপনি কাতর, আপন প্রবিত্তার আপনি বিভার। কিন্তু, হার রে দশা ! বত দিন ৰ ছিল; ভত দিন ভাহার মর্ম ব্যিতে পারি নাই। এখন হাই সংসার শৃত্ত হইরাছে, দশ দিক অবকার হইয়াছে, গৃহ অরণ্য হইয়াছে, মন উড়ু উড়ু হইয়াছে, স্তব্য অবলয়নপুনা इरेबाट्, डारे डाब मर्च द्विबाछ। এত पिटन डाराटक পিটনিরাছি। মাহুৰ যত দিন থাকে, তত দিন তার মর্ম কেহ বুৰো না। কৰিওক হোমর, এক মৃষ্টি ভিক্ষার জনা , বাবে হাবে ফিরিতেন ;—আব সাতটা স্থান তাঁহাব জন্মভূমিছে মরিলেন,—আজ বঙ্গভূমি তাঁহার জন্ত কাঁদিতেছে। পর্ভ বাইবণ ' अञानात्र-धनीष्टिक हरेया, चातन-विरङ्ग इरेवा, प्राप्त-मित्रनारिष्ठ आवजात कतिरान ; - बास भानीरमा के कारात স্বরণস্তস্ত সংস্থাপনের প্রস্তাব হুইতেছে। জিনিষ যত দিন থাকে, তত দিন তার আদর হয় না। তখন মনে হইত, বুঝি চির-हिनरें अर्मन वादा। मत्न कतिजाम, अ ध्वन्दम द्वि विद्रष्ट्रंत हरद नां। मरनद दक्तम धक्ता चलाव, वाहा विचान कब्रिटल हेक्स थारक, बाहा वियोग कतिएक जान नात्म, वाहा वियोग করাঁর ক্ষৰ আছে, ভাষা বৃহজেই বিখান করে। উহা বিখান क्ताहे जामान भेना - दम मा शाकित त्य जीवन अक्कान इहेर्द ; तिथान क्वार व्यामात अवसः। अतरस्य व्याहेन नारे। व्यक्तार कर दिन, आमान वड़ माध्यत विश्वास हारे পड़िन। त्वेहें मिन क्षंत्रक "लीक्य धनिया धान"। तारे निन हरेएक कामात এ खनव, बाज मांवा जूनिया बाज़ारे छ शास ना-जूनिय

्रकृतिक माम करते, जूनिएक शांत मा, याचा मुठाहेगा शरफ। अध्यमगढाष्ट्रिक वश्यवृत्कत छात्र, माना जुनित जुनित मदस करत কুলিতে পারে না-উঠিতে উঠিতে আবার নুটাইয়া পঞ্জে बरीक्षरंत्र. मन्त्रमीद्रशाथिक कृष वीहित छात्र, मांथा जुनिता অমনি চলিয়া পড়ে। সুন্দর কিছু অস্তব করিলেই, পোড়া প্রাণ অমনি, অতীতের অধিময় গর্ডে মুখ ও জিয়া নাতান হইয়া পড়ে। কেমন বেন উদাসীন হইছা গিছাছি। জীবন ধরিছা थांकिल मकन कार्यारे कतिए इत । मकन कार्यारे कति ; किन्ह दर्भ ना कतिरत नद दनिया। এখন এ श्रम नमाधिरकक হইরাছে-সুখের সমাধি, আশার সমাধি, প্রস্তার সমাধি, উৎ-मार्ट्य मुगापि, थानरम्ब मुगापि, छेळाजिलारम्ब मुगापि, जारम्ब गरोवि—याहा किब्रूटक ट्लाटक जीवन, वटन, देछ्छना वाजी छ दंत्र नकरलहरे नमारि । कठ जाव गत्न जैनव इत्र, किस श्रमारक শ্ৰণ করে না-হন্দ্রের চতুর্দ্ধিকে ব্রিয়া ব্রিয়া বেড়াম, क्षत्रक म्लान करत ना। दकरण अक जार आतिश त्रहिबादि। মধ্যসময়ে পোপ-সান্তাজ্য দৈমন রোম-সান্তাজ্যর প্রেতাভার ক্তার, রোম-সামাজ্যের সমাধির উপর বসিয়াছিল, আমার হৃদরে, ভাবের সমাধির উপর, ভাবের প্রেভমৃতি ভেমনি সমাধি জুড়িয়া विभिन्न बाह्य । এक विन त त्वि नाहें, कर्-

"দে চাঁদসুখের মধুর হাসনি সদাই মরমে জাগে।"
এই শ্রন-মন্দির—বলিয়াছি ত, এক দিন বড় হথের হান
ছিল। আজই বেন শুলীছাড়া হইয়াছি; চিরকাশই কিছ

^{*} There is a belief among the vulgar in Eurhe, that the ghosts of the dead haunt their graves.

এমন ছিলাম না। এক দিন, এই থানে আসিতে হইলে, ভুত ১ ভবিষাং মুছিয়া ঘাইড, ভাবে ঢল ঢল হইয়া গলিয়া বাইডাম—আমাতে আর আমি থাকিতাম না; আয় আর কি না, সেই স্থানে আসিতে ভয় হইডেছিল। ভয় হইডেছিল,

"কৈছনে যায়ব যমুনাতীর। কৈছে নেহারব ক্ঞ্লকুটার॥"

কি বে ছিল, তাহা আর কি বলিব ? সে অনলে ঘৃতাছতি দিয়া আর কি লাভ ? কি বে হইরাছে, তাই দেখিতেছি। গৃহে আর ঘেন গৃহ নাই। দীনধনাে! এ কি করিরাছ ? বিগ্রহণ্ত মিলিরের ভার, বিসজিত প্রতিমার পাটের ভার, জীবশৃত্ত জনপদের ভার, মধ্যাক্ত মকভূদের ভার, আমার ফদরের ভার, গৃহ ঘেন থা থা করিতেছে। গৃহদাহের ভার, প্রাণাধিকের চিতার ভার, ঘেন অন্তরে বাহিরে ধক্ ধক্ করিতেছে। যেন খোর নারকীর নরক্ষরণাসমূত আর্তনাদের বাল্ল করিরা, সহত্র সক্ষর নারকী পিশাচ, বিকট দশন খুলিয়া, অই জট্ট হাসিতেছে। কে গৃহ আমার কৈ ? সেই যে দেখিলে গলিয়া যাইতাম, দে গৃহ আমার কৈ ? এ আকালে যে চাল ছিল, সে চাল আমার কৈ ? এ আকালে যে চাল ছিল, সে চাল আমার কৈ ? এ বালাকে করিল ? এ দীনহানের মাধ্য এমন করিরা কে শাইবাং এ কি ত্রুরাছে ? ক্ষুলভার মাধ্য এমন করিরা কে শাইবাং এ কি ত্রুরাছে ? ক্ষুলভার আমানত হইরাছে—আছে, কিন্তু লা থাকিলে যে ছিল ভাল।

বননীর চকের উপর বেন, জননীর একরাজ প্রান্ত ব্যবিধাত, তারি বিদ্ধানিক। ক্লক্রমাগত পৈতৃক বাসগৃহ পৃড়িয়া বিন্নাক্ত পোড়া ভিটা পড়িয়া রহিয়াছে। দেখিলাম কেন ? দেখিবার পূর্বে অন্ধ হইলাম না কেন ? দেখিবার পূর্বে মরিলাম না কেন ?

मवहें चार्छ कि छ नवहें र्यन हकू मृतिश्र चार्ट - मवहे रवन কাহার বিরহে বিষয় হইরা আছে। সকল হইতেই কি এক खन द्यन छेडिया निवादक, मुक्किया निवादक, पूर्वेश निवादक-जारात त्नमांबल नारे। जारात्ररे ज्ञालाद नवरे त्वन दक्यन इंदेश शिक्षोट्ए-मनदे रग्न, ना शांकित्न नव निवा आद्छ-मवरे दिन, मृङ मारू दिवत (श्राट्य काम, मानवम् आस्मत कांम, क्लम्छ मद्रावदन्त्र छात्र, उरमारम्ख समस्यत्र छात्र, विकता-দশ্মীর চণ্ডীমণ্ডপের জান-বেন-বেন-বেন গৃহিণীশূস্ত शृंद्ध्य छोत्र, मुबरे दान मनिन, अवन्त्रत्र, निकीत, काठत हरेवा পড়িবা আছে। সেই নকৰ গৃহলোভার সামগ্রী, তেমনই ক্রিয়া नाजान वेश्वादक, किंच-का नव अन्हे! की निनाकन विवि !-अध्यक्षेत्र तम स्वीमधा नारे, तम मधुत्रका नारे, तम कमनीत्रका मारे, ता मानाशिका नारे, ता क्रक मारे, ता त्वि नार्के प्रहेरीण नगुष्कर शेटर, वर्षणीय अपूर्व कर्ड-निर्माछ, क्रकशांदिकाई ্বধুয়প্রেৰাত্মক বধুবু নংগিজের ভার বে ভার ভার ভার नार-मध्र विक्किम्बद, अश्रेक्क, लाक्षित्रमाध्य, मुक् বীণাশকাদিনী কোমল সরবছমীয় ভার যে ভার ভার ভার লাই-প্রাতে ভৈরবী রাগিণীর প্রায়, শেব নিশার বিলারের গানের- প্রার, নববসন্তসমাগমে, মৃত্যুক নৈশস্বীরে, বিরহ-সংগীতের ভার, প্রণারনীর প্রথম সপ্রেম আলিঙ্গনীর ভার, আফুট চন্দ্রালোকে বালিকার কজাবকত্ব প্রেমালাণের ভার, সে ভার ভোর ভাব নাই। পরই কেমন ইইয়া গিয়াছে। আমিও কেমন ইইয়া গিয়াছি। আছি, বাঁচিয়া আছি। কিছ কেমন ইইয়া আছি ?

ফলপুলপত্ৰ শোভিত বৃক্ষে বঞ্জাষাত হইলে গেমন পত্ৰ, কল, পুলা, দৰ পুড়িয়া বাহ, শাখা আশাখা ছাই হইরা উড়িয়া নার, লখচ বৃক্ষ থাকে—পত্ৰহীন, পুলাহীন, শাক্ষাইন, শোভাহীন, লমিনৰ তৃত্ব কুলাইন কিনাৰ বেনন বীটাইন গোলে, এ লধ্যাধ্য তেমনি আছে।

া মহাসাগরে অর্থবনান প্রভঞ্জনাক্রান্ত হইলে বেমন, গাইল উড়িরা বার, হাল ছুটিরা বার, মান্তল ভালিরা বার, দ্রুগান্তিক নরনারী সাগর-গর্ভে সমাধিগত হয়। সব যার; কেবল নিয়-ভাগ মাত্র অনস্ত বেতনীক্রিভিসংখ্য, তর্জপ্রতিবাতে অথবা বার্ম্থে, ইতক্তঃ ভালিরা বেড়ার—মাইবার পথ নাই, গতির উদ্দেশ্য নাই, ভালিরার প্রায়োজন নাই, অথচ বেমন অকুল সাগরে ভালিরা বেড়ার, আমি অধ্যাধ্য তেমনি আছি।

বজাৰত বুক্লের ভাগ, অভয়নবিধাংগিত অর্থগোডের ভাগ, জ্বাবশেষ প্রতিভিত্ত ভাগ, অবংশাবলের নগবের ভাগ, অধিদক্ত স্থানের ভাগি, আহি ৷ এ পূপ জীবনের পঞ্চ বিংশভি বৰ্ব ৰাজ নাইভেছে। সাজত কণ্ঠ জাল বে গুইন্ধা বালিতে হইবে, তা কানীখন বালেন।

"ज्ञय नव विश्व नेन नोगराः स्माई। इति इति । 'शिदींडि नो करत क्रीन स्काई ॥"

ইতি সপুদ্ প্রস্তাব

